इकाई 1
मध्यकालीन काव्य
1. नामदेव के पद (अभंगवाणी)

अनुक्रम

1.1 उद्देश्य

1.2 प्रस्तावना

1.3 विषय विवरण

1.3.1 संत नामदेव का जीवन परिचय

1.3.2 संत नामदेव के पदों का परिचय

1.3.3 संत नामदेव के पदों का भावार्थ

1.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न

1.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

1.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

1.7 सारांश

1.8 स्वाध्याय

1.9 क्षेत्रीय कार्य

1.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1.1 उद्देश्य:

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप:-

1. वारकरी संप्रदाय के संत नामदेव की विचारधारा से परिचित होंगे।
2. नामदेव के सगुण और निर्गुण संबंधी विचारों को जानेंगे।
3. नामदेव की भक्ति, नाम, रहस्यवाद, उपासना संबंधी विचारों से परिचित होंगे।
4. नामदेव ने हरि कीर्तन से सामाजिक एकता स्थापित करने के प्रयास से परिचित होंगे।
5. नामदेव के पद और अभंग से परिचित होंगे।

1.2 प्रस्तावना :–

हिंदी भक्ति काव्य की निर्गुण काव्याधारा के प्रवर्तन का श्रेय कबीर को दिया जाता है, लेकिन कबीर से पहले उसका उन्मेष नामदेव की वाणी में हुआ था। कई परवर्ती संतों ने उन्हें आदर से स्मरण किया है। इसी कारण उनकी कुछ रचनाएं 'गुरू ग्रंथ साहिब' में संकलित हुई। निर्गुण –निराकार के साथ –साथ राम, कृष्ण और विठ्ठल (विष्णू) के अतिरिक्त नामदेव के कुछ अभंगों में शिव की भी प्रशंसा है। नामदेव की शिक्षा–दीक्षा नाम–मात्र की थी। वे बचपन से ही विठोबा के प्रति समर्पित हो चुके थे। जो कुछ भी ज्ञान उन्होंने प्राप्त किया, वह ज्ञानेश्वर, मुक्ताबाई, निवृत्तिनाथ, सोपानदेव, विसोबा खेचर आदि संतों के साहचर्य से प्राप्त किया होगा। नामदेव के लोक काव्य में लोक–जीवन में प्रचलित उपमान सहज ही प्रयुक्त हुए हैं। अपने समय के समाज के विविध विषयों के माध्यम सें उनके अभंगों में चित्रण हुआ है। उन्होंने उस समय के रूढीग्रस्त समाज को देखा था। वर्णाश्रम व्यवस्था के कारण जातियों में ऊच – नीच का भेद बढ गया था। यादवों के राजकाल में ब्राह्मण जाति उच्चतम मानी जाती थी और शेष जातियाँ उससे हीन समझी जाती थी। नामदेव स्वयं जाति के भेद–भाव का अनुभव भोग चुके थे। नामदेव के शिष्य चोखामेला चमार जाति के और हुसेन अन्वर खॉ मुसलमान जाति के थे। उन सभी के साथ नामदेव हरि कीर्तन करते थे। उस समय उसकी मधुर ध्वनि–तरंगों से समाज के ऊच – नीच कहे जानेवाले जनों के मस्तक डोलने लगते थे।

नामदेव ने कर्मकांड, अंधविश्वास, लोकभ्रम तप–तीर्थ, अश्वमेध –यज्ञ, दान आदि का विरोध किया। उन्होंने प्रत्येक मनुष्य और जड चेतन जीवों में परमात्मा का आवास मानकर सभी मनुष्यों को समान स्तर पर प्रतिष्ठित करके समानता का भाव दृढ किया है। संक्षेप में अपने पदों मे जाँति –पाति का निषेध, बाहयाडंबरों का निषेध करके हरि –कीर्तन के माध्यम से सामाजिक एकता का प्रयत्न और हृदय–शुध्दता का आग्रह किया है। अत: हम यह कह सकते हैं की नामदेव समाजवाद के प्रथम उद्घोषक संत थे।

1.3 विषय –विवरण

1.3.1 संत नामदेव का जीवन परिचय:

महाराष्ट्र के संत पंचायतन (ज्ञानदेव, नामदेव, एकनाथ, तुकाराम और रामदास) में एक नामदेव केवल महाराष्ट्र के ही नहीं संपूर्ण भारत में प्रमुख संतों में एक है। नामदेव के भक्ति गंगा में महाराष्ट्र भक्तों का ही नहीं उत्तर भारत के भक्तों में भी उनका प्रभाव रहा है। नामदेव का जन्म महाराष्ट्र के परभणी नजदीक नरसी बामणी में इस 1270 में दर्जी परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम दामाशेट और माता का नाम गोपाई था। यें दोनों ईश्वर के परम भक्त थे और पंढरपुर की वारी (तीर्थयात्रा) करते थे। उनकी एक बहेन थी जिसका नाम आऊबाई था। नामदेव का विवाह 9 वर्षा की अवस्था में राजाबाई के साथ हुआ। वे चार पुत्रों और एक पुत्री के पिता बने किंतु परिवार का मोह उन्हे बांध न सका। परिवार के भरण –पोषण के लिए धन की आवश्यकता थी पर व्यवसाय में उनका मन न लगता था। घर में दरिद्र्यता और क्लेश व्याप्त रहता था। नामदेव इन सबसे बेखबर रहकर ही भगवद्भक्ति में लीन रहते थे। नामदेव के पिता विठ्ठल भक्त थे। प्रतिवर्ष वे पंढरपुर की वारी करते थे। अतएवं बचपन से ही नामदेव के मन में विठ्ठल भक्ति संचरित हो गयी थी।

किवदंती है की जब वे 8 वर्ष की आयु में माँ ने विठ्ठल के मंदिर में दूध का नैवेद्य चढाने उन्हे भेजा था। तब मूर्ति में आग्रह मानकर उनके कटोरे का दूध पी लिया। इस चमत्कारिक घटना का उल्लेख उनके एक आत्मकथात्मक पद में है–

दूध पी आइ भगतु भरि गइआ

नामे हरि का दरसुन भइआ।।

अंत नामदेव का मन गृहस्थी में नहीं लगा वे पंढरपुर में बसकर ही विठ्ठल की सेवा करने लगे। वही ज्ञानेश्वर तथा उनके भाई– बहनों से उनकी भेट हुई। नामदेव के गुरू विसोबा खेचर थे। कहा जाता है की उनसे दीक्षा लेने के प्रेरणा ज्ञानदेव और मुक्ताबाई से ही मिली थी। नामदेव अपने अभंगों (पदों) में अपने गुरू की महिमा का गान किया है। ज्ञानदेव के देहावसान के बाद पंढरपुर में रहना उनके लिए कठिण हो गया था। वे वहाँ से गोकुल मथुरा और वृंदावन आऐ। वृंदावन में उन्होंने विष्णुस्वामी को अपना शिष्य बनाया, जिन्होंने विष्णु स्वामी संप्रदाय का प्रवर्तन किया। फिर वे पंजाब पहुंचे और घुमान नामक स्थान पर निवास किया। वहा बहुत समय तक कीर्तन – भजन से जनता में भक्ति का संचार करते रहे। उन्होंने हिंदी में पदों की रचना की, जिसका गुरूग्रंथ साहिब में करीबन 61 पद संकलित है। घूमान में आज भी उनका बडा स्मारक और मंदिर है। उनके प्रमुख शिष्यों में विष्णु स्वामी, बहिरदास लघां खत्री, जनाबाई, चोखामेला, केशव कलाधारी, शेख मुहम्मद, परिखा भागवत, त्रिलोचन आदि रहे। जीवन के अंतिम चरण में नामदेव की इच्छा हुई कि वे पंढरपुर के विठ्ठल के चरणों में देह त्यागे। वे पंढरपुर लौट आए इस 1350 में विठ्ठल मंदिर के महाद्वार पर समाधी ले ली।

इस तरह नामदेव की रचनाओं में भी अद्वैत के साथ साथ ज्ञान भक्ति और योग का समन्वय है। उनकी रचनाएँ मराठी में और हिंदी में भी है। 'सकल सन्त गाथा' में नामदेव के नाम पर 2500 अभंग मिलते हैं। इनके अभंगवाणी निम्न वर्गो में बाट सकते है।

- बाल क्रीडा
- श्री कृष्ण लीला
- पंढरी महात्म्य
- नाम महात्म्य
- गुरू महिमा
- संत महिमा
- कलिकाल का प्रभाव
- ज्ञानदेव और उनके भाई बहनों के समाधी के बाद अभंग
- गुरू ग्रंथ साहब में नामदेव के 61 पद

- नामदेव का दार्शनिक पक्ष
  - ज्ञान
  - माया
  - भक्ति
  - उपासना
  - रहस्यात्मक प्रवुत्ति
- सामाजिक सुधार
- भावपक्ष
- भाषा
- नामदेव की देन

नामदेव कुल परम्परा से वैष्णव थे परंतु गुरू परम्परा से शैव थे। गुरू विशुध्द ज्ञानमार्गी थे फिर भी उन्होंने विठ्ठल भक्ति का परित्याग नहीं किया। उन्होंने विठ्ठल को सर्वत्र देखा। एक हिंदी पद में वे कहते है–

इभै विठ्ठल, उभै विठ्ठल, विठ्ठल बिन संसार नहीं।

निर्गुण भावना के पोषक होते हुए भी उन्हेांने पंढरपुर के विठोबा की आराधना का परित्याग नहीं किया। क्योंकि जब विठ्ठल सर्वत्र है तो वह प्रतिमा में भी है। इतनी व्यापक दृष्टि नामदेव की थी।

1.3.2 संत नामदेव के पदों का परिचय:–

नामदेव के पदों में निर्गुण – सगुण दोनों के भक्तिपरक पद मिलते है। नामदेव के हिंदी पदों में निर्गुण भाव का चित्रण है, परंतु नामदेव को सख्य भक्ति अत्यंत प्रिय है। पाठयक्रम के लिए निर्धारित नाम महिमा रहस्यात्मक प्रवुत्ति, ज्ञान का प्राधान्य प्रेम की व्याकुलता, भक्ति आदि उनके पदों में वर्णन है। अब हम नामदेव के पदों का भावार्थ तथा आशय से परिचित होंगे।

1.3.3 संत नामदेव के पदों का भावार्थ:–

1. **नाम महिमा –**

नामदेव ने सर्वसाधारण समाज के लिए सहज मार्ग से समझाया है, वह है नामस्मरण। सतत नामस्मरण से मन परमात्मा से एकरूप का अनुभव करने लगता है। ईश्वर का नाम लेने से जीवन की सार्थकता हो जाती है। सभी पीडा से मुक्ति मिलती है। हरि के स्मरण से जाति और कुल की हीनता का विनाश हो जाता है। सच पुछियें तो जीवन में बदलाव या परिवर्तन आ जाता है। इतना ही नहीं सकल (संपूर्ण) जीवन को सुख की राशि नाम ही है जिसमें यातना कम हो जाती है। सारी सृष्टि के दुख और दर्द की दवा नामस्मरण है। इसका नामदेव अपने पद में जन्म–मृत्यु से मुक्त होने के दवा को नामदवा ही मानते है।

2. **रहस्यात्मक प्रवृत्ति–**

प्रस्तुत पद मे रहस्यात्मक प्रवृत्ति मिलती हैं। नामदेव का रहस्यवाद सर्वात्मवाद कहा जा सकता है, जिसमें जड चेतन और समस्त ब्रम्हांड में एक ही परमतत्त्व की स्थिति को स्वीकारते है। नामदेव कहते है – एक अनोखी आश्चर्यकारक और विशेष बात देखी है, चींटी के आँखों में बहुत बडा हाथी समाया गया है। चींटी और हाथी ने आत्मा और परमात्मा की तुलना की है। कोई कहता है परमात्मा समीप है, तो कोई कहता है की परमात्मा दूर है। उनके लिए जिस प्रकार मछली पेड पर नहीं चढ सकती। उसी तरह परमात्मा या ईश्वर का पाना कठिण लगता हे। इस ईश्वर प्राप्ति के लिए इंद्रिय बाधाएं आती है। तो कोई कहता है ईश्वर को पाने के लिए मुक्ति की साधना करनी चाहिए। शुद्ध रूप से सहज समाधि करने ईश्वर की प्राप्ति हो सकती है। तो कोई बोलते है की प्राचीन वेदों का पठन करने से ईश्वर मिल सकता है, तो सद्गुरू के कहे मार्ग से पीडा या दुख से मुक्ति मिल सकती है। अंत में नामदेव कहते है परमात्मा बिना रूप और वेशभूषा का है जो निर्गुण उसे पाना जरूरी है।

3. **ज्ञान की अनुभूति–**

नामदेव ने प्रस्तुत पद में जिस तरह आकाश के तारे चमकते हैं आते जाते दिखते हैं उसी तरह तीन लोक में स्वर्ग, मृत्यु और पाताल में श्रेष्ठ ईश्वर है, जो हमे रोशनी ही ज्योति जैसी अस्थिरता दिखाई देती है। यह परम पिता परमात्मा आकाश जैसा सभी जगह व्याप्त है लेकीन हमें यह निर्विकार और अनंत नहीं दिख रहा है। इसे हम प्राप्त नहीं कर पा रहे है। जिस तरह हम स्वयं ही दीया है अपने अंदर की ज्योति को जलते दिखाना चाहिए नामदेव कहते है बिन बाती का दिया जल रहा है। अपने अंदर परमात्मा का रूप आत्मा में निरंतर ज्ञान की ज्योति प्रकाशमान है। अंत में नामदेव कहते है, मनुष्य को शरीर मोक्ष के लिए ईश्वर का ज्ञान आवश्यक है। यह अनुप्रास अलंकार है जिसमें परमात्मा के ज्ञान की अनुभूति होने की बात कही है।

1.4 स्वय अध्ययन के लिए प्रश्न :

निम्नलिखित विकल्पों में सें सही विकल्प चुनकर वाक्य फिर से लिखिए।

1. सगुण और निर्गुण अभेद स्थापित करने वाले कवि ..... है।

   अ. रामदास ब. कबीर क. मीराबाई ड. नामदेव

2. नामदेव के गुरूग्रंथसाहब में ..... पद संग्रहित है।

   अ. 61 ब. 50 क. 10 ड. 80

3. नामदेव के गुरू का नाम..... है।

   अ. गोरोबा कुंभार ब. विसोबा खेचर क. कबीर ड. नानक

4. नामदेव का जन्म..... गांव में हुआ।

अ. मथुरा ब. औंढा नागनाथ क. नरसी-बामणी ड. वृंदावन

5. नामदेव का पंजाब के ..... में आज भी बडा स्मारक और मंदिर है।

अ. कराड ब. बार्शी क. परभणी ड. घूमान

1.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ :

हरि-ईश्वर, हीरा नर रत्न, पीरा-पीडा जाती-कुल सकल, क्रांती -बदलाव, सुषन-सुखद, काटै-कटौती, जम-यम, भुवन-सृष्टि, ततसारा-तप्तशाला, उतरै पारा-कष्ट कम होना, अद्भूद-अनोखा, अचंभा-आश्चर्य कथ्या-विशेष, गजिंद्र-बडा हाथी, नैरे समीप दूरि-दूरत्व षजूरी-पेड, इंद्री-इंद्रिये, मुक्ता-मुक्ती, चीन्हे-शुध्द रूप, मुगधा-मंत्रमुग्ध, बेद-वेद, सुमृत-पुजा करना, कथीया-कथनीय पद-पैर, निरवाना-मुक्ती पाना, परम तत-परमतत्त्व, रूप-सुरत रेष-बरण-वेशभूषा, झिलमिल-तारों का झिलमिल (रोशनी) करना, तिहू लोक-(स्वर्ग, मृत्यु और पाताल), पियारा-प्रिय, अकास-आकाश, मुष्टी-मुक्का (मुठ्ठी), दीपक-ज्ञान की ज्योति, पैष-देखो, बिन बाती-कभी न घटने वाली बाती (बत्ती), सरूप-समान, भणत-कहते है, अमर पद-मोक्ष (मुक्ति), परस्था-त्याग, पिंडभया-शरीर समान, तत-वही, दरस्था-दृश्य

1.6 स्वयंअध्ययन प्रश्नों के उत्तर:

1. नामदेव 2. 61 3. विसोबा खेचर 4. नरसी बामणी 5. घूमान

1.7 सारांश :

1. संत नामदेव वारकरी संप्रदाय के प्रमुख कवि माने जाते हैं।
2. सगुण साकार विठ्ठल में ही वे निर्गुण निराकार ब्रह्म के दर्शन करते रहे।
3. प्रपंच और परमार्थ का सुंदर समन्वय नामदेव ने किया है।
4. समाज की सभी जातियों में एकता का भाव पैदा करने का श्रेय नामदेव को दिया जाता है।
5. नामदेव को अभंग छंद को लोकप्रिय बनाने का श्रेय जाता है। साथ हिंदी गीत शैली का प्रवर्तन किया।
6. नामदेव ने कीर्तन का प्रचलन किया। वारकरी कीर्तन में एक अभंग को लेकर उसका विवेचन किया जाता है। इस कीर्तन पद्धति से लोक संगठन साबित होता है और भक्ति का प्रचार प्रभावी ढंग से किया है।
7. महाराष्ट्र के संत पंचायतन (ज्ञानदेव, नामदेव, एकनाथ, रामदास और तुकाराम) में एक नामदेव केवल महाराष्ट्र के नहीं संपूर्ण भारत के प्रमुख संतों में एक है।

8. हिंदी कीर्तन के माध्यम से सामाजिक एकता को स्थापित करने का प्रयास किया है। इसलिए यह कह सकते है नामदेव समाजवाद के प्रथम उद्‌बोधक संत है।

1.8 स्वाध्याय:

अ. दीर्घोत्तरी प्रश्न :

1. नामदेव ने पदों के माध्यम से नाम महिमा, रहस्यात्मकता और परमात्मा का ज्ञान संबंधी विचारों को कैसे स्पष्ट किया है?
2. प्रस्तुत पदो ंके आधार पर नामदेव के विचारों को स्पष्ट कीजिए।
3. नामदेव के पदों का भावार्थ स्पष्ट कीजिए।

आ. लघुत्तरी प्रश्न :

1. नाामदेव ने नाम महिमा का महत्त्व कैसे विषद किया है?
2. नामदेव के परमात्मा (ईश्वर) विचारों को स्पष्ट कीजिए।
3. नामदेव के 'अद्‌भुद अचंभा कथ्या न जाई' पद का आशय लिखिए।
4. नामदेव के ज्ञान संबंधी विचारों को स्पष्ट कीजिए।

1.9 क्षेत्रीय कार्य :

1. नामदेव पाठ्‌यक्रमों में संकलित हिंदी पदों मराठी में अनुवाद कीजिए।
2. नामदेव, ज्ञानदेव, निवृत्तिनाथ, सोपानदेव, मुक्ताबाई और विसोबा खेचर आदि संतों के साथ भक्ति पदों की चर्चा लिखने का प्रयास कीजिए।
3. नामदेव ने महाराष्ट्र के बाहर राजस्थान, पंजाब और वृंदावन में हिंदी पदों का संकल्प कीजिए।

1.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए :

1. मराठी संतों की हिंदी वाणी–आनन्द प्रकाश दीक्षित – पंचशील प्रकाशन, जयपुर
2. हिंदी साहित्य ज्ञानकोश –प्रधान संपादक, शंभुनाथ – भारतीय भाषा परिषद– कोलकाता

2. कबीर के दोहे

अनुक्रम

1.1 उद्देश्य

1.2 प्रस्तावना

1.3 विषय विवरण

1.3.1 कबीर का जीवन परिचय

1.3.2 कबीर के दोहों का परिचय

1.3.3 कबीर के दोहों का भावार्थ

1.4 स्वयंअध्ययन के लिए प्रश्न

1.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

1.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

1.7 सारांश

1.8 स्वाध्याय

1.9 क्षेत्रीय कार्य

1.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1.1 उद्देश्य:

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप:-

1. निर्गुण ज्ञानश्रयी कवि कबीर की विचारधारा से परिचित होंगे।
2. कबीर के सदुरू संबंधी विचारों को जान सकेंगे।
3. कबीर के ईश्वर, जीव, जगत्, माया संबंधी विचारों की जानकारी पा सकेंगे।
4. कबीर के समाजसुधारक रूप में परिचित होंगे।
5. हिंदी के प्रथम रहस्यवादी कवि कबीर से परिचित होंगे।

1.2 प्रस्तावना :

भक्तिकालीन निर्गुण काव्यधारा के प्रवर्तक के रूप में कबीर जाने जाते हैं। कबीर दास के बारे में अनेक किवदंतियाँ प्रचलित है। उनके जन्म, मृत्यु, निवास स्थान, वंश और नाम तक के संबंध में निश्चित रूप से

कुछ नहीं कहा जा सकता। विद्वानो के मतानुसार कबीर एक विधवा ब्राह्मणी की कोख से पैदा हुए थे। उन्होंने कबीर को लोकलाजवश काशी के लहरतारा नामक तालाब के पास छोड दिया था। नीरू और नीमा नामक जुलाहा दंपति ने इनका लालन-पालन किया। कबीर अपने को रामानंद का शिष्य मानते थे। उन्होंने ने कहा है। काशी में हम प्रकट भये, रामानंद चेतायें। नाथ सिद्धों के धार्मिक दृष्टिकोन के प्रति अनुरक्त, मुस्लिम संतों के संपर्क में आनेवाले कबीर की धर्म भावना अत्यंत व्यापक थी। अत 'उन्होनें दोनों धर्मों की दुर्लबताओं की निंदा की और मानवशास्त्र के लिए ग्राहय धार्मिक, सामाजिक और सांस्कृतिक आदर्शो की स्थापना की।' उन्होंने स्वयं को अनपढ. कहा है।

मासि कागद छूओ नहीं कलम गही नंहि हाथ।

कबीर अशिक्षित होकर भी महान ज्ञानी था। उनके पास ज्ञान के दो आधार थे। सत्संग और पर्यटन। वे महान साधक थे। अपने युग के सभी दार्शनिक सिद्धांतों का उन्हे गहरा ज्ञान था। वे क्रांतिकारी विचारक और मानवतावादी समाजसुधारक थे।

1.3 विषय –विवरण:

1.3.1 कबीर का जीवन परिचय:

संपूर्ण भारतीय साहित्य में अपनी पहचान रखनेवाले कबीर बहुआयामी व्यक्तित्त्व के धनी थे। कबीर एक साथ संत, भक्त, कवि, साधक, दार्शनिक, समाज सुधारक, आलोचक, व्यंगकार, मस्तमौला, फक्कड अंत्यज दलितों के नायक, सामुदायिक एकता के सूत्रधारा, धर्मसमावेशक और ज्ञानाश्रयी शाखा के प्रवर्तक समाज के पथ प्रदर्शक के रूप में कार्य करते रहें। उनके व्यक्तित्त्व का प्रभाव आज भी भारतीय जनमानस को प्रेरणापद रहा है।

उनका जीवन और साहित्य का अध्ययन आज भी हमें नई प्रेरणा, उर्जा देता है। हिंदी साहित्य के प्राचीन विद्वानो के जीवनवृत्त संबंधी प्रामाणिक प्रमाणों के अभाव के समान ही कबीर की विश्वसार्हता प्रामाणिक जीवनी उपलब्ध नहीं है। कबीर का साहित्य और उनके समकालीन संतों और भक्तों के साहित्य से उपलब्ध अल्प जानकारी को स्वीकार कर हमें संतुष्ठ होना पडता है। एक किवन्दती के अनुसार उनका जन्म एक विधवा ब्राह्मणी के गर्भ से हुआ था। उसने अपने नवजात शिशु को लोकलज्जा के कारण काशी के लहरतारा तालाब के किनारे फेंक दिया था। संयोगवश वहाँ से गुजरने वाले नीरू नीमा नामक एक मुसलमान जुलाहे दम्पति ने उसे उठाकर परवरिश की। कबीर गरीब और दलित थे। वे पढें लिखें नहीं थे परंतु बहुश्रुत ज्ञानी थे। उन्हें श्रृती और शास्त्र का परम्परागत ज्ञान था। सत्संग और भक्ति उनके जीवन का अभिन्न अंग था। वे करघे पर कपडा बुनते समय निर्गुण ईश्वर की भक्ति के गीत गाते थे।

कबीर का जन्म इ स 1398 में काशी में हुआ था। कबीर की पत्नी का नाम लोई था। उन्हे कमाल और कमाली नामक बेटा और बेटी थी। उन्होनें पारिवारिक जीवन को स्वीकार करते हुए भक्ति करने का संदेश दिया था। उन्होंने रामानंद से दीक्षा प्राप्त की थी। कबीर साधु-संतो की संगति में काशी और मगहर के

आसपास रहे। कहा जाता है कि मगहर मे मृत्यु आने पर नरक मिलता है, लेकिन कबीर ने आत्मविश्वास के साथ इस अंधविश्वास को तोडने के लिए इ स 1518 में मगहर में शरीर त्याग करना पसंद किया। कबीर अनपढ थे। समस्त संसार उनकी पाठशाला थी। कबीर ने आँखिन देखों पर भरोसा था।

कबीरदास के जीवन के समान ही उनकी रचनाओं के संबंध में भी विद्वानों में मतभिन्नता थी। उनकी प्रामाणिक कृतियों की सूचि बनाना कठिण काम था। कबीर अनपढ होने के कारण उनके शिष्यों द्वारा तथा लोककंठ द्वारा उनकी वाणी का संरक्षण किया है। मिश्रबंधु उनका 75 रचनाओं का उल्लेख करते है। नागरी प्रचारिणी के सभा ने कबीर की रचनाओं 130 ग्रंथों की स्वीकार किया है। कबीर रचनाओं के संबंध में विवाद है लेकिन 'बीजक' उनकी प्रामाणिक रचना मानी जाती है। बीजक को साखी रमैनी, पदावली के में विभाजित किया गया है। कबीर की भाषा ''सधुक्कडी भाषा'' रही है। उस समय के लोगों में प्रचलित भाषा में उन्होंनें अपने काव्य के माध्यम से विचार प्रस्तुत किये है। कबीर के साहित्य की विशेषताएँ निम्ननुसार है।-

- निर्गुण - निराकार ईश्वर की उपासना
- सद्गुरू की महिमा
- मूर्तिपूजा का विरोध
- धार्मिक पाखंड का खंडन
- सत्संग का महत्व
- अवतारवाद का विरोध
- बाह्याडंबरों और कर्मकांड का खंडन
- हिंसा का विरोध
- सदाचार का पर बल
- कंचन और कामिनी का विरोध
- जातिवाद और वर्णाश्रम का विरोध
- सत्य के उपासक
- राम -रहिम की एकता पर बल
- सांप्रदायिकता
- कथनी और करनी में अंतर नहीं
- सत्य के उपासक
- काव्य साध्य न होकर साधन
- खिचडी या सधुक्कडी भाषा

1.3.2 कबीर के दाहों का परिचय:–

कबीर के साखी में से प्रस्तु दोहे लिए गए है। गुरू ने दिए हुए नाम की महत्ता का जीवन मे आवश्यक मानते है। कबीरी ने अपने पदों में सद्गुरू को अनन्या साधारण महत्त्व दिया है। कबीर ने मनुष्य जन्म में ईश्वर से मिलने की व्याकुलता के बारे में बोध किया है। इस व्याकुल परमात्मा की प्राप्ति की बात कही है। जब परमात्मा की प्राप्ति होती है तो अपने आप माया का अंत होकर मुक्ति मिलने की बात कही है। कबीर ने मनुष्य को ऐसी वाणी बोलनी चाहिए इसमे जिससे सुनने वाला व्यक्ति शान्त हो जाएगा और सन्मार्ग पर चलता है। कबीर ने प्रेम भाव को केंद्र रखकर प्रेम के भाषा की बात कही। ईश्वर की प्राप्ति होने से सुख और शांति संभव है। यह केवल मनुष्य जन्म में ही मिलने की बात कही है। ईश्वर प्रत्येक मनुष्य के हृदय में निवास करता है। कबीर कहते है निंदक के द्वारा जानेवाली निंदा मनुष्य अपने दोषों के प्रति सचेत रहता है और सुधार करने के लिए प्रेरित करते है।

1.3.3 कबीर के दोहों का भावार्थ :

1. **सद्गुरू महिमा:–**

प्रस्तुत दोहे में कबीरदास ने अपने ऊपर गुरू द्वारा किए गए उपकार को बताया है। वे कहते है कि किस तरह मेरे गुरू ने मेरी आंखों को खोलकर सत्य को दर्शन करवाया है। सद्गुरू की महिमा मुझपर अनंत (असीमित) है। उसने अनंत उपकार किये है। कबीर कहते है माया के कारण मेरी आँखें बंद पडी थी, सत्य मुझे दिखाई नहीं दे रहा था। गुरू ने मेरे आँखें खोलकर अनंत संतों का दर्शन करा दिये। कहने का तात्पर्य यह है की सद्गुरू ने हमारी अज्ञनता भरी आँखों को खोलकर ईश्वर का ज्ञान (सत्यता) से मेल करवाया है। इसका श्रेय सद्गुरू को जाता है। गुरू का गौरव असीम है।

2. **नाम महिमा –**

कबीर ने प्रस्तुत दोहे में नामस्मरण को महत्त्व दिया है। राम (ईश्वर) नाम के लाभ से जीवन में सफलता होनें की बात कही है। कबीर कहते है राम नाम की लूट मची है। चारों तरफ राम नाम बिखरा हुआ है। यह नाम अधिक से अधिक संग्रहीत करना चाहिए। जिस तरह अपने खातें में पूँजी जमा हो जाएगी तो अंत में हमारा जीवन सुखदायक हो सकता है। एक दिन जब मनुष्य का देह नहीं रह जाएगा तब पछताने के सिवाय कुछ भी प्राप्त नहीं होगा। इसलिए कबीर ने मनुष्य के जीवन राम नाम प्राप्त करने की बात कही हैं। कबीर ने साधना पद्धतियों में नामस्मरण को ही अधिक महत्व दिया है।

3. **ईश्वर प्राप्ति की व्याकुलता–**

कबीर ने इस दोहे में जीवात्मा के ईश्वर से मिलने की व्याकुलता का वर्णन किया है। प्रियतम का रास्ता देखते देखते आत्मा रूपी विरह से आँखों के आगे अँधेरा छाने लगा है। उसकी दृष्टि मंद – मंद पड गई है। प्रिय राम की पुकार लगाते –लगाते जीवात्मा की जीभ में छाले पड गए है। व्याकुल जीवात्मा जो ईश्वर से मिलने के विरह को अग्नि में तडप रही है। उसे अपने तन की भी चिंता नहीं रहती है। इस दोहें में

निहरी-निहरी और पुकारी-पुकारी शब्दों पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार का उपयोग हुआ है। इस दोहे में सधुक्कडी भाषा का सुंदर उपयोग हुआ है।

4. **ब्रह्मज्ञान –**

कबीर कहते है ब्रह्म ही जगत् की एक मात्र सत्ता है। इसके अतिरिक्त संसार में और कुछ नहीं है। जो कुछ है ब्रह्म ही है। ब्रह्म ही सब में व्याप्त होता है और फिर उसी, में सब लीन हो जाते है। प्रस्तुत पदो में हिम /बर्फ का निर्माण पानी से ही होता है और बर्फ पुन: पिघल कर पानी में तब्दील होता है। जिस रूप में था वह उसी रूप में पुन: लौट चुका है। आत्मा परमात्मा का अंश होता है। वही फिर पूर्ण ब्रह्म मे मिल जाता है। इसमें आत्मा और परमात्मा दोनों में अंतर केवल इतना सा है की दोनों के नाम अलग अलग है। जैसे बर्फ और पानी, पानी की ही एक अवस्था बर्फ होती है। वैसे ही परमात्मा की आत्मा ही अवस्था है। अंत आत्मा को मूलस्वरूप में पुन: लौट जाना है। इसलिए परमात्मा का अंश होने के कारण परमात्मा का वास आत्मा में ही बताया गया है।

5. **माया का वर्णन–**

कबीर ने इस साखी के माध्यम से जीवात्मा को संदेश देते है की वह माया के भ्रम को समझे और इसके फांस से दूर रहकर ईश्वर के नाम की सुमिरण करनी चाहिए। नामस्मरण जीवन मुक्ति का आधार है। कबीर दास कहते है कि अवागमन में पडे नर को ज्ञात है की परमात्मा की प्राप्ति के बिना माया मरती है न मन केवल शरीर मिटता है आशा तृष्णा नहीं मरती। इसतरह माया का कभी अंत नहीं होता माया सदा बनी रहती है, यह मानव देह ही नश्वर है जो पैदा होती है और समाप्त हो जाती है। माया सदा बनी रहती है और वह नए नए शिकार ढूंढती रहती है। ऐसी ही आशा और तृष्णा कभी समाप्त नहीं होती है। अत: माया का पीछा छोडकर सन्मार्ग पर चलते हुए ईश्वर के नाम का सुमिरण करना ही मुक्ति का आधार है।

6. **वाणी का महत्त्व –**

इस दोहे के माध्यम से कबीर दास कहना चाहते है की मनुष्य को ऐसी वाणी बोलनी चाहिए जिससे सुनने वाले व्यक्ति का गुस्सा कम हो जाए तथा वह मन में शीतलता का अनुभव करें। ऐसा करने से ना सिर्फ सुनने वाले व्यक्ति का मन शीतल होगा बल्की आपका मन भी शीतल होगा और आपको मन की शांति और शीतलता प्राप्त होगी। इसी तरह कबीर कहते है मन का अहंकार किनारे रखकर ऐसे वचन बोलने की बात कही जिससे आपका मन शांत और शीतल बने और दूसरों को भी सुख मिले। जीवन में मीठी वाणी का प्रयोग झगडों को कम कर सकता है तथा मनुष्यता को नया आयाम दिया जा सकता है।

7. **प्रेम भावना–**

इस दोहें के माध्यम से कबीर कहते है प्रेम खेत में नहीं उपजता, प्रेम बाजार में भी नहीं बिकता। चाहे कोई राजा हो या साधारण प्रजा, यदि प्यार पाना चाहते हैं तो वह आत्म बलिदान से ही मिलेगा। त्याग और समर्पण के बिना प्रेम को नहीं पाया जा सकता। प्रेम गहन सघन भावना है कोई खरीदी अथवा बेची

जानेवाली वस्तु नहीं है। जब तक में है तब तक प्रेम नहीं है। प्रेम संसारिक और भैतिक वस्तु नहीं है जिसे हम उपजा ले किसी से खरीद ले ले। यह तो यह तो एहसास की बात है। जिसको प्रेम चाहिए उसे अपना क्रोध, इच्छा, भय को त्यागना चाहिए। कबीर के दोहे लोगों का सकारात्मक मार्ग पर चलने के लिए प्रेरित करते है।

8. **ईश्वर की प्राप्ति–**

कबीर कहते है की केवल प्रभु ही समस्त सुख देने वाला है। बाकी सारा संसार अनेक दुखों का भंडार है। यहां पर परम सुख–शांति केवल अविनाशी परमात्मा के सुमिरण –भजन में ही है, अन्यथा कही नहीं। सभी देवता, मनुष्य, मुनि और राक्षस आदि जो भी हुए हैं, वे अपना कमी फल भोगते हुए काल के फंदे में ही फंसे है। इसी तरह मृत्यु किसी को नहीं छोडता। प्रभु की प्राप्ति ही सुखों का दाता है। राम ही सभी सुखों का मूल है। शेष सभी दुख की राशियॉ हैं। यहॉ मानवीकरण अलंकार है।

9. **ईश्वर की महत्ता–**

कबीर दास जी ईश्वर का महत्त्व बताते हुए कहते है कि कस्तुरी हिरण की नाभि में होती है, लेकिन इससे वह अनजान हिरण उसके सुगंध के कारण पूरे वन में खोजती है। उस अज्ञानी हिरण को मालूम नहीं कि वह कस्तुरी (सुगंधित द्रव्य) उसकी नाभि में है। ठीक उसी प्रकार मनुष्य परमात्मा की प्राप्ति के दूनिया या जगत् में ढूंढता फिर रहा है। परंतु अपने अंदर रहे परमात्मा को ढूंढ नहीं पा रहा है। इसीप्रकार ईश्वर भी प्रत्येक मनुष्य के हृदय में निवास करते है। इस परमात्मा को हम नहीं देख पा रहे है। वहीं मनुष्य ईश्वर को मंदिर, मस्जिद और तीर्थस्थानों मे ढूंढता रहता है। परंतु ईश्वर संसार के कण–कण में व्याप्त है यह मनुष्य समझ नहीं पाता।

10. **निंदक का महत्त्व–**

कबीर दास कहते है कि निंदक को अपने नजदीक अंगन में कुटी बनाकर रखना चाहिए। क्योंकि वह बिना पानी और बिना साबून से मनुष्य के दोषों को हटाकर उसे अच्छा बनाता है। मनुष्य के स्वभावगत दोषों को हटाकर उसे साफ कर देता है। साथ ही निंदक की निंदा से मनुष्य अपने दोषों के प्रति सतर्क हो जाता है। व्यक्ति का चरित्र हमेशा ही उसकी पहचान है उसे निंदा करनेवाले को साथ रखना चाहिए, ऐसा इन्सान हमारे अंदर की दुर्बलता और कमियों को हमारे सामने लाता है। निंदक आपके चरित्र और व्यवहार को निर्मल करता है।

1.4 स्वय अध्ययन के लिए प्रश्न :

निम्नलिखित विकल्पों में सें सही विकल्प चुनकर वाक्य फिर से लिखिए।

1. भक्तिकालीन निर्गुण काव्यधारा के प्रवर्तक के रूप में..... जाने जाते है।

अ. कबीर ब. तुलसीदास क. सूरदास ड. बिहारी

2. कबीर का जन्म..... में हुआ।

अ. मगहर ब. काशी क. वृंदावन ड. मथुरा

3. कबीर अपने आपको ..... का शिष्य मानते थे।

अ. नरहरीदास ब. नंददास क. रामदास ड. मलुकदास

4. कबीर की प्रामाणिक रचना ..... मानी जाती है।

अ. बीजक ब. सतसई क. गुरू के संग ड. रमैनी

5. ऐसी बोली बोलिए मन का ..... खोई।

अ. तन ब. सीतल क. आपा ड. सुख

6. कस्तुरी कुंडल बसै, ... ढूंढे बत माँहि।

अ. जेवडी ब. कुला क. रमैनी ड. मृग

7. कबीर के वाणी के तीन अंग है - पद, साखी और.....।

अ. साखी ब. सबद क. रमैनी ड. पद

1.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ :

अनंत-सीमित, उपगार-उपकार, लोचन-आँख, उघडिया-खोल दिया, दिखावनहार-दर्शन किया, लूटियों-लूट लो, तन-शरीर, अंखडियाँ-आँखें, झाँई पडी-कमजोर होना, पंथ निहारी-राह देखना, जीभडियाँ-जिव्हा, छाला पडया-छाले पडना, हिम-बर्फ, बिलार-छूपाना, मुई-मेरी, मुवा-मरा हुआ, आंसा त्रिस्नाँ-आशा और तृष्णा, कामना, आपा-गुस्सा, सीतल-ठंडा, बॉणी-वचन, हाटि-बाजार, रूचै-चाह, रासि- राशि, सुर-देवता, नर-मानव, मुनिवर-साधू, असुर-राक्षस, काल मृत्यु, कस्तुरी-सुगंधित द्रव्य, कुंडल- नाभि, मृग-हिरण, घटि-घटि-कण-कण, नेडा रखिये-निकट या समीप रखना चाहिए, कुटी बंधाई-पेड पौधों की छाया, आँगणि-आँगण, निरमल-शुध्द, सुभाइ-स्वभाव

1.6 स्वयंअध्ययन प्रश्नों के उत्तर:

1. कबीर 2. काशी 3. रामानंद 4. बीजक

5. आपा 6. मृग 7. रमैनी

1.7 सारांश :

1. कबीर भक्तिकालीन भक्ति काव्य के प्रमुख कवि थे। उन्हे निर्गुण काव्यधारा के प्रवर्तक माना जाता है।

2. कबीर मानवतावादी समाजसुधारक थे और महान साधक के रूप में प्रसिध्द थे।

3. उनकी विचारधारा पर अद्‌वैतवाद और एकेश्वरवाद का प्रभाव दिखाई देता है।

4. कबीर ने ईश्वर प्राप्ति के नामस्मरण, ब्रह्मज्ञान, सत्संग और प्रेम भक्ति को महत्त्व दिया है।

5. आत्मा और परमात्मा की एकता का उन्होंने प्रतिपादन किया है।

6. उनके नाम पर विभिन्न रचनाएँ मिलती है लेकीन उनकी प्रामाणिकता विवादास्पद है। बीजक उनकी एकमात्र प्रामाणिक रचना मानी जाती है। 'बीजक' को साखी, रमैनी और पदावली में विभाजित किया है।

7. अपनी साधना में उन्होनें गुरू को अनन्य साधारण महत्त्व दिया है। कबीर के गुरू रामानंद माने जाते है।

8. कबीर के राम दशरथ पुत्र राम न होकर घर घर में व्याप्त ब्रह्म है। उनके राम शब्द 'निर्गुण ईश्वर' के लिए प्रयोग किया है।

9. कबीर के आत्मा को पत्नी और परमात्मा को पति मानकर दाम्पत्य भाव के माध्यम से ईश्वर के प्रति प्रेम व्यक्त किया है।

10. कबीर अशिक्षित होकर भी महान ज्ञानी थे। वे क्रांतिकारी विचारक थे। उनकी भाषा –सध्धुकडी अथवा पंचमेल खिचडी भाषा मानी जाती है। जिससे पाँच भाषाओं का समन्वय मिलता है।

1.8 स्वाध्याय:

अ. दीर्घोत्तरी प्रश्न :

1. पठित दोहों के आधार पर कबीर की विचारधारा को स्पष्ट कीजिए।
2. कबीर के दोहों के माध्यम से सदुरू महिमा, नाम महिमा, ब्रह्मज्ञान और माया से मुक्ति संबंधी विचारों को स्पष्ट कीजिए।
4. कबीर के दोहों के माध्यम से ईश्वर, प्रेम, वाणी, निदंक आदि के महत्त्व की रचना कीजिए।
5. कबीर के दोहों का भावार्थ स्पष्ट कीजिए।
6. कबीर के समाजसुधारक रूप को विशद कीजिए।

आ. लघुत्तरी प्रश्न :

1. कबीर ने सदुरू की महिमा का वर्णन किस तरह किया है?
2. कबीर के माया संबंधी विचारों को स्पष्ट कीजिए।
3. कबीर के नामस्मरण का महत्त्व स्पष्ट कीजिए।
4. कबीर ने ईश्वर की प्राप्ति का वर्णन किस प्रकार किया है।

5. कबीर के 'ऐसी बाँणी बोलिए' पद का आशय स्पष्ट कीजिए।

6. कबीर के 'कस्तुरी कुंण्डली बसै मृग ढूँढे बन माहि' पद का आशय कीजिए।

7. कबीर के निंदक संबंधी विचारों को स्पष्ट कीजिए।

1.9 क्षेत्रीय कार्य :

1. कबीर की समकालीन मराठी संत कवि नामदेव के साथ तुलना कीजिए।

2. महाराष्ट्र के निर्गुण संत कवि की जानकारी प्राप्त कर हिंदी में लिखने का प्रयास कीजिए।

1.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए :

1. कबीर ग्रंथावली- संपादक, श्यामसुंदर दास, चन्द्रलोक प्रकाशन, कानपुर

2. मध्यकालीन हिंदी काव्य -संपादक डॉ चंदूलाल दूबे- पूर्णिमा प्रकाशन, धारवाड

3. मीराबाई के पद

अनुक्रम

1.1 उद्देश्य

1.2 प्रस्तावना

1.3 विषय विवरण

1.3.1 मीराबाई का जीवन परिचय

1.3.2 मीराबाई के पदों का परिचय

1.3.3 मीराबाई के पदों का भावार्थ

1.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

1.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

1.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

1.7 सारांश

1.8 स्वाध्याय

1.9 क्षेत्रीय कार्य

1.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1.1 उद्देश्य:

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप–

1. मीराबाई का कृष्ण प्रेम, विरह भावना तथा भक्ति भावना से परिचित हो जाएंगे।
2. मीराबाई की भक्ति में दैन्य और माधुर्य भाव से परिचित होंगे।
3. मीराबाई के समर्पन भाव और एकनिष्ठा से परिचित होंगे।

1.2 प्रस्तावना :–

भक्तिकाल के कृष्णभक्ति –काव्य में मीराबाई का स्थान सर्वोपरि रहा है। मीराबाई का काव्य समाज में अत्यंत लोकप्रिय रहा है। आज भारत में मीराबाई की भक्ति, विद्रोह और निर्भिकता का प्रतीक माना जाता है। मीराबाई के भक्त होने पर किसी को आपत्ति नहीं थी। आपत्ति का कारण था लोकलाज। राणा कुल की बहु बाहर निकल कर सब लोगों से मिले। मीराबाई को इसी लोकलाज लडना पडा था। इसी कारण उनकी

पदों इसकी चर्चा सबसे अधिक है। मीराबाई की संघर्षशीलता का सबसे बडा प्रमाण यह है कि उनकी विरह की तीव्रता की अभिव्यक्ति। मीरा के जन्म - मृत्यु के संबंध में विवाद है। उसी तरह उनकी रचनाओं की संख्या भी विवादस्पद है। उनके नाम पर भी कई रचनाएँ मिलती है। 1. नरसीजी को मांहरो 2. गीत गोविंद की टीका 3. सोरठ के पद 4. गर्बा गीत 5. राग गोविन्द 6. मीराबाई का भलार 7. फुटकर पद आदि। इन ग्रंथों की प्रामाणिकता संदिग्ध है। 'मीराबाई की पदावली' के नाम से उनके लगभग 200 पद प्राप्त होते है। जो उनकी अक्षय कीर्ति का स्तम्भ है। उनके पदों का प्रमुख विषय कृष्णभक्ति और कृष्ण प्रेम है। प्रत्येक पद में उनका विरह भाव व्यक्त हुआ है। मीरा ऑसू और वेदना की गायिका थी। इसी कारण उन्हें 'दरद दीवानी' या 'प्रेम दिवानी' कहा जाता है। उनके पदों में गिरधर गोपाल के प्रति अनन्य निष्ठा, समर्पण भाव, एकनिष्ठा, नारी हृदय का समर्पण, तल्लीनता, कोमलता आदि का मार्मिक चित्रण मिलता है। इसीतरह ग्येयता, तन्मयता, मधुरता, दर्द दीवनापन और भक्ति की गहन अनुभूति के कारण राजस्थान की कृष्ण भक्ति कवयित्री मीरा समस्त भारतवर्ष में जनप्रिय हो चुकी है। उनके पदों में राजस्थानी, ब्रज और गुजराती भाष्य का प्रभाव पाया जाता है।

1.3 विषय –विवरण

1.3.1 मीराबाई का जीवन परिचय:

हिंदी साहित्य में कृष्णभक्त कवियों में मीरा का स्थान अनन्य साधारण है। मीरा का जन्म राजस्थान के मेड़ता के समीपवर्ती कुडकी गांव में इ.स.1498 हुआ था। मीरा मेडतिया राढौर, रत्नसिंह की पुत्री और राव दूदा जी की पौत्री थी। मीरा को बचपन में माँ की मृत्यु का दु:ख झेलना पडा था। उनका लालन - पालन पितामह राव दूदाजी ने किया। दूदाजी परम वैष्णव - भक्त थे। अत: बचपन से ही मीरा के संस्कार कृष्ण - प्रेम ओतप्रोत थे। मीरा का विवाह राणा सांगा के ज्येष्ठ पुत्र राणा भोजराज से इ.स. 1516 में हुआ था। मीरा का दांपत्य जीवन आनंदपूर्ण था। विवाह के उपरान्त कुछ वर्षा में ही उनके पति का स्वर्गवास हुआ। मीरा तत्कालीन प्रथा के अनुसार सती नहीं हुई, परिणमत: उन्हें राजपरिवार का विरोध झेलना पडा। पति की मृत्यु के कारण बचपन से ही हृदय में स्थित भक्ति ही अब उनके जीवन की एकांत निष्ठा बन गई। मीरा ने समस्त लौकिक संबंधों को तोडकर, लोक एवं कुल मर्यादा त्यागकर और चारों ओर से चित हटाकर स्वयं को कृष्ण के चरणों पर समर्पित किया। लोकलाज त्यागकर मीरा साधु संगति में भक्तिभाव से अपना जीवन व्यतीत करने लगी। मीराबाई यह व्यवहार और भक्तिभाव में समर्पित होकर गाना, नाचना राजा सांगा के मृत्यु के बाद उत्तराधिकारी बने देवर विक्रमजित सिंह को असहय लगा। उसने मीरा को अनेक यातनाएँ दी। उसने मीरा को कई बार जान से मारने की कोशिश भी की, लेकीन मीरा अपनी भक्ति के बल पर बच गई। उसका कृष्ण भक्ति के प्रति होनेवाला रूझान कम नहीं हुआ।

इन सभी घटनाओं का मीरा के कोमल हृदय पर आघात पहुँचा। इन सभी यातानाएं मीरा की भक्ति को दृढ बनती गयी। मीरा के चाचा वीरमदेव को इस अत्याचारो का पता लगा तो उन्होंने मीरा को मेडता आने का निमंत्रण दिया। जब तक वीरमदेव मेडता का शासक रहा, मीरा वही रहकर अपने आराध्य की साधना

करती रहीं। जब मेडता वीरमदेव को हाथ से निकल गया, तो मीरा ने कृष्ण की लीला –भूमि वृन्दावन में शरण ली। ब्रज की माधुरी पर प्रसन्नता का जादू देखकर मीरा ने ब्रज की प्रशंसा में गीत लिखे–

या ब्रज में कछु देख्यो री टोना।।

वहां कुछ समय रहकर वहाँ से मीरा द्वारिका चली गयी। वहीं रड छोड जी के मंदिर में भगवान की मूर्ति के सम्मुख एकाग्र भाव से भजन – कीर्तन करते हुए मीरा ने अपना शेष जीवन व्यतीत किया। संत रैदास या रविदास उनके गुरू थे। मीरा का आध्यत्मिक विकास में सबसे पहले नाथ संप्रदाय का प्रभाव रहा। जिसमे उसने जोगी (योगी) के संबंध में पद लिखे। उसके पश्चात संतों के प्रभाव में आकर उन्होनें नश्वरता के फिर रहस्यान्मुखी विरह – भावना के गीत गाए। 'भागवत' के प्रभाव से कृष्णलीला और विनय के पद गाए। कृष्ण के वियोग में विप्रलंभ श्रृंगार के गीत उनके कंठ से निकले और अंत में कृष्ण के प्रेम में तन्मय होकर उन्होंमे माधुर्य – भाव से उनकी पुजा उपासना की है। उनकी आध्यात्मिक जीवन साधना परक नहीं अनुभूति परक है। कुछ लोग मीरा को निर्गुण की साधिका बताते है। क्योंकी उनके पदों में योग के कुछ तत्त्व मिलते। हठयोग के अनेक सिध्दांतों का उल्लेख और रहस्यानुभूति के कारण हमें इस प्रकार सोचने के लिए विवश करती है। परंतु वास्तविकता यह है की मीरा पर निर्गुण और सगुण दोनों ही धाराओं का प्रभाव पडा था।इस प्रकार मीरा के आराध्य का प्रधान रूप कृष्ण का लीलामय रूप है जो बाल्यकाल से ही उनके हृदयपटल पर अंकित हो चुका था। उन्होंने अपना जीवन कृष्ण भक्ति में बिताया। ऐसा माना जाता है की गुजरात के द्वारिका स्थित रणछोड मंदिर मे इस 1547 में मीराबाई की मृत्यु हो गयी।

मीरा का काव्य उनके हृदय से सहजरूप से निकलनेवाला प्रेम सत्कार रूप है। उनकी वृति समग्रता प्रेम माधुर्य में रमी है। अपने आराध्य 'गिरीधर गोपल' की विलक्षण रूप छटा के प्रति उनकी अनन्य आसक्ति शब्दधारा के रूप में फूट पडी है। कृष्ण प्रेम संजोगकर उससे निर्मित आनंद की अभिव्यक्ति की है। मीरा का संयोग –वर्णन उतना सबल नहीं जितना वियोग पक्ष रूप– वर्णन के पदों में उनका हृदय प्रिय से सामजंस्य स्थापित कर लेना है। कुछ पदों परंपरागत उपमानों के द्वारा कृष्ण के कृष्ण के सौंदर्य का चित्र प्रस्तुत किया गया है। मीरा ने मुक्तक पद शैली का अनुसरण किया है। उनके काव्य में भावनाओं का अपार वेग है, बुद्धि तत्त्व का अभाव है।

मीरा के काव्य का कला पक्ष नगण्य है, क्योंकि मध्यकालीन कवियों के समान वह पहले भक्त थी और बाद में कवि। उनके काव्य में अनुभूति प्रधान है अभिव्यंजना कौशल्य गौण है। कला की साधना को लक्ष्य बनाकर उन्होंने पद रचना नही की, फिर भी अलंकारों की योजना जहाँ वहाँ स्वत: हो गई है। यदि किसी एक भाषा को उनकी काव्य भाषा घोषित किया जा सकता है, तो वह पूर्वी राजस्थानी है जिसमें डिगंल के शब्दों का प्रयोग होते हुए भी प्रधान रूप पिंगल का है, हिंदी में लिखे गए पदों में गुजराती की स्पष्ट छाप है। पंजाबी, खेडी बाली तथा पूर्वी भाषा का प्रभाव कम अधिक मात्रा दिखने को मिलता है।

1.3.2 मीराबाई के पदों का सामान्य परिचय:–

मीराबाई को प्रस्तुत पदों में कृष्ण को प्रति समपर्ण भाव व्यक्त किया है। उन्होंने पूरे संसार में कृष्ण ही उसका आराध्य है।उन्होंने कृष्ण को पति मानकर अपनी भक्ति – भावना व्यक्त की है। मीरा नामरूपी धन, सद्‌गुरू कृपा, भवसागर की प्राप्ति, लोकलाज का त्याग, कुल की मर्यादा, दास्य भक्ति, प्रेम भावना, सत्य की प्राप्ति, नाथ संप्रदाय के योगी स्परूप की विशेषता से हम परिचित होंगे। साथ गिरधर गोपाल के प्रति अनन्य निष्ठा, विरह पीडा तथा कृष्ण के रूप – माधुर्य का वर्णन मिलता है।

1.3.3 मीराबाई के पदों का भावार्थ :

मीराबाई के पदों में नाममहिमा सद्‌गुरू महिमा मोक्ष की प्राप्ति, लोकलाज का त्याग, दास्य भक्ति और प्रेमभक्ति से संबंधित है।

पद 1: नामरूपी धन, सद्‌गुरूकृपा–

मीराबाई के आराध्य कृष्ण है। उन्होंने अनेक स्थानों पर कृष्ण के लिए राम, गोविंद, प्रभु जैसे शब्दों का प्रयोग किया है। इस पद में उन्होंने राम रतन रूपी धन का वर्णन किया है। मीरा कहती है – मुझे राम रूपी रत्न का धन मिल गया है। यह बहुमूल्य वस्तू हमारे गुरू ने कृपा करके मुझे दी है? जिसे मैने तन–मनसे ग्रहण किया है। मीरा ने इस संसार में सब कुछ खो कर इस जन्म की पूंजी को पाया है। ये नामरूपी धन ऐसा है, जो न खर्च करने कम होता है। और न कोई चोर लूट पाता है, इससे तो दिनों दिन सवा गुणा बढत होती रहती है। अर्थात् नाम की पूंजी बढती ही जाती है। मीरा ने सत्य की नाव जिसके खेवनहार सतगुरू श्री रविदास है। जिसकी कृपा से भवसागर पार कर लिया है। मीरा कहती है कि मेरे प्रभु गिरिधर श्रीकृष्ण है जिनका मैं खुशी खुशी से यश गाती हूँ। इसतरह मीरा ने अपने पद में नामधन लेकर सद्‌गुरू कृपा से भवसागर पार किया है। मीरा प्रभु कृष्ण को आराध्य मानकर उनका गुणगाण करती रही है।

पद –2 : लोकलाज और कुल मर्यादा का त्याग–

मीरा के भक्त होने पर किसी को आपत्ति हीं थी। आपत्ति का कारण था 'लोकलाज' और 'कुलमर्यादा'। राना कुल की बहु बाहर निकल कर सब लोगों से मिले। मीरा को इसी लोकलाज से लडना पडा था। इसी भक्ति के तल्लीन मीरा का देवर राणा दिव्य से कठोर यातना सहनी पडी। प्रस्तुत पद में कहती है राणाजी तुमने जहर दिया है मैं जान गई। जैसे सोना आग में तपकर सूरज की तरह चमक उठता हैं। मैंने प्रभु की खातिर लोकलाज, खानदान, कुल की इज्जत दुनिया में पानी की तरह बहाई है। हे राणा अपने घर का पर्दा कर लो, मैं पागल औरत हूँ। सभी संतों के चरणों में तन –मन से समर्पित हो गई हूँ जो उन्हीं के चरण कमल लिपटी पडी हूँ आगे वे कहती है की मुझे जीवन के अंत तक कृष्ण को ही प्रतिपालक माना है और स्वयं को उनकी दासी मानती हूँ। वे कहती है मुझपर कृपा दृष्टि निरंतर रखने की बात करती है। कृष्ण की दासी सदैव गिरिधर नागर का स्मरण करती है। इस पद में लोकलाज और कुलमर्यादा छोडकर कृष्ण के प्रति दास्य भाव का वर्णन किया है।

पद–3 : नाथ संप्रदाय के योगी का प्रभाव और प्रेम भक्ति–

मीरा के आध्यत्मिक विकास में सबसे पहले नाथ संप्रदाय का प्रभाव दिखता है। उन्होंने जोगी (योगीराज) के संबंध में पद लिखे है। मीरा ने अपने प्रभु गिरधारी को योगी स्वरूप कहकर प्रेम भक्ति का महत्त्व भी बताया है। जोगी या जोगिया शब्दों के द्वारा मीरा ने अपने आराध्य कृष्णा का ही स्मरण किया है। मीराबाई इस पद में कह रही है की, देख जोगी तू मत जा। हे जोगी मैं तेरी दासी हूँ और तेरे पैरों पडती हूँ। मीरा अपने कृष्ण (जोगी) को कहती है प्रेम –पूजा की अलग राह है। उस मार्ग पर अग्रेसर होने का तरीका बताने के बारे में कहती है अगर मै वे लेन की कभी चंदन की चिता बनाऊँ तो तुम उसे अपने हाथ से जलाना। योगेश्वर शिव की भाँति अपने शरीर भस्म लगा है धीमे बात कहती है। अपने प्रियतम कृष्ण को कहती है सब जलकर राख की ढेरी हो जाए तो अपने अंग को शिव की अंग मे भस्म लेन जिक्र करती है। मीरा ने कृष्ण को प्रभु, जोगी शिव लगा लेंगे की उपमा दे दी है। अंत मे कृष्ण को मीरा कहती है प्रेम ज्योति अपने ज्योति मिला लेगा जैसे परमात्मा मै आस्था को विलोम होना पडता सभी ज्ञान, साधना, हठयोग के बलपर प्रभु को पाने की बात करते है। लेकीन मीराबाई प्रेम की मार्ग से गिरीधर गोपाल मिलने की उपाय बताती है।

1.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न :

निम्नलिखित विकल्पों में से सही विकल्प चुनकर वाक्य फिर से लिखिए।

1. मीराबाई का जन्म राजस्थान के ..... गाँव में हुआ।

   अ. मेवाड ब. कुडकी क. जोधपुर ड. रामपुर

2. मीराबाई के पति का नाम ..... था।

   अ. भोजराज ब. महाराणा सांगा क. राणा ड. विक्रमजित

3. मीरा ..... को अपना आराध्य मानती थी।

   अ. कृष्ण ब. राम क. अर्जुन ड. भीम

4. मीरा ने अपने पदों में सद्गुरू को ..... की उपमा दी है।

   अ. खेवनहार ब. भवसागर क. राम ड. शिव

5. मीरा के देवर ..... ने जहर दिया था।

   अ. राणा सांगा ब. राणा विक्रमजीत सिंह

   क. दादू ड. विग्रहराज

6. पायो जी में तो ..... रतन धन पायों।

अ. कृष्ण ब. राम क. श्याम ड. शिव

7. मीरा ने अपने पदों में आराध्य कृष्ण को ..... कहा है।

अ. भीम ब. जोगी क. खेवनहार ड. प्रभु

1.5 परिभाषिक शब्द, शब्दार्थ :

अमोलक - बहुमुल्य, खोवायो - खोया, खेवटीया -मल्लाह, हरख- हर्ष यश, बौराणी - पागल, तरकस- तीर रखने का चोंगा, सनकानी -पगलना, कँवल - कमल, परूँ- पैर, चेरी- दासी, डौल -तरीका, जोत - ज्योति

1.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर:

1. कुडकी 2. भोजराज 3. कृष्ण 4. खेवनहार

5. राणा विक्रमजीत सिंह 6. राम 7. जोगी

1.7 सारांश :

1. हिंदी साहित्य के भक्तिकाल में कृष्णभक्त कवयित्री के रूप में मीरा का स्थान अनन्य साधारण है। उनका जन्म राजस्थान के राज परिवार में हुआ। वैष्णव भक्ति के संस्कार बचपन से हूए थे। विवाह के कुछ वर्ष बाद पति की मृत्यु हुई। तब से मीरा ने सारे सांसरिक बंधनों का त्यागकर कृष्ण भजन- कीर्तन में लीन हो गई। उनके नाम पर अनेक रचनाएँ मिलती है। उनकी मीराबाई की पदावली 'हिंदी साहित्य में प्रसिध्द है।' उन्हीने नाम महिमा और सद्गुरू महिमा का वर्णन किया।
2. मीरा के पदों में कृष्ण प्रेम, कृष्ण भक्ति और कृष्ण विरह ही मुख्य विषय रहा है। उनमें भी विरह अनुभूति तीव्र रूप से व्यक्त हो गयी है। इस कारण उन्हें 'दरद दिवानी' या प्रेम दिवानी कहा जाता है।
3. मीरा ने कृष्ण भक्ति के लोकलाज और कुल मर्यादा को त्यागकर उनकी दासी बनकर रह गयी थी। उनके पदों में समर्पण भाव अपने आराध्य के प्रति अनन्य निष्ठा आदि का मार्मिक चित्रण हुआ है।

1.8 स्वाध्याय:

अ. दीर्घोत्तरी प्रश्न :

1. मीराबाई के पदों के माध्यम से भक्ति भावना का परिचय दीजिए।
2. मीरा की प्रेमभावना और नाम महिमा को चित्रित कीजिए।
3. मीरा के पदों की मीमांसा कीजिए।

आ. लघुत्तरी प्रश्न :

1. मीरा ने राम–रत्न रूपी धन का वर्णन किस प्रकार किया है?
2. मीरा ने अपने पदों में लोकलाज और कुलमर्यादा त्याग का वर्णन कीजिए।
3. प्रस्तुत पदों के माध्यम से मीरा की प्रेम साधना पर प्रकाश डालिए।

1.9 क्षेत्रीय कार्य :

1. मीराबाई के विचारों के समकालीन संत कवयित्री बहिणाबाई चौधरी के साथ तुलना कीजिए।
2. महाराष्ट्र के संत कवयित्री की जानकारी प्राप्त कर हिंदी में लिखने का प्रयास कीजिए।

1.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए :

1. मीराबाई की पदावली – लेखक पं परशुराम चतुर्वेदी, हिंदी साहित्य सम्मेलन प्रयाग।

❑❑❑

इकाई 2
मध्यकालीन काव्य

4. रहीम के दोहे, 5. बिहारी के दोहे, 6.भूषण के पद

अनुक्रम

2.1 उद्देश्य

2.2 प्रस्तावना

2.3 विषय विवरण

- 2.3.1 रहीम का जीवन परिचय
- 2.3.2 रहीम के दोहों का सामान्य परिचय
- 2.3.3 रहीम के दोहों का भावार्थ
- 2.3.4 बिहारी का जीवन परिचय
- 2.3.5 बिहारी के दोहों का सामान्य परिचय
- 2.3.6 बिहारी के दोहों का भावार्थ
- 2.3.7 भूषण का जीवन परिचय
- 2.3.8 भूषण की रचना
- 2.3.9 भूषण के पदों का भावार्थ

2.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

2.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

2.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

2.7 सारांश

2.8 स्वाध्याय

2.9 क्षेत्रीय कार्य

2.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

2.1 उद्देश्य :

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप :

1) रहीम के जीवन वृत्त का संक्षेप में परिचय प्राप्त करेंगे।

2) रहीम के व्यक्तित्त्व से परिचित हो जायेंगे।

3) रहीम के भक्ति, नीति और दर्शन संबंधी विचारों को समझ पाएंगे।

4) कविवर बिहारी के काव्य-कला से परिचित होंगे।

5) कविवर बिहारी के दोहों में प्रयुक्त शृंगार भावना, कला-सौंदर्य, माधुर्य, बहुज्ञता से परिचित होंगे।

6) भूषण के व्यक्तित्त्व से परिचित होंगे।

7) भूषण के पदों से छत्रपति शिवाजी की वीरता, प्रताप आदि से परिचित होंगे।

2.2 प्रस्तावना:

किसी भी साहित्यकार के साहित्य का अध्ययन करने के पूर्व उसके जीवन वृत्तांत एवं व्यक्तित्त्व से परिचित होना नितांत अनिवार्य होता है क्योंकि उसके व्यक्तित्त्व के तमाम रंग उसके कृतित्त्व में झलकते नजर आते है उसका साहित्य उसकी स्वनुभूतियों का निचोड होता है।

रहीम का पूरा नाम अब्दुलरहीम खानखाना था। ये मुगल सम्राट अकबर के सेनापति और अभिभावक बैरमखाँ के पुत्र थे। इनका जन्म सन् 1556 ई.में लाहौर में हुआ। रहीम जब चार वर्ष के थे तब इनके पिता को हज जाते समय मार्ग में ही मार दिया गया। रहीम के भविष्य को असुरक्षित देखकर सम्राट अकबर ने बालक रहीम तथा उनकी माता को आगरा बुला लिया और उन्हें अपने संरक्षण में ले लिया। रहीम की शिक्षा का उचित प्रबंध भी किया गया। जन्मजात प्रतिभा, परिश्रमी वृत्ति तथा जिज्ञासु प्रकृति के कारण रहीम ने अल्प समय में ही अरबी,फारसी, तुर्की, संस्कृत एवं हिंदी आदि भाषाओं पर अधिकार कर लिया था। रहीम की इसी उपलब्धि के कारण अकबर ने उन्हें 'मिर्जाखाँ' की उपाधि से विभूषित किया था।

रहीम एक साथ कलम और तलवार के धनी थे। वे अकबरी दरबार के नौ रत्नों में से एक थे। वे कुशल सेनापति थे। अकबर ने उसके पराक्रम-कौशल पर मुग्ध होकर उन्हें अपर धनराशि, सुभेदारी एवं जागीरे देकर संपन्न किया। रहीम का पारिवारिक जीवन भी सूखी था। माहेबानू जैसी सुंदर एवं सुशील पत्नी थी। रहीम का व्यक्तित्त्व सर्वतोमुखी प्रतिभा संपन्न था। वे अपने युग के अपूर्व सेनापति, प्रशासक, दानवीर, बहुभाषाविद, कलापारखी, श्रेष्ठ कवि, विद्वान एवं कवि थे। स्वभाव से सरल,सहृदय और समझदार थे। जीवन की गहरी संवेदना उनके पास थी और विशाल अनुभव भी था।

हिंदी साहित्य के इतिहास में संवत् 1700 से संवत् 1900 का कालखंड रीतिकाल से जाना जाता है। कविवर बिहारी रीतिकाल के एक प्रमुख कवि हैं। हिंदी साहित्य के सर्वश्रेष्ठ श्रृंगारी कवियों में बिहारी का नाम

शीर्षस्थ है। 'बिहारी सतसई' यह उनकी अक्षयकीर्ति का आधार ग्रंथ है। इसमें उनके 700 से अधिक दोहों का संकलन है, जिसका प्रमुख प्रतिपाद्य शृंगार रस है। चुनिंदा शब्दों में बड़े से बड़े आशय को सरलता से समझाना उनके दोहों की विशेषता रही है। भाव एवं आशय की दृष्टि से देखा जाए तो कविवर बिहारी के दोहों में 'गागर में सागर' भरने की क्षमता है। इनके दोहों में भाव प्रवणता, शृंगार की विशुद्ध झाँकियाँ एवं भाषा की सामासिक ताकत देखते ही बनती हैं। दोहे जैसे कविता के छोटे से छंद प्रकार में कविवर बिहारी जी ने अपने अद्‌भूत काव्य प्रतिभा सौंदर्य से काव्य रसिकों को मंत्रमुग्ध किया है। बिहारी जी के अक्षयकीर्ति का आधार ग्रंथ 'बिहारी सतसई' की प्रशंसा करते हुए हिंदी कविता के आलोचकों ने कहा है-''सतसैया के दोहरे ज्यों नावक के तीर, देखन में छोटे लगें घाव करें गंभीर।'' अत: कविवर बिहारी जी के जीवन का संक्षिप्त परिचय जानना जरूरी है।

भूषण का जन्म 1613 ई. और मृत्यु 1715 में है। भूषण रीतिकाल के अंतिम चरण के कवि है। उन्हे वीर कवि कहा जाता है। रीतिकालीन अधिकांश कवियों ने राजदरबारों में रहकर शृंगार प्रधान कविता द्वारा अपने आश्रयदाता राजाओं की कामुक प्रवृत्ति को उभारा। ऐसे घोर शृंगारी काव्य के कल में कवि भूषण ने जातीय गौरव को परखा और उसका गान कर सुप्त जनता को जगाने का स्तुत्य प्रयास किया।

भूषण ने कुल छ: ग्रंथ लिखे। आज (1) शिवराज भूषण (2) शिवा बावनी (3) छत्रसाल दशक ये तीन ग्रंथ उपलब्ध है। भूषण की भाषा ब्रजभाषा है उन्होंने युद्धों का वर्णन सजीवता से किया है। उनकी कविता वीर-रस के कारण ओजपूर्ण है। उन्होंने राजा शिवाजी की वीरता, उनका कार्य, उनका यश आदि का वर्णन अत्यंत प्रभावशाली ढंग से किया है। भूषण ने शत्रूओं पर शिवाजी के धाक एवं आतंक का वर्णन अधिक मात्रा में किया है।

2.3 विषय विवरण :

2.3.1 रहीम का जीवन परिचय

मुगल सम्राट अकबर के नवरत्न में से एक रत्न के रूप में रहीम विशेष ख्याति प्राप्त करने में समर्थ हुए। मुगल सम्राट और सामान्तों के बीच यदि वे अपने शासकीय प्रतिभा और शौर्यपूर्ण कार्यकलापों से प्रिय हुए तो जनसाधारण में स्वरचित नितिपूर्ण दोहों और चुटीले बरवों के कारण लोकप्रिय हुए। रहीम का जन्म 17 दिसंबर, 1556 ई. को हुआ। रहीम के पिता सफल राजनीतिज्ञ और पटू सेनानायक तो थे ही, साथ ही कलाप्रेमी और कवि भी थे। रहीम को कलाप्रियता, शौर्य, पराक्रम, दूरदर्शिता आदि गुण अपने पिता से पैत्तृक संपत्ति के रूप में मिले थे।

रहीम ने अरबी, फारसी, तुर्की और संस्कृत भाषा- साहित्य का गंभीर अध्ययन किया था। रहीम ने हिंदुओं के धर्मग्रंथों का परायण भी भलि भाँति किया था। हिंदी के वे ऐसे प्रथम मुसलमान कवि थे जिन्हें हिंदू धर्म और संस्कृति का एक हिंदू की भाँति ज्ञान था।

रहीम ने प्रेम, सौंदर्य, नायिका भेद आदि पर शृंगारिक कविताओं की रचना भी खूब की है, लेकिन नीतिकाव्य के प्रणेता के रूप में उनका हिंदी साहित्य में विशेष मान है। रहीम हिंदी के नीतिकार कवियों में सबसे अधिक लोकप्रिय और अग्रणी है। हिंदी की सतसई परंपरा में सबसे अधिक लोकप्रिय और श्रेष्ठ रचना ''बिहारी सतसई'' है। उसके बाद ''रहीम सतसई'' का स्थान अग्रणी है। 'रहीम सतसई' को हिंदी सतसई साहित्य की सर्व प्रथम कृति मानी जाती है।

2.3.2 रहीम की रचनाएँ

(1) दोहावली अथवा सतसई (2) नगर शोभा (3) बरवै नायिका भेद (4) वरवै (5) मदनाष्टक (6) शृंगार सोरठा (7) रहीम काव्य (8) खेट कौतुकम (9) फुटकर छंद (10) रास पंचाध्यायी

2.3.3 रहीम का नीतिकाव्य

रहीम ने प्रेम, सौंदर्य, नायिका भेद आदि पर शृंगारिक कविताओं की रचना भी खूब की है, लेकिन नीतिकाव्य के प्रणेता के रूप में उनका हिंदी साहित्य में विशेष माना है। उनकी लोकप्रियता का कारण है उनके नीतिकाव्य का सरस, सरल और प्रभावोत्पादक होना। जीवन की गहरी संवेदना, विशाल अनुभव उनके पास था। उनका नीति-कथन उनकी स्वनुभूतियों का निचोड है जो मानव जीवन के विविध पक्षों का उद्‌घाटन करता है। नीतिकाव्य के सभी प्रमुख गुणों का समावेश अत्यंत सुंदर रूप में हुआ है। अत: रहीम हिंदी के नीतिकार कवियों में सबसे अधिक लोकप्रिय और अग्रणी है।

2.3.4 रहीम की सतसई

हिंदी की सतसई परंपरा में सबसे अधिक लोकप्रिय और श्रेष्ठ रचना 'रहीम सतसई'। रहीम एक ऐसे कवि है जिन्होंने जीवन के विविध अनुभवों और उपदेशों को इतने सुंदर, सरल और मार्मिक ढंग से दोहों में रखा कि, साधारण से-साधारण व्यक्ति उससे प्रभावित हुआ, इसलिए तो 'रहीम सतसई' सामान्य जनता में सर्वाधिक लोकप्रिय है। 'रहीम सतसई' भाषा की दृष्टि से भी अप्रतिम है। उसमे भाषा का जैसा सीधा और सरल रूप मिलता है वैसा अन्य सतसईयों में दुर्लभ है।

2.3.5 रहीम के दोहे

रहीम हमें अच्छी जिंदगी जीने की बडी से बडी सीख दोहों के माध्यम बडी कुशलता से देते है। रहीम ने विविध विषयों पर दोहे लिखे है। रहीम के दोहो में उच्च कोटी की भक्ति-भावना के दर्शन होते है। उनकी भक्ति भावना में तन्मयता, समर्पण, शरणागति तथा भावात्मक तरलता है। रहीम कहते है कि 'विष्णु भगवान के चरणों से निकलनेवाली तथा शिव जी के सिर पर मालती की माला के समान सुशोभित होनेवाली गंगा, तुम्हारी महिमा से भक्तजन मरने के बाद विष्णु और शिव का पद प्राप्त कर लेते है।' रहीम की भक्ति भावना में आराध्य के प्रति वैसी ही अनन्यता एवं विश्वासमयी आस्था है।

2.3.6 रहीम के दोहों का भावार्थ

रहीम ने अपने दोहो में ऐसे जीवनोपयोगी तथ्य बताए है। उनका जीवन का निरीक्षण बडा गहरा था और इसीसे कई अमूल्य बातें बताई है। हमे जीवन में प्रेम के संबंध बनाए रखने के लिए कहा है। यदि हम अपने व्यवहार से, कटू वचन से प्रेम में व्याघात उत्पन्न नही करना चाहिए अन्यथा हमारे संबधों में आत्मीयता नहीं रहती।

1. रहिमन धागा प्रेम का, मत तोरो चटकाय।

   टूटे पे फिर ना जुरे, जुरे गाँठ परी जाय

अर्थ : रहीम कहते हैं कि प्रेम का नाता नाज़ुक होता है। इसे झटका देकर तोडना उचित नहीं होता। यदि यह प्रेम का धागा एक बार टूट जाता है तो फिर इसे मिलाना कठिन होता है और यदि मिल भी जाए तो टूटे हुए धागों के बीच में गाँठ पड जाती है।

2. रहिमन चुप हो बैठीये, देखि दिनन के फेर

   जब नीके दिन आई है, बनत न लगीहै देर

अर्थ : जब बुरे दिन आए हो तो चुप ही बैठना चाहिए, क्योंकि जब अच्छे दिन आते है तब बात बनते देर नहीं लगती रहीम ने आपत्ति और संपत्ति दोनों की पराकाष्ठा झेली थी। दोनों में लोगों के बदलते व्यवहार को परखा था। अत: उपर्युक्त दोहा उनकी विपत्ति काल की मानसिक अवस्था का द्योतक है।

3. रहिमन देखि बडेन को, लघु न दीजिए डारि।

   जहां काम आवे सुई, कहा करे तरवारि

अर्थ : बडों को देखकर छोटों को भगा नहीं देना चाहिए। क्योंकि जहां छोटे का काम होता है वहां बडा कुछ नहीं कर सकता। जैसे कि सुई के काम को तलवार नहीं कर सकती।

4. रहिमन अंसुवा नयन ढरि, जिय दुःख प्रगट करेइ,

   जाहि निकारौ गेह ते, कस न भेद कहि देइ

अर्थ : रहीम कहते हैं की आंसू नयनों से बहकर मन का दुःख प्रकट कर देते हैं। सत्य ही है कि जिसे घर से निकाला जाएगा वह घर का भेद दूसरों से कह ही देगा।

5. जैसी परे सो सहि रहे, कहि रहीम यह देह

   धरती ही पर परत है, सीत घाम औ मेह

अर्थ : रहीम कहते हैं कि जैसी इस देह पर पडती है सहन करनी चाहिए, क्योंकि इस धरती पर ही सर्दी, गर्मी और वर्षा पडती है। अर्थात् जैसे धरती शीत, धूप और वर्षा सहन करती है, उसी प्रकार शरीर को सुख-दुःख सहन करना चाहिए

6. बडे बडाई ना करै, बडो न बोलै बोल।

रहिमन हीरा कब कहै, लाख टका मेरो मोल।

अर्थ : रहीम कहते है कि जिनमें बडप्पन होता है, वे अपनी बडी बडाई कभी नहीं करते। जैसे हीरा कितना भी अमूल्य क्यो न हो, कभी अपने मुँह से अपनी बडाई नहीं करता इस दोहे के माध्यम से यह चित्रित करने का प्रयास किया है कि जो लोग सच्चे अर्थ में बडे होते है, वे अपने बडप्पन का ढींढोरा नहीं पीटते, लोग स्वयं उनका मूल्य जानकर उनका बडप्पन स्वीकार करते हैं।

7. दोनों रहिमन एक से, जों लों बोलत नाहि।

जान परत हैं काक पिक, रितु बसंत के माहि

अर्थ : कौआ और कोयल रंग में एक समान होते हैं। जब तक ये बोलते नहीं तब तक इनकी पहचान नहीं हो पाती। लेकिन जब वसंत ऋतु आती है तो कोयल की मधुर आवाज से दोनों का अंतर स्पष्ट हो जाता है

8. समय पाय फल होत है, समय पाय झरी जात।

सदा रहे नहि एक सी, का रहीम पछितात।

अर्थ : रहीम कहते हैं कि उपयुक्त समय आने पर वृक्ष में फल लगता है। झडने का समय आने पर वह झड जाता है। सदा किसी की अवस्था एक जैसी नहीं रहती, इसलिए दुःख के समय पछताना व्यर्थ है।

9. रूठे सुजन मनाइए, जो रूठे सौ बार,

रहिमन फिरि फिरी पोइए, टूटे मुक्ता हार

अर्थ : यदि आपका प्रिय सौ बार भी रूठे, तो भी रूठे हुए प्रिय को मनाना चाहिए, क्योंकि यदि मोतियों की माला टूट जाए तो उन मोतियों को बार बार धागे में पिरो लेना चाहिए।

10. निज कर क्रिया रहीम कहि सीधी भावी के हाथ

पांसे अपने हाथ में दांव न अपने हाथ

अर्थ : रहीम कहते हैं कि अपने हाथ में तो केवल कर्म करना ही होता है सिद्धी तो भाग्य से ही मिलती है जैसे चौपड खेलते समय पांसे तो अपने हाथ में रहते हैं पर दांव क्या अएगा यह अपने हाथ में नहीं होता।

'रहीम सतसई' में जीवन के विविध और दीर्घ अनुभवों और गहरी संवेदना के प्रमाण मिलते हैं। रहीम अन्य सतसईकारों की भाँति केवल कल्पना के संसार में विचरण करने वाले नहीं थे, अपितु जीवन की

यथार्थता से उनका अत्यंत निकट का परिचय था। स्वानुभूति के इसी प्रकाशन के कारण उनके दोहे साधारण जनता के हृदय पर भी अपना पूर्ण प्रभाव डालने में सफल हुए है।

इस प्रकार स्पष्ट ही कहा जा सकता है कि 'रहीम सतसई' का हिंदी की सतसई परंपरा में विशिष्ट और महत्त्वपूर्ण स्थान है और सबसे अधिक लोकप्रिय और प्रथम सतसईकार होने के नाते रहीम हिंदी साहित्य में गौरवशील पद पर प्रतिष्ठित है।

2.3.7 बिहारी का जीवन–परिचय :

हिंदी के रीतिकालीन प्रमुख श्रृंगारी कवि बिहारी का जन्म संवत् 1652 (सन् 1595) में ग्वालियर राज्य में स्थित बसुआ गोविंदपुर गाँव में माथुर चौबे ब्राह्मण परिवार में हुआ। इनके पिताजी का नाम केशवराय था। बिहारी जी के पिताजी केशवराय धर्मपरायण एवं काव्यप्रेमी व्यक्ति थे। वे बचपन में अपने पिताजी के साथ ओरछा चले गए थे जहाँ पर संत–महात्माओं के सत्संग से बालक बिहारी प्रभावित हुए। उन्हें संत महात्माओं के सत्संग, भजन, कीर्तन में विशेष रूचि निर्माण हुई और वे ओरछा के प्रसिद्ध संत और निम्बार्क संप्रदाय के महंत श्री नरहरिदास के शिष्य हो गए। गुरू की कृपा से इनमें काव्य–प्रतिभा जागृत हुई। पिताजी के काव्यप्रेम, गुरू के सत्संग एवं उनके पांडित्य का बिहारी पर बेहद प्रभाव पड़ा। ओरछा में ही बिहारी ने संस्कृत, प्राकृत भाषाओं का गहरा अध्ययन किया और जिससे उनकी काव्य–कला निखरने लगी। वे थोड़े ही दिनों में हिंदी साहित्य के विद्वान बने और ब्रजभाषा में कविताएँ लिखने लगे। इनका विवाह मथुरा में हुआ और वे युवावस्था में कुछ समय तक अपने ससुराल में ही रहकर साहित्य साधना में लगे रहे।

कालांतर में कवि बिहारी ओरछा से वृंदावन चले गए और वहाँ भगवान श्रीकृष्ण की पावन ब्रजभूमि से अत्यधिक प्रभावित होकर साहित्य सृजन के लिए प्रेरणा ग्रहण की। दोहा जैसे मुक्तक छंद में बिहारी जी ने लोक-व्यवहार के अनुभवों को कविताओं में अभिव्यक्त किया। दिल्ली के सम्राट शहाजहाँ ने बिहारी की कोमलकांत कविता को सुनकर उन्हें पुरस्कृत किया। उनके तत्कालीन प्रसिद्ध कवि रहीम के साथ उनकी आगरा में मुलाकात हुई। बिहारी की काव्य प्रतिभा और पांडित्य को देखकर रहीम ने उनकी प्रशंसा की और उन्हें पुरस्कृत भी किया। वे कुछ समय आगरा में रहे और उसके बाद जयपुर के मिर्जा राजा जयसिंह ने उनकी कविता से प्रसन्न होकर राजा जयसिंह ने उन्हें वार्षिक वृत्ति शुरू की। एक दिन वार्षिक वृत्ति लाने गए बिहारी को जानकारी मिली की राजा जयसिंह अपना राज कर्तव्य भूलकर एक षोडश वर्ष की कन्या के प्रेमपाश में बँध गए हैं। तब उन्होंने सेवक के हाथों एक दोहा लिखकर राजा को भेज दिया– ''नहिं परागु नहिं मधुर मधु, नहिं विकास इहिं काल, अली कली ही सों बिंध्यौ, आगे कौन हवाल।'' इस दोहे को पढते ही राजा की आँखे खुल गई और वे पुन: अपने कर्तव्य पथ पर लौट आए। इस दोहे को पढकर राजा इतने प्रसन्न हुए कि उन्होंने बिहारी को अपने दरबार में स्थान दिया और उन्हें उनके एक दोहे के लिए एक अशर्फी (स्वर्ण मुद्रा) प्रदान की जाने लगी। उन्होंने अपने जीवन काल में लिखे दोहों का संकलन 'बिहारी सतसई' नाम से प्रसिद्ध है जिसमें 700 से अधिक दोहें संकलित हैं। उनकी पत्नी की मृत्यु के बाद विरहदग्ध बिहारी भक्ति और वैराग्य की ओर बढे। संवत् 1720 (सन् 1663 ई.) में उनकी मृत्यु हुई।

बिहारी का रचना संसार :

कवि बिहारी के अक्षयकीर्ति का एकमात्र आधार उनकी बहुचर्चित कृति 'बिहारी सतसई' है। बिहारी पर प्राकृत भाषा के हाल कवि (पाँचवी शती) 'गाह्य सतसई' (गाथा सप्तशती) का प्रभाव था। इसकारण उन्होंने 'बिहारी सतसई' का निर्माण किया। इसमें करीब 700 से अधिक दोहों का संकलन किया गया है। बिहारी जी के बाद इसी परंपरा में 'गाथा सप्तशती', 'आर्या सप्त शती', 'अमरूकशतक' का प्रभाव दिखाई देता है। लेकिन 'बिहारी सतसई' की आभा के सामने आज तक कोई मुक्तक काव्य टिक नहीं पाया है। यह ग्रंथ साहित्यिक ब्रजभाषा में लिखा गया है। 'बिहारी सतसई' को शृंगार, भक्ति और नीति की त्रिवेणी ग्रंथ कहा जाता है। 'बिहारी-सतसई' पर हिंदी एवं विदेशी आलोचकों ने गहराई से समीक्षाएं लिखी है, जिसके कारण उसकी लोकप्रियता निरंतर बढती रही है। डॉ. ग्रियर्सन के अनुसार यूरोप में 'बिहार-सतसई' के समकक्ष कोई रचना नहीं है।

बिहारी के काव्य की विशेषताएँ :

1) 'बिहारी सतसई' में संकलित अधिकांश दोहे नायक-नायिका प्रधान है। इसमें शृंगार रस प्रमुख है और शृंगार के संयोग और वियोग पक्ष की मार्मिक अभिव्यक्ति हुई है।

2) 'बिहारी सतसई' एक मुक्तक रचना है और इसमें दोहा छंद का प्रयोग किया है।

3) बिहारी के काव्य में 'गागर में सागर' समाने की ताकत है अर्थात् दोहों की मात्र दो पँक्तियों में प्रभावपूर्ण आशय होता है।

4) बिहारी के दोहों में समसामायिकता और बहुज्ञता का परिचय मिलता है।

5) बिहारी के दोहे भाव-व्यंजना और शब्द विन्यास की दृष्टि से अद्‌भूत हैं।

6) बिहारी के दोहों की भाषा साहित्यिक ब्रज और अलंकार प्रधान होती है। साथ ही उनकी कल्पना शक्ति अद्‌भूत है।

2.3.8 बिहारी के दोहों का सामन्य–परिचय:

हिंदी साहित्य के रीतिकाल में कवि बिहारीलाल सर्वाधिक लोकप्रिय और प्रसिद्ध कवि रहे हैं। उनकी अक्षय कीर्ति का आधार उनकी एकमात्र रचना 'बिहारी सतसई' है। कहा जाता है हिंदी में तुलसीदास कृत 'रामचरितमानस' ग्रंथ के बाद यदि किसी को सबसे अधिक प्रसिद्धी मिली है तो वह ग्रंथ 'बिहारी सतसई' है। इसमें बिहारी ने मुक्तक छंद में अनेक विषयों पर 700 से अधिक एक से बढकर एक सरस दोहों की रचना की है। बिहारी मूलत: शृंगारी कवि माने जाते हैं लेकिन उनकी सतसई में भक्ति, नीति विषयक बहुत से दोहे संकलित हैं। प्रस्तुत पाठ्यक्रम में बिहारी के बहुचर्चित और रसिकों द्वारा पसंद किए गए चुनिंदा दस दोहों का यहाँ अध्ययन जाएगा। बिहारी जी के इन दोहों के विषय क्रमश: प्रेम भावना की महानता, नायिका का सौंदर्य, प्रेम की गहनता और अरसिकों की संकीर्णता, स्वार्थ का त्याग और कर्तव्य परायणता, भौतिक

जगत् का लालच और नशा, भगवत् प्रेम पाने की चुतराई, मन की पावनता के लिए भगवान श्रीकृष्ण की भक्ति, भगवान श्रीकृष्ण की भक्ति में नायिका के मन की विवशता और ग्रंथ की सफलता के लिए अपने आराध्य राधिका की स्तुति और वंदना आदि हैं।

पहले दोहे में बिहारी जी ने प्रेम की अनूठी पद्धति और उसके विरोधियों की रीति का वर्णन किया है। दूसरे दोहे में उन्होंने नायिका अर्थात् प्रेमिका की क्षण-क्षण में बदलती छवि का वर्णन किया है। तिसरे दोहे में प्रेम की गहराई और प्रेम के विरोधी की संकीर्ण मानसिकता का वर्णन किया है। चौथा दोहा कवि बिहारी जी ने मिर्झाराजा जयसिंग को अपना कर्तव्य धर्म याद दिलाने के लिए लिखा था। पाँचवे दोहे में बिहारी जी ने कनक के दो अर्थ बताए हुए धूतरा और सोने की मादकता का मनुष्य पर पड़ने वाले प्रभाव को प्रतीकात्मक ढंग से प्रस्तुत किया है। छठे दोहे में बिहारी जी ने नायिका के शरीर की खूबसूरती का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन किया है। सातवा दोहा ईश्वर भक्ति के संदर्भ में है। इसमें बिहारी जी अपने आराध्य भगवान श्रीकृष्ण जी उपेक्षा से आहत है क्योंकि उनकी दीनता भरी पुकार को वे नहीं सुन रहे हैं। आठवें दोहे में कविवर बिहारी जी ने भगवान श्रीकृष्ण के भक्तिप्रेम की महानता का गुणगान किया है। नौवें दोहे में कविवर बिहारीलाल जी ने श्रीकृष्ण के प्रति प्रेम का हृदयस्पर्शी वर्णन किया है जिसमें भगवत् प्रेम में विवश नायिका अपनी विवशता का बयान अपनी सखी को देती है। दसवाँ दोहा 'बिहारी सतसई' के 'भक्ति' शीर्षक में संकलित है जिसमें बिहारी जी ने ग्रंथ के प्रारंभ में देवी राधा जी की वंदना की है। अपने ग्रंथ के सफल समापन के लिए राधाजी की स्तुति की है। इसमें उनके रंगों के ज्ञान का भी परिचय मिलता है। अत: स्पष्ट है कि बिहारी एक बहुज्ञ और प्रतिभावान कवि थे। उनके दोहों में सभी विषयों के व्यावहारिक एवं बहुज्ञता से ओत-प्रोत भरे मार्मिक उदाहरण दृष्टिगत होते हैं।

1.3.3 बिहारी के दोहों का भावार्थ:

पद क्रमांक – 1

''दृग उरझत, टूटत कुटुम, जुरत चतुर-चित्त प्रीति।
परिति गांठि दुरजन-हियै, दई नई यह रीति।।''

भावार्थ :

प्रस्तुत दोहों में कवि बिहारी कहते हैं, प्रेम की पद्धति बहुत ही अनूठी होती है। प्रेम में प्रेमी-प्रमिका के नेत्र तो उलझते हैं लेकिन उनके परिवार (कुटुंब) टूटते हैं। रीति बहुत ही नई है कि इसमें प्रेमियों के मन तो एक-दूसरे से जुड़ जाते हैं, लेकिन दुर्जनों के हृदय में इससे गाँठ पड़ती है। हे ईश्वर! प्रेम की यह कैसी अनोखी रीति है। अर्थात् सृष्टि का नियम है कि जो उलझेगा वह टूटेगा और जो टूटेगा, वही जोड़ा जाता है। जो जोड़ा जायगा, उसीमें गाँठ पड़ती है। लेकिन प्रेम में यह नियम उल्टा है इसमें प्रेमी-प्रेमिका के नेत्र उलझते हैं लेकिन वे नहीं, तो उनके परिवार टूटते हैं। और प्रेमियों के मन तो एक-दूसरे से जुड़कर एक होते हैं।

लेकिन इस प्रेम से उनके दुश्मनों के दिल में गाँठ पड़ जाती है। बिहारी का यह एक सर्वोत्तम दोहा माना जाता है।

पद क्रमांक – 2

''लिखन बैठि जाकी सबी गहि गहि गरब गरूर।
भए न केते जगत क, चतुर चितेरे कूर।।''

भावार्थ :

प्रस्तुत दोहे में कविवर बिहारी जी ने नायिका अर्थात् प्रेमिका की क्षण–क्षण में बदलती छवि का वर्णन किया है। बिहारी कहते हैं कि इस अलौकिक सुंदरी नायिका के अनुपम सौंदर्य छवि का चित्र बनाने के लिए, न जाने कितने अहंकारी एवं गर्विले चित्रकार आए, लेकिन सब मूर्ख और असफल साबित हो गए। अर्थात् इस अनुपम सौंदर्यवती नायिका की छवि पल–पल में बदलती रहती है। अत: चित्रकार जब चित्र बनाकर उसके साथ मिलान करके देखते हैं तो उन्हें हर पल भिन्नता दिखाई देती है। इस कारण उनका महान चित्रकार होने का गर्व और अहंकार चूर–चूर हो जाता है।

पद क्रमांक – 3

''गिरि तैं ऊंचे रसिक-मन बूढे जहाँ हजारू।
बहे सदा पसु नरनु कौ प्रेम-पयोधि पगारू।।''

भावार्थ :

प्रस्तुत दोहे में कवि बिहारी ने प्रेम की गहराई और प्रेम के विरोधी की संकीर्ण मानसिकता का वर्णन किया है। वे कहते हैं कि पर्वत से भी ऊंची रसिकता रखने वाले प्रेमी जन प्रेम के सागर में हजार बार डूबने के बाद भी उसकी थाह को ढूँढ नहीं पाए, वहीं नर–पशुओं अर्थात् अरसिक प्रवृत्ति के लोगों को वह प्रेम का सागर छोटी खाई के समान प्रतीत होता है। अर्थात् प्रेम जैसी पवित्र भावना का विरोध करनेवालों को कभी–भी प्रेम की गहराई समझ ही नहीं सकती। वह केवल संकीर्ण भावना से प्रेम और प्रेमी–जनों का विरोध करते रहते हैं।

पद क्रमांक – 4

''स्वारथु सुकृतु न, श्रमु वृथा, देखि विहंग विचारि।
बाज पराये पानि परि तू पछिनु न मारि।।''

भावार्थ :

प्रस्तुत दोहा कवि बिहारी जी ने मिर्झाराजा जयसिंग को अपना कर्तव्य धर्म याद दिलाने के लिए लिखा था। हिंदू राजा जयसिंह तत्कालीन समय में मुगल साम्राज्य के बादशहा औरंगजेब की ओर से हिंदू राजाओं

के खिलाफ युद्ध करते थे। यह बात बिहारी जी को अच्छी नहीं लगी और उन्होंने राजा जयसिंह को संबोधित करते हुए कहा, हे बाज! तू शिकारी के निर्देश पर अपनी ही जाति के अपने बंधु-बांधवों को मार रहा है। तू दूसरों के हाथ की कठपुतली बनकर अपनी जाति के पक्षियों का वध कर रहा है। अर्थात् कवि बिहारी ने राजा जयसिंह को बाज की उपमा देते हुए कहा था कि हे राजन, आप दूसरों के अहम की तुष्टि के लिए अपने ही पक्षियों अर्थात् हिंदू राजाओं को मत मारो। तुम अच्छे तरह से विचार कर लो कि इससे न तो तुम्हारा कोई स्वार्थ सिद्ध होता है, न यह शुभ कार्य है, तुम तो अपना श्रम ही व्यर्थ कर देते हो। कहा जाता है कि इस दोहे से मिर्झा राजा जयसिंह प्रभावित हुए और उन्होंने छत्रपति शिवाजी महाराज और मोगल बादशहा औरंगजेब के बीच संधि कराई थी।

पद क्रमांक – 5

''कनक कनक ते सौं गुनी मादकता अधिकाय।
इहिं खाएं बौराय नर, इहिं पाएं बौराय।।''

भावार्थ :

प्रस्तुत दोहे में बिहारी जी ने कनक के दो अर्थ बताए हैं, एक है कनक यानि सोना और दूसरा कनक यानि धतूरा है। बिहारी कहते हैं, सोना कनक यानि धतूरे से भी सौ गुना अधिक मादक अर्थात् नशीला होता है। क्योंकि धतूरे का सेवन करने से नशा होता है, जबकि सोने को पा लेने मात्र से नशा हो जाता है। धतूरे का नशा तो एक बार खाकर थोड़ी देर बाद उतर जाता है, लेकिन सोने का जो नशा चढता है वह आसानी से नहीं उतरता। धतूरा एक मादक पदार्थ होता है। कनक यानि सोने से अधिक नशीला कनक यानि धतूरा है। कनक यानि धतूरे को खाने के बाद मनुष्य पागल होता है लेकिन कनक यानि सोने को पाकर भी मनुष्य पागल हो जाता है। धन का नशा इतना नशीला होता है, कि उसके पीछे मनुष्य पागल हो जाता है, और धन पाकर भी उसकी बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है।

पद क्रमांक – 6

''अंग-अंग नग जगमगत, दीपसिखा सी देह।
दिया बढाए हू रहै, बड़ौ उज्यारौ गेह।।''

भावार्थ :

प्रस्तुत दोहे में बिहारी जी ने नायिका के शरीर की खूबसूरती का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन किया है। वे कहते हैं कि नायिका इतनी सुंदर है कि उसके शरीर के प्रत्येक अंग रत्नों की तरह चमक रहे हैं। उसका शरीर दीपक की शिखा (चोटी) की तरह झिलमिलाता है। इसलिए जब घर में दीया बुझा जाने के बाद भी घर में रोशनी बनी रहती है। अथार्त नायिका इतनी सुंदर कांति की है कि उसकी सुंदरता से दीया बुझाने के बाद भी घर में उजियाला बना रहता है।

पद क्रमांक – 7

''कब कौ टेरतु दीन रट, होत न स्याम सहाइ।
तुमहूँ लागी जगत-गुरू, जग नाइक, जग बाइ।''

भावार्थ :

प्रस्तुत दोहा ईश्वर भक्ति के संदर्भ में है। इसमें बिहारी जी अपने आराध्य भगवान श्रीकृष्ण जी उपेक्षा से आहत है। उनकी दीनता भरी पुकार को वे नहीं सुन रहे हैं। वे कहते हैं, हे प्रभु! मैं कब से दीनता भरी पुकार से आपको अपनी सहायता के लिए पुकार रहा हूँ। लेकिन आप है कि मेरी दीन–पुकार को अनसुनी किए जा रहे हैं। हे श्याम! हे जगत् के पूज्य! हे जगन्नायक! कहीं ऐसा तो नहीं कि आपको भी सांसारिक गुरुओं और नायकों के समान दोनों की अपेक्षा करना आरंभ कर दिया हो। यदि ऐसा न होता तो मेरी करूण पुकार सुनकर मेरी सहायता करने अवश्य आते। स्पष्ट है कि कवि अपने इष्ट भगवान श्रीकृष्ण को द्रवित करने के लिए चतुराई भरे तर्कों का सहारा लिया है।

पद क्रमांक – 8

''या अनुरागी चित्त की, गति समुझे नहिं कोई।
ज्यौं-ज्यौं बूड़े स्याम रंग, त्यौं-त्यौं उज्जलु होइ।''

भावार्थ :

प्रस्तुत दोहे में कविवर बिहारी जी ने भगवान श्रीकृष्ण के भक्तिप्रेम की महानता का गुणगान किया है। कवि कहते हैं, भगवान श्रीकृष्ण से प्रेम करने वाले मेरे मन की दशा अत्यंत विचित्र है। इसकी दशा को कोई नहीं समझ सकता है, क्योंकि प्रत्येक वस्तु काले रंग में डूबने पर काली हो जाती है। श्रीकृष्ण भी श्याम वर्ण के हैं, किंतु कृष्ण के प्रेम में मग्न यह मेरा मन जैसे–जैसे श्याम रंग (कृष्ण की भक्ति, ध्यान आदि) में मग्न होता है वैसे–वैसे श्वेत (पावन) होता जाता है। इस तरह कवि बिहारी ने कृष्ण की भक्ति में तल्लीन होने से मन पवित्र होने की भक्ति भावना को सुंदर तरीके से अभिव्यक्त किया है।

पद क्रमांक – 9

''जसु अपजसु देखत नहीं देखत साँवल गात।
कहा करौं, लालच-भरे चपल नैन चलि जात।''

भावार्थ :

प्रस्तुत दोहे में बिहारी जी ने श्रीकृष्ण के भक्ति में रंगी नायिका की विवशता का सुंदर वर्णन किया है। नायिका अपनी सखी को अपने विवश प्रेम के संदर्भ में कहती है, हे सखी! मेरे ये चंचल नेत्र यश–अपयश या किसी की प्रशंसा अथवा निंदा की चिंता नहीं करते। वह यह नहीं देखते कि ऐसा करने से मेरी प्रशंसा

होगी या फिर निंदा होगी। ये तो बस श्याम-शरीर (श्रीकृष्ण) को ही देखते हैं अर्थात् उनको देखने के पश्चात् यश-अपयश की बात भूल जाते हैं। मैं इनका क्या करूँ, ये लालच में भरे हुए श्याम-शरीर को देखने के मोह में चंचल होकर उधर ही चले जाते हैं। स्पष्ट है कि इस दोहे में कविवर बिहारीलाल जी ने श्रीकृष्ण के प्रति प्रेम का हृदयस्पर्शी वर्णन किया है।

पद क्रमांक – 10

''मेरी भव-बाधा हरौ, राधा नागरि सोइ।
जां तन की झांई परै, स्यामु हरित-दुति होइ।''

भावार्थ :

प्रस्तुत दोहा 'बिहारी सतसई' के 'भक्ति' शीर्षक में संकलित है जिसमें बिहारी जी ने ग्रंथ के प्रारंभ में देवी राधा जी की वंदना की है। अपने ग्रंथ के सफल समापन के लिए राधा की स्तुति करते हुए कहते हैं, हे चतुर राधा जी! आप मेरी सांसारिक भव-बाधाओं, कष्टों को दूर कीजिए। मेरी सांसारिक बाधाओं को वही चतुर राधा दूर करेंगी जिनके गौरवर्ण शरीर की चमक पड़ने से श्रीकृष्ण भी फीकी कांतिवाले हो जाते हैं। इसका प्रतीक अर्थ यह है कि, हे राधिका जी, जिनके ज्ञानमय (गौर) शरीर की झलकमात्र से मन की श्यामलता (पाप) नष्ट हो जाती है। स्पष्ट है कि प्रस्तुत दोहे में मंगलाचरण के रूप में बिहारीलाल जी ने राधा की वंदना की है।

2.3.3.भूषण का जीवन परिचय

भूषण का जन्म ई.1613 में उत्तर प्रदेश के कानपुर जिले के घाटमपुर तहसील में तिकवापुर गाँव में हुआ। ये रत्नाकर त्रिपाठी के पुत्र थे। चित्रकूट के राजा हृदयराम के पुत्र रुद्र सुलंकी ने इन्हे भूषण की उपाधि से विभूषित किया था। ये कई राजाओं के यहाँ आश्रित रहे। पन्ना के महाराज छत्रसाल के यहाँ इनका बडा मन हुआ। ऐसा कहते है कि महाराज छत्रसाल ने इनकी पालखी में अपना कंधा लागाय था, जिस पर इन्होंने कहा था 'सिवा को सराहौ कि सराहौ छत्रसाल को'। इन्होने प्रमुख रूप से शिवाजी और छत्रसाल की प्रशंसा में ही लिखा है। भूषण रीतिकाल के कवि है परंतु उन्होंने वीररस में ही रचनाएँ की है। भूषण की कविताओं की भाषा ब्रज भाषा है परंतु उन्होंने अपनी रचनाओं में उर्दू, फारसी आदि के शब्दों का बहुतायत से प्रयोग किया है। जिस समय औरंगजेब के अत्याचारों से भारतीय संस्कृति खतरे में एवं संकट में पड गई थी, उस समय छत्रपति शिवाजी राजा ने वह कार्य किया जिसका राष्ट्रीय दृष्टि से बहुत अधिक महत्त्व है। भूषण के समय राजा शिवाजी को राष्ट्र रक्षक के रूप में देखा है। भूषण के समय मुसलमानों को विदेशी आक्रमणकारी, हिंदू-मंदिरों के एवं भारतीय संस्कृति के विध्वंसक शत्रु ही माना जाता था। ऐसी स्थिति में भूषण द्वारा दिया गया हिंदुत्त्व का संदेश, भारतीयता तथा राष्ट्रीयता का संदेश था, और इस दृष्टि से भूषण निश्चित रूप से राष्ट्रीय कवि थे। भूषण मुसलमानीं के विरोधी नही थे, बल्कि अन्यायी, अत्याचारी, भारतीय संस्कृति के शत्रु औरंगजेब के विरोधी थे, जो हिन्दुओं पर विभिन्न प्रकार के अत्याचार कर रहा था। बाबर,

हुमायूँ और अकबर ने अपनी मर्यादा का उल्लंघन नहीं किया था, इसलिए भूषण उन्हें आदर की दृष्टि से देखते है। वे जाति-द्वेष के शिकार नहीं थे, बल्कि एक सच्चे राष्ट्रभक्त थे।

2.3.4 भूषण की रचना

भूषण संस्कृत, हिंदी और फारसी के बडे विद्वान थे। भूषण के काव्य की मूल संवेदना वीर भावना और राष्ट्रीयता रही है। ब्रजभाषा कवि की मूलभाषा है। उसकी सोच और सफाई से वे पूर्णत: परिचित थे। भूषण की कविता में अधिकतर अरबी-फारसी का प्रयोग मिलता है। इसका कारण यह हो सकता है कि दक्खिन में मुसलमानों का राज्य फैला हुआ था और अरबी-फारसी का भी काफी प्रचलन था। वीर रस काव्य की एक तरह से आत्मा होने के कारण ओजयुक्त अभिव्यंजना कविता की प्रमुख विशेषता रही है।

भूषण ने वीर रस की निष्पत्ति के लिए भयानक, बीभत्स और रौद्र आदि सहायक रसों को भी यथास्थान प्रयुक्त किया है। रीतिकालीन शृंगार धारा से वे सर्वथा अछूते न रहे। वीर रस के प्रसंग में शृंगार रस के प्रयोग का अवसर भी जाने नही दिया। परंतु शृंगार रस की यह अभिव्यक्ति स्वंतंत्र रूप में न होकर सर्वत्र व्यंजनात्मक रही। उन्होंने अपने काव्य में वीर रस के अतिरिक्त किसी अन्य भाव का प्रमुख से चित्रण नहीं किया। भूषण ने जहाँ शुद्ध रस का चित्रण किया है, वे सभी स्थल अत्यंत ओजस्वी बन पडे है। ऐसे कविता में भाव, भाषा, शैली,वृत्ति आदि का इतना सुंदर समन्वय हुआ है कि विभावानुभाव से परिपुष्ट उत्साह मूलक वीर रस पाठकों को सहज ही मुग्ध कर देता है।

भूषण ने कुल छ:ग्रंथ लिखे परंतु उनमें से केवल तीन ही ग्रंथ (1) शिवराज भूषण (2) छत्रसाल दशक (3) शिवा बावनी उपलब्ध है। भूषण के नायक शिवाजी थे। शिवाजी का महिमा मंडन भूषण के काव्य में सर्वत्र दिखता है।

2.3.5 भूषण के पदों का भावार्थ

भूषण के काव्य में वीर भावना का चित्रण वास्तव में अद्वितीय है। भूषण का नायक अपने युग में ख्यात था, आज भी ख्यात है, साथ ही एक निश्चित धारणा उस नायक के प्रति भारतीय जनता में है। भूषण का वीर काव्य अपने युग को साकार करने वाला ही नहीं अपितु अपने युग की प्रगति कराने वाला स्तंभ है।

भूषण के वीर काव्य की सबसे बडी विशेषता यह है कि उसमें कल्पना और पुराण की तुलना में इतिहास से ही अधिक सहायता ली गई है। भूषण के काव्य का मूल आधार शुद्ध ऐतिहासिक है, यह वास्तव में शुद्ध वीर काव्य कहलाने का अधिकारी है। भूषण के काव्य में राष्ट्रीय भावना का चित्रण है। यथार्थ चित्रण के साथ भारतीय गौरव, मानव प्रतिष्ठा का भी चित्रण है, अत: यह एक शुद्ध राष्ट्रीय काव्य है और भूषण एक राष्ट्रीय कवि।

1) साजि चतुरंग सैन अंग में उमंग धरि
सरजा सिवाजी जंग जीतन चलत है
भूषण भनत नाद बिहद नगारन के

नदी-नद मद गैबरन के रलत है
ऐल-फैल खैल-भैल खलक में गैल गैल
गजन की ठैल पैल सैल ईसलत है
तारा सो तरनि धूरि-धारा में लगत जिमि
थारा पर पारा पारावार यों हलत है।।

संदर्भ : यह पद हिंदी साहित्य के रीतिकाल के वीरकाव्य परंपरा के श्रेष्ठ कवि भूषण द्वारा रचित शिवभूषण से संकलित किया गया है।

प्रसंग : इन पंक्तियों में कवि भूषण ने शिवाजी की चतुरंगिणी सेना का युद्ध के लिए प्रस्थान का वर्णन किया है। वे कहते हैं कि्

व्याख्या : कवि कहते हैं कि सरजा उपाधि से विभूषित अत्यंत श्रेष्ठ एवं वीर शिवाजी अपनी चतुरंगिणी सेना (पैदल, घोडे और रथ) को सजाकर तथा अपने अंग-अंग में उत्साह का संचार करके युद्ध जीतने के लिए जा रहे हैं। भूषण कहते हैं कि उस समय नगाडों का तेज स्वर हो रहा था। हाथियों की कनपटी से बहने वाला मद (हाथी जब उन्मत्त होता है तो उसके कान से एक तरल स्राव होता है जिसे उसका मद कहते हैं) नदी-नालों की तरह बह रहा था। अर्थात शिवाजी की सेना में मदमत्त हाथियों की विशाल संख्या थी और युद्ध के लिए उत्तेजित होने के कारण हाथियों की कनपटी से अत्यधिक मद गिर रहा था जो नदी-नालों की तरह बह रहा था। शिवाजी की विशाल सेना के चारों ओर फैल जाने के कारण संसार की गली गली में खलबली मच गई। हाथियों की धक्कामुक्की से पहाड भी उखड रहे थे। विशाल सेना के चलने से बहुत अधिक धूल उड रही थी। अधिक धूल उडने के कारण आकाश में चमकता हुआ सूर्य तारों के समान लग रहा था और समुद्र इस प्रकार हिल रहा था जैसे थाली में रखा हुआ पारा हिलता है।

यहाँ वीर रस का सुंदर निरुपण हुआ है। काव्य में तीन गुण महत्त्वपूर्ण माने गए है, माधुर्य, ओज, और प्रसाद। ओज गुण वीर, बीभत्स और रौद्र रस के अनुकूल होता है। भूषण ने मुख्यतया वीर रस का निरुपण किया है। अत: उनकी कविता ओज गुण संपन्न है, जिसके रसस्वादन से चित्त दीप्त हो उठता है और हृदय में आवेग उत्पन्न हो जाता है। उपर्युक्त छंद की पंक्तियो में शिवाजी की सैन्य शक्ति का व्यापक आतंक ध्वनित होता है।

विशेष:- शिवाजी की चतुरंगिणी सेना के प्रस्थान का अत्यन्त मनोहारी चित्रण किया है।

2) इंद्र जिमि जंभ पर बाडव ज्यौं अंभ पर,
रावन सदंभ पर, रघुकुल राज हैं।
पौन बारिबाह पर, संभु रतिनाह पर,
ज्यौं सहस्रबाह पर राम-द्विजराज हैं।

दावा द्रुम दंड पर, चीता मृगझुंड पर,
मभूषन वितुंड पर, जैसे मृगराज हैं।
तेज तम अंस पर, कान्ह जिमि कंस पर,
त्यौं मलिच्छ बंस पर, सेर सिवराज हैं।।

संदर्भ : यह पद हिंदी साहित्य के रीतिकाल के वीरकाव्य परंपरा के श्रेष्ठ कवि भूषण द्वारा रचित शिवभूषण से संकलित किया गया है।

प्रसंग : भूषण ने इस पद को शिवाजी महाराज की वीरता का वर्णन करते हुए लिखा है इसमें उन्होंने शिवाजी महाराज की वीरता का वर्णन किया है।

व्याख्या : भूषण कहते हैं कि जैसे इंद्र ने जंभासुर नामक राक्षस का वध किया और जल की अग्नि जल को नष्ट करती है और घमंडी रावण पर रघुकुल के राजा ने राज्य किया और जिस प्रकार पवन जल युक्त बादलों को उडा ले जाता है। और शिव शंभू ने रति के पति कामदेव को भस्म किया था तथा सहस्त्रबाहु अर्जुन को मारकर परशुराम ने विजय प्राप्त की तथा जिस प्रकार जंगल की अग्नि जंगल को जला देती है और चीता हीरणों के समूह पर और जंगल का राजा शेर हाथियों पर अपना अधिकार कायम रखता है और रोशनी अंधकार को समाप्त करती है जिस प्रकार कृष्ण ने अत्याचारी कंस का वध किया। ठीक उसी प्रकार म्लेच्छवंश पर वीर शिवाजी महाराज शेर के समान है। जिस प्रकार जंभासुर पर इंद्र, समुद्र पर बडवानल, रावण के दंभ पर रघुकुल राज, बादलों पर पवन, रति के पति अर्थात् कामदेव पर शंभु, सहस्त्रबाहु पर ब्राह्मण राम अर्थात् परशुराम, पेडो के तनों पर दावानल, हिरणों के झुंड पर चीता, हाथी पर शेर, अंधेरे पर प्रकाश की एक किरण, कंस पर कृष्ण भारी हैं उसी प्रकार म्लेच्छ वंश पर शिवाजी शेर के समान हैं।

3) 'सबन के ऊपर ही ठाढो रहिबे के जोग,
ताहि खरो कियो जाय जारन के नियरे.
जानि गैर मिसिल गुसीले गुसा धारि उर,
कीन्हों न सलाम, न बचन बोलर सियरे.
भूषण भनत महाबीर बलकन लाग्यौ,
सारी पात साही के उडाय गए जियरे.
तमक तें लाल मुख सिवा को निरखि भयो,
स्याम मुख नौरंग, सिपाह मुख पियरे.'

संदर्भ : यह पद हिंदी साहित्य के रीतिकाल के वीरकाव्य परंपरा के श्रेष्ठ कवि भूषण द्वारा रचित शिवभूषण से संकलित किया गया है।

प्रसंग : इस कवित्त में मुगलदरबार में आयोजित शिवाजी की औरंगजेब से भेंट का वर्णन है। शिवाजी को छह हजारी मनसबदारों की पंक्ति में खडा किया गया था। इस अपमान को शिवाजी सहन न कर सके और भरे दरबार में क्रोधावेश में बडबडाने लगे। उसी दृश्य का चित्रण इस पद में प्रस्तुत किया गया है।

व्याख्या : जो सरजा शिवाजी मुगल दरबार में सबसे ऊपर खडे होने योग्य थे उनको अपमानित करने की नियत से औरंगजेब ने उन्हें छःहजारी मनसबदारों की पंक्ति में खडा कर दिया। अपने प्रति किये गये इस अनुचित व्यवहार से गुस्साबर शिवाजी अत्यधिक कुपित हो उठे और उस समय अवसर की मर्यादा के अनुकूल न तो शहंशाह औरंगजेब को सलाम किया और न विनम्र शब्दों का ही प्रयोग किया। भूषण कहते हैं कि महाबली शिवाजी क्रोधावेश से गरजने लगे और उनके इस क्रोधावस्था के व्यवहार को देखकर मुगल दरबार के सभी लोगों के जी उड गये। अर्थात् भय से हक्का- बक्का हो गये। क्रोध से लाल हुए शिवाजी के मुखमण्डल को देखकर औरंगजेब का मुंह काला हो गया और सिपाहियों के मुख भय की अतिशयता के कारण पीले पड गये।

विशेष :- 1. शिवाजी के रौद्र रुप के वर्णन में रौद्र रस के सभी अंगों की सफल व्यंजना हुई है।

2. मुहावरों के प्रयोग एवं शब्दावली की सहजता से भाषा में जीवन्तता एवं गतिशीलता का पूर्ण समावेश है।

1.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न:

1) रहीम के पिता का नाम.....था।

अ) अलिखाँ ब) बैरमखाँ क) अकबर ड) शहाजहाँ

2) रहीम का जन्म..... में हुआ।

अ) ग्वालियर ब) पटना क) लाहौर ड) बनारस

3) रहीम का पूरा नाम.....खानखाना था।

अ) अब्दुलरहीम ब) रहीम क) मिर्जाखाँ ड) महावत

4) रहीम मूलतः .....कवि है।

अ) हास्य ब) शृंगार क) नीति ड) व्यंग्य

5) अकबर ने रहीम को .....की उपाधि से विभूषित किया।

अ) अलिखाँ ब) मिर्जाखाँ क) अल्लाखाँ ड) नूरखाँ

6) रहीम की 'सतसई' .....छंद में है।

अ) सोरठा ब) चौपाई क) दोहा ड) घनाक्षरी

7) रहीम.....के दरबारी कवि तथा सेनापति रहे।

अ) बाबर ब) हुमायूँ क) अकबर ड) जयसिंह

8) कवि बिहारी का जन्म.....को हुआ।

अ) संवत् 1652 ब) संवत् 1662 क) संवत् 1672 ड) संवत् 1682

9) कवि बिहारी के पिताजी का नाम.....था।

अ) रामलाल ड) देवदास क) केशवराय ड) नारायणदास

10) कवि बिहारी के गुरू का नाम.....था।

अ) श्री नरहरिदास ब) श्री वल्लभाचार्य क) संत रामानंद ड) धर्मदास

11) कवि बिहारी के अक्षय कीर्ति का एकमात्र आधार ग्रंथ ..... है।

अ) बिहारी गाथा ब) बिहारी दोहावली क) बिहारी सतसई ड) बिहारी की वाणी

12) 'बिहारी सतसई' में.....से अधिक दोहे संकलित है।

अ) 700 ब) 500 क) 600 ड) 900

13) ..... ने बिहारी का दोहा पढकर उन्हें अपना दरबारी कवि बनाकर एक दोहे के लिए एक सुवर्ण मुद्रा देना शुरू किया।

अ) छत्रपति शिवाजी महाराज ब) महाराजा जयसिंह

क) महाराणा प्रताप ड) महाराजा गोविंद सिंग

14) 'बिहारी सतसई' ग्रंथ में सबसे अधिक.....रस का निरूपण हुआ है।

अ) वीर ब) रौद्र क) भयानक ड) शृंगार

15) 'बिहारी सतसई' की भाषा..... है।

अ) ब्रज ब) अवधी क) भोजपुरी ड) प्राकृत

16) ''मेरी ..... हरौ, राधा नागरि सोइ, जां तन की झांई परै, स्यामु हरित-दुति होइ।''

अ) दुविधा ब) भव-बाधा क) चिंता ड) सुख

17) ''.....ते सौं गुनी मादकता अधिकाय, इहिं खाएं बौराय नर, इहिं पाएं बौराय।।''

अ) कनक-कनक ब) रजत-रजत क) खनक-खनक ड) ताम्र-ताम्र

18) भूषण का जन्म.....ई. में हुआ।

अ) ई.1616 ब) 1613 क) 1617 ड) 1615

19) भूषण ने शिवाजी की .....सेना का वर्णन किया है।

अ) चतुरंगिनी सेना ब) पैदल सेना क) घोडदल सेना ड) वीरसेना

20) भूषण के पदों में नायक .....है।

अ) शिवाजी ब) संभाजी क) शहाजी ड) औरंगजेब

21) शिवभूषण ग्रंथ ..... ने लिखा है।

अ) रहीम ब) भूषण क) बिहारी ड) कबीर

22) भूषण के पदों में..... रस का निरुपण किया है।

अ) रौद्र ब) हास्य क) वीर ड) करूण

23) म्लेंछ पर शिवाजी महाराज .....के समान है।

अ) दयावान ब) शेर क) मित्र ड) भाई

1.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ:

रहीम : चटकना-तोडना, जुरे-जुड्ना, डारना-फेंकना, ढारणा-बहाना, निकारो-निकाला, गेह-घर, लखि-देखकर, ठहराय-ठहरता है, ताहि-उसको, बढाई-प्रतिष्ठा, निज-अपने

पद क्रमांक 1 : दृग आँख।, उरझत-उलझती है, लड़ती है।, टूटत कुटुम-सगे संबंधी छूट जाते हैं। जुरत-जुड़ता है, जुटता है। हियैं-हृदय। दई-ईश्वर। नई-अनोखी।, रीति-पद्धति।

पद क्रमांक 2 : लिखिन बैठि-लिखने बैठे, चित्र बनाने को बैठे। जाकी-जिसकी।, छबी-सुंदरता।, गहि-गहि -धारण कर-कर के। गरब-गर्व। गरूर-अहंकार, घमंड।, भए-हो गए। केते-कितने ही। चितेरे-चित्रकार।, कूकू-मूर्ख, असफल।

पद क्रमांक 3: गिरि-पर्वत।, बूढे-डूबना।, पसु-नरनु-पशु-नर, अरसिक। पयोधि-समुद्र।, पगारू-एकदम छिछला, पायान।

पद क्रमांक 4: शब्दार्थ : स्वारथु-स्वार्थी।, सुकृतु-पुण्य कार्य।, श्रम वृथा-व्यर्थ को परिश्रम। बिहंग- पक्षी।, बाजि- i) बाज पक्षी तथा ii) राजा जयसिंह।, पानि-हाथ। पच्छीनु-पक्षियों को, अपने पक्ष वालों को।

पद क्रमांक 5: कनक- i) सोना, ii) धतूरा।, सौं गुनी-सौ गुना।, मादकता-नशा। अधिकाय-अधिक, खाएं -खाना।, बौराय-पागल होना।, नर-व्यक्ति।, पाएं-पाना।

पद क्रमांक 6: अंग-अंग नग-शरीर का प्रत्येक हिस्सा।, जगमगत-चमकना, जगमगाना।, दीपसिखा-दीपक की शिखा (चोटी)।, दिया-दीपक, गेह-घर।, उज्यारौ-रोशनी, प्रकाश, उजियाला।

पद क्रमांक 7: कब कौ-कितने अधिक समय से।, टेरतु-पुकार रहा हूँ। दीन रट-दीनताभरी वाणी में। सहाय -सहायक, कृपालु। तुमहू-आपको भी। जगत्-गुरू-सारे जगत् के पूज्य।, जग-नायक-जगत के मार्गदर्शक, स्वामी। जग-बाइ-संसार की हवा, सांसारिक प्रभाव।

पद क्रमांक 8: अनुरागी-प्रेम करने वाला, लाल। चित्त-ध्यान।, गति-दशा।, बूड़े-डूबता है। स्याम रँग-काले रंग, कृष्ण की भक्ति में रंग में। उज्जलु-पवित्र, सफेद।

पद क्रमांक 9: जसु-अपजसु-यश-अपयश।, साँवल गात-श्रीकृष्ण के साँवला शरीर।, कहा करौं-क्या करें।, चपल नैन-चंचल नेत्र।

पद क्रमांक 10: भव-बाधा-सांसारिक दु:ख। हरौ-दूर करो। नागरि-चतुर। झाई परै-प्रतिबिंब, झलक पड़ने पर। स्यामु-श्रीकृष्ण, नीला, पाप। हरित-द्रुति-i) हरी कांति, ii) प्रसन्न, iii) हरण हो गई है द्युति। जिसकी, अर्थात् फीका, कांतिहीन।

1.6 स्वयंअध्ययन प्रश्नों के उत्तर

1) बैरमखाँ	2) लाहौर	3) अब्दुलरहीम	4) नीति
5) मिर्जाखाँ	6) दोहा	7) अकबर	8) संवत् 1652
9) केशवराय	10) श्री नरहरिदास	11) बिहारी सतसई	12) 700
13) महाराजा जयसिंह	14) शृंगार	15) ब्रज	16) भव-बाधा
17) कनक-कनक	18) 1613	19) चतुरंगिनी	20) शिवाजी
21) भूषण	22) वीर	23) शेर	

1.7 सारांश:

निष्कर्षत: हम कह सकते है कि रहीम के दोहों में भावों की विविधता है। उनके भक्ति परक दोहों में सच्चे भक्त हृदय के उद्‌गार है। उनका नीति कथन चिरंतन है, जो किसी दीपस्तंभ की भाँति समाज का पथ प्रदर्शन करने में समर्थ है। रहीम के दोहो में दार्शनिक सिद्धान्तो की सहज-सरल अभिव्यक्ती है।

1) कविवर बिहारी रीतिकाल के एक प्रमुख कवि हैं। हिंदी साहित्य के सर्वश्रेष्ठ शृंगारी कवियों में बिहारी का नाम शीर्षस्थ है। 'बिहारी सतसई' यह उनकी अक्षयकीर्ति का आधार ग्रंथ है। इसमें उनके 700 से अधिक दोहों का संकलन है, जिसका प्रमुख प्रतिपाद्य शृंगार रस है।

2) बिहारी के दोहों को भाव एवं आशय की दृष्टि से देखा जाए तो इन दोहों में 'गागर में सागर' भरने की क्षमता है।

3) 'बिहारी सतसई' में संकलित अधिकांश दोहे नायक-नायिका प्रधान है। इसमें शृंगार रस प्रमुख है और शृंगार के संयोग और वियोग पक्ष की मार्मिक अभिव्यक्ति हुई है।

4) बिहारी के दोहों में समसामायिकता, बहुज्ञता का परिचय मिलता है।

5) बिहारी के दोहे भाव-व्यंजना और शब्द विन्यास की दृष्टि से अद्‌भूत हैं।

6) बिहारी के दोहों की भाषा साहित्यिक ब्रज और अलंकार प्रधान होती है और उनकी कल्पना शक्ति अद्‌भूत है।

7) बिहारी जी के इन दोहों के विषय क्रमश: प्रेम भावना की महानता, नायिका का सौंदर्य, प्रेम की गहनता और अरसिकों की संकीर्णता, स्वार्थ का त्याग और कर्तव्य परायणता, भौतिक जगत् का लालच और नशा, भगवत् प्रेम पाने की चुतराई, मन की पावनता के लिए भगवान श्रीकृष्ण की भक्ति, भगवान श्रीकृष्ण की भक्ति में नायिका के मन की विवशता और ग्रंथ की सफलता के लिए अपने आराध्य राधिका की स्तुति और वंदना आदि हैं।

भूषण ने सारे देश का भ्रमण किया था। उन्होंने उस युग के प्राय: सभी ऐतिहासिक पुरुषों की चर्चा की है, जिन्होंने देश की राष्ट्रीय भावना की सुरक्षा में योगदान दिया था। उनमे से शिवाजी और छत्रसाल को कवि ने अपने राष्ट्रोत्थान के लिए आदर्श रूप में ग्रहण किया और इनके अतिरिक्त प्रकीर्ण रचनाओ में सहूजी बाजीराव, सुलंकी, अवधूतसिंह आदि पर भी एक-एक, दो-दो लिखे है। राष्ट्रीय साहित्य में प्राचीन संस्कृति और धर्म से प्रेरणा ली जाती है। उसी के माध्यम से उस देश के राष्ट्रादियो को राष्ट्र रक्षार्थ ललकारा है। उस समय बहुत से राजाओं ने औरंगजेब का आश्रय ग्रहण किया था। केवल शिवाजी ही औरंगजेब के प्रतिकार के लिए डटे रहे।

1.8 स्वाध्याय :

अ) दीर्घोत्तरी प्रश्न :

1) कविवर रहीम का संक्षिप्त परिचय देते हुए रहीम के दोहों का भावार्थ स्पष्ट कीजिए।
2) पठित दोहों के आधार पर कवि रहीम की बहुज्ञता और काव्य कला को स्पष्ट कीजिए।
3) कविवर बिहारी का संक्षिप्त परिचय देते हुए बिहारी के दोहों का भावार्थ स्पष्ट कीजिए।
4) पठित दोहों के आधार पर कवि बिहारी की बहुज्ञता और काव्य कला को स्पष्ट कीजिए।
5) कविवर भूषण का संक्षिप्त परिचय देते हुए भूषण के पदों का भावार्थ स्पष्ट कीजिए।
7) पठित दोहों के आधार पर कवि भूषण की बहुज्ञता और काव्य कला को स्पष्ट कीजिए।

ब) लघुत्तरी प्रश्न:

1) रहीम की भक्ती भावना को स्पष्ट कीजिए।
2) रहीम के नीति परक दोहों में व्यक्त विचारों को विशद कीजिए।
3) रहीम के दोहों में अनुभूति की प्रधानता है - स्पष्ट कीजिए।
4) रहीम के दोहों में व्यक्त विचारों को स्पष्ट कीजिए।
5) कवि बिहारी के भगवत् प्रेम को स्पष्ट कीजिए।
6) कवि बिहारी के दोहों का विषय वैविध्य स्पष्ट कीजिए।

7) कवि बिहारी के शृंगार रस पर दोहों का आशय स्पष्ट कीजिए।

8) शृंगार कवि के रूप में बिहारी का संक्षिप्त परिचय दीजिए।

9) कवि बिहारी की भक्तिभावना को स्पष्ट कीजिए।

10) भूषण के वीर काव्य को स्पष्ट कीजिए।

11) शिवाजी के प्रताप का वर्णन भूषण ने किन शब्दो में किया है विशद कीजिए।

12) शिवाजी की चतुरंग सेना के प्रभाव का वर्णन भूषण ने किन शब्दो में किया है – स्पष्ट कीजिए।

क) संसदर्भ व्याख्या प्रश्न :

1) रहिमन धागा प्रेम का, मत तोरो चटकाय।
टूटे पे फिर ना जुरे, जुरे गाँठ परी जाय

2) बडे बडाई ना करै, बडो न बोलै बोल।
रहिमन हीरा कब कहै, लाख टका मेरो मोल।

3) समय पाय फल होत है, समय पाय झरी जात।
सदा रहे नहि एक सी, का रहीम पछितात।

4) ''दृग उरझत, टूटत कुटुम, जुरत चतुर-चित्त प्रीति।
परिति गांठि दुरजन-हियै, दई नई यह रीति।।''

5) ''कनक कनक ते सौं गुनी मादकता अधिकाय।
इहिं खाएं बौराय नर, इहिं पाएं बौराय।।''

6) ''स्वारथु सुकृतु न, श्रमु वृथा, देखि विहंग विचारि।
बाज पराये पानि परि तू पछिनु न मारि।।''

7) सबन के ऊपर ही ठाढो रहिबे के जोग,
ताहि खरो कियो जाय जारन के नियरे .
जानि गैर मिसिल गुसीले गुसा धारि उर,
कीन्हों न सलाम, न बचन बोलर सियरे.
भूषण भनत महाबीर बलकन लाग्यौ,
सारी पात साही के उडाय गए जियरे .
तमक तें लाल मुख सिवा को निरखि भयो,
स्याम मुख नौरंग, सिपाह मुख पियरे.

8) इंद्र जिमि जंभ पर बाडव ज्यौं अंभ पर,

रावन सदंभ पर, रघुकुल राज हैं।

पौन बारिबाह पर, संभु रतिनाह पर,

ज्यौं सहस्रबाह पर राम-द्विजराज हैं।

दावा द्रुम दंड पर, चीता मृगझुंड पर,

मभूषन वितुंड पर, जैसे मृगराज हैं।

तेज तम अंस पर, कान्ह जिमि कंस पर,

1.9 क्षेत्रीय कार्य:

1) रीतिकाल के अन्य कवियों की रचनाओं की जानकारी इकट्ठा कीजिए।
2) बिहारी के समकालीन कवियों के साथ उनके कविता की तुलना कीजिए।
3) महाराष्ट्र के संत कवियों की जानकारी लेकर उनकी रचनाओं को हिंदी में अनूदीत करने का प्रयास कीजिए।

1.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1) हिंदी के प्रतिनिधि कवि - लेखक: डॉ. विजय प्रकाश मिश्र, विद्या प्रकाशन, सी, 449, गुजैनी, कानपुर- 22
2) हिंदी के प्रतिनिधि प्राचीन कवि- लेखक: द्वारिका प्रसाद सक्सेना, विनोद पुस्तक मंदिर प्रकाशन, आगरा।

❑❑❑

इकाई 3
आधुनिक कविता

7. द्रूत झरो

– सुमित्रानंदन पंत

अनुक्रम :

3.1 उद्देश्य

3.2 प्रस्तावना

3.3 विषय विवरण

3.3.1 सुमित्रानंदन पंत जी का परिचय।

3.3.2 'द्रुत झरो' कविता का परिचय।

3.3.3 'द्रुत झरो' कविता का भावार्थ।

3.3.4 'द्रुत झरो' कविता की विशेषताएँ।

3.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न।

3.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ।

3.6 स्वयं अध्ययन के प्रश्नों के उत्तर।

3.7 सारांश।

3.8 स्वाध्याय।

3.9 क्षेत्रीय कार्य।

3.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए।

3.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप -

1. सुमित्रानंदन पंत के व्यक्तित्त्व और कृतित्त्व से परिचित होंगे।
2. प्रगतिवादी काव्यधारा समझेंगे।
3. परिवर्तनवादी दृष्टिकोन को अपनायेंगे।

4. बाधक प्राचीन रुढि परंपराओं को नष्ट करने के बारे में सोचेंगे।

5. नये युग के नये मूल्य एवं नयी चेतना को स्वीकारने के लिए आगे बढेंगे।

6. प्रगति के लिए बदलाव की आवश्यकता को समझेंगे ।

7. नयी पीढी की युवाशक्ति पर विश्वास रखेंगे।

3.2 प्रस्तावना

प्रकृति के सुकमार कवि सुमित्रानंदन पंत जी की ''द्रुत झरो'' बहुत ही प्रसिध्द कविता है। कविता में जीर्ण पत्र पुरानी सडी गली परंपराओं का प्रतीक है। वास्तव में पूरे समाज में पूरानी मान्यताएँ, अंधविश्वास है। जिनका आज के जीवन में बिलकुल महत्त्व उपयोग नहीं है। ऐसी पुरानी मान्यताओं, पद्धतियों को जल्दी से जाना होगा, झडना होगा ताकि नये चिंतन का, नये दृष्टिकोन का विकास हो सके और प्रगति का पथ प्रशस्त हो सके। ये आधुनिक बोध और प्रगतिवादी चेतना की कविता है। नवयुग का स्वागत सुमित्रानंदन पंत जी ने इस कविता में किया है। सुमित्रानंदन पंत के काव्यं में कल्पना एवं भावों की सुकुमार, कोमलता के दर्शन होते हैं।

3.3 विषय विवरण

3.3.1 कवि परिचय : कवि सुमित्रानंदन जी का परिचय

सुमित्रानंदन पंत जी बहुमुखी प्रतिमा के संपन्न साहित्यकार थे। सुमित्रानंदन पंत छायावाद के प्रमुख कवि है, उनका जन्म अल्मोडा, उत्तर प्रदेश के कैसोनी में 20 मई 1900 में हुआ था। पिता का नाम पं. गंगादत्त पंत था। पंत जी के जन्म के बाद उनकी माँ का तुरंत ही देहांत हुआ। उनका पालन उनकी दादी ने किया था। उनकी प्रारंभिक शिक्षा (मॅट्रिक तक) अल्मोडा में हुई और इंटर अध्ययन के लिए इलाहाबाद आये। गांधी के विचारों का उनपर प्रभाव रहा है। इसलिए उन्होंने गांधी जी के साथ ''स्वाधीनता आंदोलन'' में सहभाग लिया था। बचपन से ही उन्हे कविता लिखना पसंद था। पंत जी का हिंदी, अंग्रेजी, बंगला भाषा पर प्रभुत्त्व हैं। पंत प्रकृति के चतुर चितेरे है। प्रकृति पर सुंदर रचना लिखनेवाले ये सुकुमार कवि के रुप में जाने जाते है। पंत जी का निधन 28 दिसंबर 1977 को हुआ।

पंत जी ने खडीबोली भाषा और प्रबंधात्मक शैली का प्रयोग किया है। पंत जी की प्रथम कविता ''गिरीजे का घंटा'' 1916 में प्रकाशित हुई।

पंतजी की रचनाएँ – काव्यसंग्रह

1. लोकायतन	2. वीणा	3. गीत हंस	4. गुंजन
5. ग्रंन्थि	6. स्वर्णधूलि	7. उत्तरा	8. युगपथ
9. युगान्त	10. ग्राम्या	11.पल्लव	12.युगवाणी

13. स्वर्ण किरण 14.उत्तरा 15.चिदंबरा

16.कला और बूढा चाँद 17. रश्मिबंधन 18. ग्रंथि

उपन्यास - हार

नाटक - रजतरश्मि, शिल्पी, जोत्सना

☐ **पुरस्कार –**

पंतजी की रचना, ''कला और बूढा चाँद'' पर साहित्य अकादमी का पुरस्कार मिला। लोकायतन पर, सोवियत और चिदंबरा पर भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला है।

3.3.2 ''द्रुत झरो'' कविता का परिचय –

'द्रुत सरो' कविता की रचना 1934 में की है। युगांत (1935) और पल्लविनी (1940) काव्यसंग्रह में यह कविता संकलित है। यह प्रगतिवादी काव्यधारा की कविता है। कवि ने इसमें नवयुग का स्वागत करते हुए पुराने, रुढि-प्रथा-परंपरा, अंधविश्वास और पुरातन काल को छोडने की बात सामने रखी है। आधुनिकता के युग में कामहीन, विचारों को नष्ट करना है। यहाँ कवि ने जीर्ण सडे हुए और, मृत पक्षी की उपमा पुराने विचारों देकर उन्हें जल्द से जल्द समाप्त करने के लिए कहा है। अगर पुराने गंदे विचार हम छोडते है तभी नये विचार स्वीकार कर सकते है। इससे संसार में नये युग का निर्माण होगा। इस तरह कवि यहाँ प्रगतिवादी चेतना को स्वर दे रहा हैं। पंत जी ने प्रतीकात्मक शैली का प्रयोग किया है। सजीव बिन्व - विधान तथा ध्वन्यात्मकता भी पंतजी के शैली की विशेषता है। पंत जी संपूर्ण युग को प्रेरणा देनेवाले प्रेरणाशील कवि है।

3.3.3 ''द्रुत झरो'' कविता का भावार्थ –

प्रस्तुत कविता सुमित्रानंदन पंत द्वारा रचित है। उन्होंने इस कविता में प्रगतिवादी विचार रखे हैं। कवि ने यहाँ पर प्राचीनता के प्रति विद्रोह का स्वर व्यक्त किया है। तभी नये समाज का निर्माण होगा। दकियानुसी संस्कार रुपी पुराने पत्तों को, विचारों को जल्दी से झडने के लिए या नष्ट हाने के लिए कवि कह रहा है। यहाँ पेड के पत्तें रुढीवादी विचारधाराओं, अंधविश्वासों का, परंपराओं का प्रतीक है। समाज पुरानी विचारधारा, अंधविश्वास, परंपराओं को त्याग ने से ही आगे बढेगा। यहाँ हिमताप के कारण पेड के पत्ते पीले पडे है और जब वसंत ऋतु आता है तब ये सडे हुए पत्ते वसंत से डरते है। मतलब नये विचारधारा से पुरानी विचारधारा डर जाती है ताकि उनको निकाल ना दिया जाय, गिरा ना दिया जाय इस बात से पुराने विचारोंवाले भयभीत है। पुरानी मान्यताएँ उदासीन है, निर्जीव है। अत: उनमें नवजीवन, नवप्रेरणा के जो विचार है वह पुरानी मान्यताओं में अब नहीं है। अपने सामाजिक पुराने रुढीवादी विचारों का त्याग कर देना चाहिए क्योंकि समाज में परिवर्तन की लहर चल पडी है। यहीं कवि चाहते है।

पुराने विचारों का समय बीत चुका है, वे विचार निष्प्राण है। एक मरे हुए पंछी की लाश की तरह पुरानी मान्यताएँ होती है। पुरानें विचारों में ना ही सही शब्द है और ना ही सही अर्थ है। मरे हुए पंछी के पंख अस्त-व्यस्त पडे हुऐ है वैसे ही ये पुराणी मान्यताएँ अस्त-व्यस्त है। पुराणी मान्यताओं में सफल जीवन की उडाने नहीं है। जैसे मरे हुए पंछी के पर अन्त में झडकर विलीन हो जाते है वैसे ही पुराणी मान्यताएँ, विचार आज निष्प्राण हो चुकी है इसलिए उन्हें त्यागना है।

पुराणे विचारों से चारों ओर जग में निरसता का जाल फैला है। नये विचारों से सबके शरीर में रक्त में नया उत्साह आ जाता है। अगर युवकों के विचारों में नवपरिवर्तन होगा तब फिर से समाज विकास की और जायेगा क्योंकि इस नवयुग में अंधविश्वासों के लिए कोई स्थान नहीं हैं। चारों ओर नवीन विचारों से जीवन परिवर्तित हो जायेगा और जीवन में हरियाली और खुशहाली आयेगी इससे नवजीवन का विकास हो जायेगा।

विश्व में नव युवक कों के आधुनिक विचार और उनकी उर्जा, उनके टेक्निकल (तांत्रिक) ज्ञान को अपना ने से समाज में एक नई आशा की किरण चारों और फैलेगी। 'ज्ञान' का उजाला फैलाता रहेगा। साथ ही समाज में समरसता स्थापित होगी, क्योंकि प्रकृति खुद ही परिवर्तनशील है। पेड के शुष्क पत्र झडकर हमेशा पेड नव पल्लवित होते हुये दिखाई देते। इसलिये नये पीढी के विचारों को अवसर देना है। इस तरह विश्व में नवयौवन मंजरी उत्पन्न हो जायेगी और कोकिला अमर प्रेम के राग सुनायेगी। अर्थात् नये विचारों से जीवन और सुंदर बनेगा ऐसा कवि वर्णित करता है।

परिवर्तन ही कवि का मुख्य उद्देश्य है। नई पीढी के साथ, नये विचारों को लेकर चलने की सलाह पंत ने यहाँ पर दी है।

3.3.4 ''द्रुत झरो'' कविता का विशेषताएँ –

1. नवयुग के निर्माण की भावना सबके मने में जगाने में पंत जी सफल रहे है।
2. पुराने मान्यताओं, विचारों को नष्ट करना और अंधविश्वास, रुढि, प्रथा-परंपराओं को नकारने का साहस पंत जी में है।
3. पूराने विचार, सडीगली मान्यताएँ सचमुच निर्जीव हो चुकी है। उन्हें बदलने की, नकारने की जरुरत है।
4. समाज परिवर्तन ही पंत जी का मूल उद्देश्य है।
5. नवयुग के साथ अगर हम चलेंगे तो ही विश्व में भारत सबसे आगे होगा यह कवि का विश्वास है। इसलिए कवि परिवर्तनशील समाज के आग्रह, मांग करता हुआ दिखाई देता हैं।
6. इस कविता में यमक, अनुप्रास अलंकारों का प्रयोग करने में पंत जी सफल रहे है।
7. पंत जी प्रकृति के चतुर चितेरे हैं यह इस कविता से साबित होता है।

3.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न –

1. द्रुत झरो जगत के जीर्ण पत्र का अर्थ..... है।

   अ) पुरानी सोच ब) पीले पडे हुए पत्ते

   क) सडी गली मान्यताएँ ड) पुराना पत्र

2. 'द्रुत झरो' कविता के कवि ..... है।

   अ) निराला ब) नागार्जुन क) सुमित्रानंदन पंत ड) मुक्तिबोध

3. पंत जी ने विगत युग को ..... कहा है।

   अ) निष्प्राण ब) आधुनिक क) पारंपरिक ड) प्राचीन

4. 'द्रुत झरो' कविता में पत्ते पिले..... से पड गये है।

   अ) हिमताप ब) पानी न मिलने क) बारिश ड) रासायनिक खाद

5. कंकाल जाल ..... में फैले।

   अ) बाग ब) घर क) जग ड) पानी

3.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ –

1) कंकाल – अस्थिपंजर, 2) नवल – नई, 3) पल्लव – नए लाल पत्ते,

4) मर्मर– ध्वनि, 5) मुखरित–ध्वनित 6) मांसल – सजीव,

7) मंजरित – फूल से लदे हुए, 8) पिक – कोयल, 9) दुत – तेजी से,

10) जीर्ण – पुराने,सडे हुए, 11) पत्र–पत्ते, 12) शुष्क – सूखा,

13) क्षीण – दुर्बल, 14) वीतराग– विरक्त, 15) पुराचीन– प्राचीन,

16) विहंग – पक्षी, 17) अन्तत – जिसका अन्त न हो, अमर,

19) ताप – धूप, 20) जड – निर्जीव, 21) झरो – नष्ट होना

3.6 स्वयं अध्ययन के प्रश्नों के उत्तर।

1) सडी गली मान्यताएँ 2) सुमित्रानंदन पंत 3) निष्प्राण

4) हिमताप 5) जग

3.7 'द्रुत झरो' कविता का सारांश –

इस कविता में पंत जी ने पुराने युग की व्यवस्था को नष्ट करने के लिए कहा है। पेड के सुखे हुए पीले जर्जर पत्ते विगत आयु और युग का सूचक है। सडे पत्तों का एकमात्र अंत है कि वह टूटकर गिर जाते है और तभी उस डाली पर नए पत्ते अंकुरित होते है। वैसे ही सडी गली परंपराओं, अंधविश्वासों के जाने का समय आ गया है। उनके जाने के बाद नवयुग आयेगा और नवयुग के, विकसित समाज में अंधविश्वास, अज्ञान के लिए कोई स्थान नहीं रहेगा। नया विचार, नई मान्यताएँ, नव युवकों के शरीर में उत्साह युक्त नया रक्त भरेगी और निष्प्राण पुरातन युग चला जाऐगा। परिणामत: जीवन में फिर से खुशहाली, हरियाली छा जाऐगी।

विश्व में नवयुवा शक्ति के कारण उत्साह, आनंद फैलेगा, इसी कारण मधूर स्वरोंवाली कोकिला आनंद भरा, अमर प्रेम के, सफलता के, सुंदर जीवन के गीत गायेगी। पंत जी का यहाँ प्रकृति के प्रति तल्लीनता स्पष्ट हुई है। साय ही परिवर्तनवादी गतिवाद का भाव ही झाँकी को प्रस्तुत करता है। अंत में कवि का उद्देश्य यह है कि संसार में नवयुग का आगमन हो और समस्त विश्व में नयें विचारों की खुशबू फैले। कवि ने भाषा सरस, साहित्यक रुप में हमारे सामने रखी है, साथ ही प्रतीकात्मक शैली और रुपक और अनुप्रास अलंकारों का प्रयोग किया है।

3.8 स्वाध्याय

1. **संसदर्भ प्रश्न**

   1) ''कंकाल-जाल जग में फैले
      फिर नवल रुधिर-पल्लव-लाली!
      प्राणों की मर्मर से मुखरित
      जीव की मांसल हरियाली।''

   2) ''मंजरित विश्व में यौवन के
      ज्ग कर जग का पिल मतवाली
      निज अमर प्रणय-स्वरं मदिरा से
      भर दे फिर नव-युग की प्याली!''

2. **दीर्घोत्तरी प्रश्न :**

   1. 'द्रुत झरो' कविता का आशय लिखिए।
   2. 'द्रुत झरो' कविता में ने व्यक्त विचारों को अपने शब्दों में लिखिए।

9. क्षेत्रीय कार्य – प्रस्तुत कविता को पढने बाद '21 वी सदी का भारत' इस विषय निबंध लिखिए।

3.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए।

1. पल्लव काव्यसंग्रह (सुमित्रानंदन पंत)
2. कला और बूढा चाँद (सुमित्रानंदन पंत)

8. तीनों बंदर बापू के

नागार्जुन

अनुक्रम :

3.1 उद्देश्य

3.2 प्रस्तावना

3.3 विषय विवरण

3.3.1 नागार्जुन जी का परिचय।

3.3.2 'तीनों बंदर बापू के' कविता का परिचय।

3.3.3 'तीनों बंदर बापू के' कविता का भावार्थ।

3.3.4 'तीनों बंदर बापू के' कविता की विशेषताएँ।

3.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

3.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दार्थ

3.6 स्वयं अध्ययन के प्रश्नों के उत्तर

3.7 सारांश

3.8 स्वाध्याय

3.9 क्षेत्रीय कार्य

3.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

3.1 उद्देश्य

इस इकाई के अध्ययन के बाद आप

1. प्रगतिशील काव्यधारा से परिचित होंगे।
2. नागार्जुन के व्यक्तित्त्व और कवित्व को समझेंगे।
3. कवि ने समाज की बुराईयों को लोकभाषा के माध्यम से सामने रखा है, उसे जानेंगे।
4. सामाजिक, राजनीतिक व्यंग को बापूजी के तीनों बंदरों द्वारा समझेंगे।
5. प्रस्तुत कविता में महात्मा गांधीजी के तीनो बंदरों के प्रतिकात्मक रूप से परिचित होंगे।

6. बापूजी के 100 वीं पुण्यतिथी पर उनके प्रतिकात्मक तीनों बंदरों को केंद्र में रखकर वर्तमान समय के सेठ लोगों की जनता को उल्लू बनाने की पध्दत को समझेंगे।
7. गांधीजी के तीनों बंदरों की आड में समाज के सफेद पाश लोग किसानों को किस तरह लूट रहें हे यह देखेंगे।
8. वर्तमान राजनेताओं ने राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के तीनों बंदरों को भ्रष्टाचार के खातिर किस तरह से बदलते है यह देखेंगे।
9. नागार्जुन जी के साहित्यिक व्यंगात्मक रूप से रूबरू होंगे।
10. नागार्जुन की कविता का महत्त्व समझेंगे।

3.2 प्रस्तावना

नागार्जुन को जनकवि के रूप में जाना जाता हैं। नागार्जुन ने भारतीय राजनीति को अपने व्यंग्यात्मक शैली द्वारा सामने रखा है। तीनों बंदर बापू के यह नागार्जुन की बहुत ही लोकप्रिय कविता है। तत्कालीन अव्यवस्था तथा राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के स्वराज्य सपने को और सुव्यवस्था के न चलने के कारण यह कविता नागार्जुन ने लिखी हैं। कई लोगों ने गांधीजी के आदर्श का ढोंग रचाकर, सिर्फ सत्ता की खुर्सी हासिल की और जनता को दिये गये वायदे कभी भी पूरे नहीं किये। राजनेताओं की कथनी औंर करनी में जो भेद है वह इस कविता द्वारा नागार्जुन ने हमारे सामने रखे है। गांधीजी के तीनों बंदर आदर्श के प्रतीक के रूप में गांधीजी के मूल्यों के प्रचारक है, लेकिन राजनेताओं ने गांधीजी के आदर्शों को सिर्फ अपने प्रचार के लिए इस्तेमाल किया है और चुनाव जीतते ही खुर्सी मिलने के बाद उन्होंने अपने परिवार की, सबसे पहले गरीबी हटाई है। बुरा सुनकर, बुरा बोलकर और बुरा देखकर वे सत्ता का मजा लूट रहे है। इस तरह नागार्जुन ने, जनता को गांधी के नामपर लुटनेवाले लुटेरों का, सच व्यंग्यात्मक शैली में प्रस्तुत किया है। आजादी के बाद भी जब कवि की आकांक्षाएँ पूरी नहीं हुई तो उन्होंने सामाजिक, राजनीतिक जीवन के प्रति रोष प्रकट किया।

3.3 विषय विवरण

3.3.1 नागार्जुन जी का परिचय।

नागार्जुन हिंदी और मैथिली के अप्रतिम लेखक और कवि थे। उनका असली नाम बैद्यनाथ मिश्र था। परंतु मैथिली में 'यात्री' उपनाम से रचनाएँ की। इनका जन्म बिहार राज्य के दरभंगा प्रमंडल के अतंर्गत मधुबनी जिले के सतलेखा नामक गॉव में सन् 1911 में हुआ। नागार्जुन जब चार वर्ष के थे तभी उनके सिर पर से माता का छत्र चला गया, परिणाम: उनका पालन-पोषण उनके पिताजी ने किया। उनके पिताश्री गोकुल मिश्रा एक किसान थे और खेती के अलावा पुरोहिती आदि के सिलसिले में बाहर के इलाकों में आया-जाया करते थे। उनके साथ-साथ बचपन से नागार्जुन भी 'यात्री' हो गए ऐसे रुढिवादी मैथिली ब्राह्मण परिवार में उनका बचपन गुजरा।

रचनाएँ :

काव्य – युगधारा सतरंगे पंखोंवाली, प्यासी पथराई ऑखें, भस्मांकुर, खून और शोलें, चना जोर गरम, शपथ, 'प्रेत का बयान।'

उपन्यास – 'रतिनाथ की चाची', 'बलचनमा', 'बाबा बटेसरनाथ', 'नयी पौध', 'वरुण के बेटे', 'दुखमोचन', 'उग्रतारा', 'सुभीपाक', पारो, 'आसमान में चाँद तारे'।

व्यंग – अभिनंदन

निबंध संग्रह – अन्नहीतम क्रियानाम

बालसाहित्य – कथा मंजरी भाग –1, 2, मर्यादा पुरुषोत्तम, विदयापति की कहानियाँ

अनुवाद – मेघदूत, गीत गोविंद, विदयापति के गीत।

संपादक – दीपक, विश्वबंधु, कौमी बोली

मैथिली रचनाएँ – पत्रहीन नग्न गाछ (काव्य), हीरक जयंती – उपन्यास

पुरस्कार – 1969 ई 'पत्रहीन नग्न गाछ' के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार मिला है। 1994 में साहित्य अकादमी फेलो के रुप में नामांकित कर सम्मानित भी किया था।

3.3.2 तीनों बंदर बापू के कविता का परिचय।

प्रस्तुत कविता 1969 में नागार्जुन द्वारा लिखी गई है। प्रस्तुत कविता में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के तीनों बंदरों को याद किया है। प्रासंगिकता यह है कि स्वयं गांधीजी जो काँग्रेस के सूत्रधार थे परंतु स्वयं काँग्रेस में कभी नहीं थे, लेकिन काँग्रेस के कुछ मूल नेताओं ने कैसे गांधीजी के उसूलों को और अपने कर्तव्य को हाशिए पर रखकर मजे ले रहे थे इनके बारे में यहाँ कहा गया है। गांधी के तीन बंदरों के आडे में समाज के सफेदपाश किस तरह मगरुर हो रहे है यह बताया गया है।

3.3.3 तीनों बंदर बापू के कविता का भावार्थ।

''तीनों बंदर बापू'' इसमें बापू यानी महात्मा गांधी जो भारत के राष्ट्रपिता थे। राष्ट्रपिता के तीनों बंदरों को हमने बचपन से सुना है जो गांधीजी के मूल्यों के प्रतीक है। उनकी विशेषता यह है की बूरा मत देखो, बूरा मत बोलो और बूरा मत सुनो। इन्हीं मूल्यों के आधार पर गांधीजी के तीनों बंदर हमें जीवन जीने का सही तरीका सीखाते है। ये तीनों बंदर आदर्शों के प्रतीक है लेकिन इस कविता में हमें देखना है कि ये बापू के तीन बंदर किस तरह से बदलकर देश की आर्थिक, धार्मिक, राजनीतिक परिस्थितियाँ बदलते है। कवि यह व्यंगात्मक शैली में बताते है। बापू के तीनों बंदर महात्मा गांधी के भी ताऊ निकले, उनसे भी आगे निकले और भी व्यवहारी, ज्ञानी, कुशल निकले। गुरु से भी आगे शिष्य है। सरल सूत्र को उलझाया गया है (बिगडा गया है) जो लोग दूसरों को उलझाते है वह दूसरों को जीवनदान दे सकेंगे? क्या वे बंदर रुपी इन्सान

सचमूच ज्ञानी है? ध्यानी है? वे अपने ज्ञान, ध्यान से जल थल पृथ्वी पर उनका ध्यान रखते है। तीनों सीमाओं की रक्षा करनी है इसलिए ये तीनों घूमते हैं। कृष्ण की लीलाओं से भी अधिक नटखट है।

यहाँ नटवरलाल ये शब्द 'ठग' अर्थ में प्रयुक्त है। ये धोखाधडी करनेवाले, सभी लोग दूनिया भर में फैले हुये है। वे पीढी दर पीढी आगे चल रहै है। ये भ्रष्टाचारी लोग सौ साल तक रहेंगे। ये नटवरलाल घोडे की तरह चलकर, दौडकर भ्रष्टाचार कर रहे है। सभी ओर नटवरलाल फैले हुये है। नागार्जुन यहाँ भष्टाचारी लोगों की तेज दौड को रोखना चाहते है।

यहाँ पर तीनों बंदर बापू के यह शब्द प्रतीकात्मक रुप से लिया है। इन भ्रष्टाचारी लोगों की उम्र बहुत होती है। ये हमेशा खुश रहते है, ये बूढें होते है मगर जवानों जैसी हरकतें करते हैं। वे परम चतुर है। गांधीजी के जयंती को सौ वर्ष पूरा हो जाने पर उनकी सौंवी मनाकर ये नटवरलाल बापू को ही बना रहे है। क्योंकि बापू के तीनों बंदर जो सही कर रहे थे बिलकुल ये नटवरलाल के झूठे तीनों बंदर उल्टा करके अपना उल्लू सीधा कर रहे है।

अत्याचारी नटवरलाल का चारों तरफ बोलबाला है। इसीलिए ये नटवरलाल छोटे बच्चों के हाथों किताब के बजाय, राजनेताओं के झंडे देकर उन्हे मालामाल करते है। शिक्षा को छोडकर नई पीढी के हाथों बंदूकें, लाठियाँ, झंडें दिये जा रहे है। उनको अमीर बनाया जा रहा है। साथ ही बच्चों के परिवारवालों को ये नटवरलाल खुश करते है और भ्रष्टाचारी पैसों से उनके घरों को बसाया जाता है।

बापू के तीनों बंदर व्यापारियों को ही अधिक फायदा करा रहे है। यहाँ कुछ साधू संत के प्रवचनों को जनता पर लादा जा रहा है। उन्हें धार्मिक बनाया जा रहा है। सत्य-अहिंसा आज किस तरह लूट रही हैं, तोडी जा रही है। ये बंदर अपनी पूँछ से अपनी प्रतिमा आँक रहे है। जैसे बेमतलबी पूँछ (चाटुगिरी) को ज्यादा महत्त्व दिया जा रहा है। दल के उपर, नीचे ये बंदर अपनी कला दिखा रहे है। बार-बार लोगों को गुमराह कर रहे है और ये तीनों बंदर बहुत खुश हो रहे है की हमने जनता के दल के उपर नीचे रहकर, कैसे उन्हें उल्लू बनाया है और अपना स्वार्थ निकाला है।

आज समाज में एक तरह से फरेब का जाल बनाया जा रहा है, इसमें गीता को गलत अर्थ में रखा जा रहा है। सभी धर्मो के पुराण को ढाल बनाकर बहुत सारा पैसा कमाया जा रहा है इसलिए अनेक धर्म के समाज के दलाल आज अच्छे हाल में स्थित में है। ऐसे दलाल नटवरलाल के सच रुप में सभी जगह पर निर्माण होते हुये दिखाई देते है।

यहाँ पर कवि कहना चाहते है के ये नटवरलाल सामान्य लागों की मुंडी मरोड कर पुरे दुनिया को अपनी मुठ्ठी में रखे हुए है। ये तीनों बंदर आसमान को भी चिढा रहे है मतलब की वे खुद को आसमान से उँचा मानते है। ये तीनों बंदर सरकारी पैसों से हवाई जहाज से परदेस यात्रा कर रहे है। हर एक क्षेत्र में भ्रष्ट्राचार कर रहे है। हर समय एक क्षेत्र में न रहकर अलग-अलग क्षेत्र में जाकर भ्रष्ट्राचार कर रहे है। यानी हर क्षेत्र में भ्रष्ट्राचारयुक्त मलाई खा रहे है। गांधीजी का छाँप खुद पर मारकर सबको धोका दे रहे है। ये

गांधीजी के बंदर असली होने का दावा करते हैं मगर ये सर्कस के जैसे झूठे नकली है, दिखावटी है, डाकू रुपी बंदर है।

नागार्जुन कहते है नटवरलाल जैसे लोग खुद को सिर्फ लोकसेवक दिखाते हैं लेकिन अपना उनका व्यक्तिगत स्वार्थ होता है। अपने शौक पूरे करते हैं। काले बाल करके शौकिन रहते है। ये झूठे आज समाज के रक्षणकर्ता बने है और बहुत पैसा कमाकर गगन को चूमते है। वे आगे जाकर आर्थिक स्थिति के साथ, शरीर से भी फुलते है। लेकिन ऐसे नटवरलाल का एक ना एक दिन बूरा हाल होता हुआ दिखाई देता है।

बापू के बंदर एक आदर्श जीवन के मार्गदर्शक है लेकिन आज वहीं तीनों बापू के बंदर बापू के जाने के बाद हमें अंगूठा दिखा रहे है। हमें बूरा भला कह रहे है। ये तीनों बंदर अब हमें बुरा सिखा रहें है। ये तीनों बंदर आज प्रेम में पागल है और उनकी पाँचों उँगलियाँ घी में है। अच्छा पकवान खाकर सुसस्ता गये है। अब उन्हें किसी बात की कमी नहीं है। ये तीनों बंदर गुरुओं के गुरु बनें है, वे आज अपने गुरु को ही सीखा रहे है कि किस तरह से भ्रष्टाचार, अन्याय, अत्याचार करना है। सौ वर्ष के बाद परिस्थितीयाँ बदली है। तीनों बंदर बापू के जो आदर्शवाद के प्रतीक थे, आज वह बापू को ही बना रहे है, उनको ही फँसा रहे है।

इसी तरह नागार्जुन ने बापू के समय के तीन बंदर जो सत्य, अहिंसा के प्रतीक है वहीं सौ साल के बाद के तीनों बंदर बापू के जाने के बाद भ्रष्टाचारी, अत्याचारी, अहंकारी बने हुये समाज को धोका दे रहे है। यह सच कवि ने हमारे सामने रखा है।

3.3.3 'तीनों बंदर बापू के' कविता की विशेषताएँ।

1. नागार्जुन की यह कविता स्वातंत्र्योत्तर भारतीय राजनीतिक अव्यवस्था को दर्शाती है।
2. राजनीतिक व्यंग्य के लिहाज से यह एक महत्त्वपूर्ण कविता है।
3. यहाँ पर गांधी जी के शिष्यों तथा उनके सिध्दांतों पर चलने वाले उनके अनुयायिओं की पोल खोलने में नागार्जुन सफल रहे हैं।
4. गांधीजी के तीनों बंदरों को लेकर नटवरलाल चारों दिशा में फैले और अपने झूठ के जाल से दुनिया को फँसाकर सौ साल तक जीने का इरादा रखते हैं।
5. गांधी के भक्त उनके तीनों बंदरों को लेकर प्रचार करते हैं मगर उनकी कथनी और करनी में बहुत फर्क दिखाई देता है।
6. आझाद भारत के राजनेता, आज जनता से अलगाव रखकर गांधीजी को भूला रहे हैं।
7. व्यंग्यांत्मक लहजे में नागार्जुन इन नेताओं को परम ज्ञानी, ध्यानी कह कर उनकी पोल खोलने में सफल रहे है।
8. आज हर राजनेता बडे-बडे सेठों का हित देखते है। निजीकरण के बहाने पूँजीपतियों को और भी अमीर बनाने की राजनीति कवि ने बेजिझक सामने रखी है।

9. सत्ता के सुख की चमक सेठों राजनेताओं के गाल पर दिखाई देती है और ये भ्रष्टाचार की चमक सौ साल तक चलेगी ऐसा उन्हे विश्वास है।

10. आज गुरु का बनकर उसे भ्रष्टाचार की नई विद्या सिखाई जा रही है। ऐसे भ्रष्टाचारी राजनेता का असली चेहरा नागार्जुन अपने कविता के माध्यम से सामने लाते हैं।

11. बापू के तीनों बंदर - बूरा मत सुनो, बुरा मत देखो, बूरा मत बोलो ये संदेश देते है, मगर आज के राजनेता इन बंदरों का गलत उपयोग करके बूरा सुनकर, बुरा देखकर, बूरा बोलकर सफलता की ऊँचाई पर है। यह बडी दुख की बात कवि ने सामने रखी है।

12. कवि ने उसके समय के राजनीतिक सच्चाई को व्यंग्यात्मक लहजें में प्रस्तुत करते हुये भारत के राजनीति में बापूजी का योगदान अहम् दिखाया है। मगर आज गांधीजी के सिध्दांतों की बली चढाई जा रही है यह दिखाई देता है।

3.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न –

बहुविकल्पीय प्रश्न

1. तीनों बंदर ..... के है।

   अ) बापू ब) काका क) चाचा ड) मामा

2. तीनों बंदर बापू के कविता कवि ..... है।

   अ) महादेवी वर्मा ब) कुँवर नारायण क) नागार्जुन ड) निराला

3. बापू के भी ..... निकले तीनों बंदर बापू के।

   अ) मामा ब) बाबा क) ताऊ ड) चाचा

4. ..... के हित साध रहे है तीनों बंदर बापू के।

   अ) डॉक्टर ब) सेठ क) फकीर ड) बच्चों

5. गुरुओं के भी .....बने है तीनों बंदर बापू।

   अ) मित्र ब) शत्रू क) गुरु ड) पडोसी

3.5 पारिभाषिक शब्द, शब्दावली –

1. ताऊ - पिता के बडे भाई को ताऊ कहते है।
2. सर्वोदय - सबकी उन्नति, सब की प्रगति
3. नटवरलाल - ठगनेवाला

4. बरसी – मृतक का वार्षिक श्राध्द

5. सौवी – सौ वर्ष

6. झूल – वह चौकोर कपडा जो प्राय: शोभा के लिए घोडों, बैलों, हाथियों आदि की पीठ पर डाला जाता है।

7. मूँडना – सुक जाना (तार मुडना, लोहा मुडना)

8. चटकीला – रंगीन

9. हिकमत – बढिया, तरकीब, उत्तम युक्ति

10. बनाना – बनावट

3.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर –

1) बापू 2) नागार्जुन 3) ताऊ 4)सेठ 5) गुरु

3.7 सारांश

1. नागार्जुन की चर्चित यह लोकप्रिय व्यंग कविता है।

2. नागार्जुन जी ने तींनों बंदर बापू के इस कविता के माध्यम से वर्तमान राजनीति पर तीखें प्रहार किये है।

3. बापू जी के असली तीनों बंदर जो है उनका उद्देश बिलकुल अलग, शुध्द, सत्य, अहिंसा से युक्त है। लेकिन आज के राजनीति में अपनी प्रगति के लिए इन तीन बंदरों को झूठी कृति लिए उकसा रहे हैं।

4. राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के स्वराज, रामराज्य जैसे सपनों के भंग होने से नागार्जुन अपनी दुखी मनस्थिति को यहाँ प्रस्तुत करते है।

5. नागार्जुन ने गांधीवादी मूल्यों और आदर्शो की आड में सत्ताधारी नेताओं की कथनी और करनी के भेद को सामने रखा है।

6. राजनेता सत्ता से चिपके रहने के लिए गांधी जी के नाम का गलत उपयोग कर रहे है।

7. बापूजी के ये बंदर बुरा न देखो, बुरा न सुनो, बुरा ना बोलो, के सिध्दांतों को दर्शाते है। लेकिन आज भारत की राजनीति में बापू के तीनों बंदरों का सिर्फ खुर्सी पाने तक ही उपयोग किया है।

8. नागार्जुन ने इस कविता के माध्यम से राजनीतिक दलालों, नेताओं की पोल खोलनेवाले व्यंग्य का उपयोग किया है। तो दूसरी और राजनेताओं द्वारा शोषण किये जानेवाले जनता की व्यथा, का भी वर्णन किया है।

3.8 स्वाध्याय –

ससंदर्भ प्रश्न –

1. ''बापू के भी ताऊ निकले तीनों बंदर बापू के!
   सरल सूत्र उलझाऊ निकले तीनों बंदर बापू के!
   सचमुच जीवनदानी निकले तीनों बंदर बापू के!
   ज्ञानी निकले, ध्यानी निकले तीनों बंदर बापू के!
   लथल–गगन बिहारी निकले तीनों बंदर बापू के!''
2. ''बच्चे होंगे मालामाल
   खूब गलेगी उनकी दाल
   औरों के टपकेगी राल
   इनकी मगर तनेगी पाल
   मत पूछो तुम इनका हाल
   सर्वोदय के नटवरलाल।''

दीर्घोत्तरी प्रश्न –

1. 'तीनों बंदर बापू' के कविता का आशय लिखिए।
2. 'तीनों बंदर बापू' के कविता के माध्यम से कवि ने वर्तमान राजनीति पर कैसे प्रहार किया है।

3.9 क्षेत्रीय कार्य –

तीनों बंदर बापू के कविता मराठी में अनुवाद कीजिए।

3.10 अतिरिक्त अध्ययन –

1. नागार्जुन : कवि और कथाकार सत्यनारायण
2. नागार्जुन की कविता : अजय तिवारी

❑❑❑

इकाई 4

10. वह अनजान आदमी – अभिमन्यु अनंत

1.1 उद्देश्य

1.2 प्रस्तावना

1.3 विषय विवेचन

1.3.1 अभिमन्यु अनंत का परिचय

1.3.2 'वह अनजान आदमी' कविता का परिचय

1.3.3 'वह अनजान आदमी' कविता की समीक्षा

1.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

1.5 पारिभाषिक शब्द-शब्दार्थ

1.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

1.7 सारांश

1.8 स्वाध्याय

1.9 क्षेत्रीय कार्य

1.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1.1 उद्देश्य

इस इकाई को पढने के बाद आप

- अभिमन्यु अनंत के व्यक्तित्त्व से परिचित होंगे
- 'वह अनजान आदमी' कविता के भावार्थ से परिचित होंगे
- प्रवासी भारतीय साहित्य से परिचित होंगे
- मॉरिशस में बसे भारतवंशियों के संघर्ष से रूबरू होंगे

1.2 प्रस्तावना

पिछले कुछ दशकों से विदेशों में जो हिंदी साहित्य का लेखन हुआ है, उससे हिंदी का वैश्विक स्वरुप काफी विकसित हुआ है। इसमें प्रवासी साहित्यकारों का एक विशिष्ट योगदान रहा है। यदि आज विश्व की

सर्वाधिक बोली जाने वाली पाँच भाषाओं में हिंदी का नाम सम्मान के साथ लिया जाता है तो इसमें कोई दोराय नहीं है कि उसका श्रेय उस विशाल प्रवासी समुदाय को जाता है जो भारत से इतर देशों में जाकर बसने के बावजूद हिंदी को अपनाए हुए हैं, उसे जिंदा रखे हैं। अपनी भाषा और जमीन से जुड़े रहे। घर से दूर रहने की पीड़ा को झेलते हुए भी साहित्य के माध्यम से अपने देश की संस्कृति को जीवित और सुरक्षित रखे हैं।

प्रवासी साहित्य के अंतर्गत वे सारी साहित्यिक विधाएँ मौजूद हैं जिनके द्वारा साहित्य की जड़ आज इतनी समृद्ध हुई है। इन प्रवासी साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं के माध्यम से भारतीय संस्कृति और परंपरा को न केवल सुरक्षित रखा है बल्कि उसे एक नया आयाम भी प्रदान किया है। मॉरिशस के प्रसिद्ध हिंदी लेखक अभिमन्यु अनंत भी उन्हीं में से एक हैं। जिन्होंने अपनी रचनाओं के दम पर हिंदी साहित्य को पूरे विश्व में प्रतिष्ठित किया है। प्रवासी भारतीय साहित्यकारों में तेजेंद्र शर्मा, शैलेजा सक्सेना, अनीता वर्मा, पुष्पिता अवस्थी, राज हिरामण, दिव्या माथुर आदि का उलेख किया जा सकता है।

1.3 विषय विवेचन:

1.3.1 अभिमन्यु अनंत का परिचय:

हिंदी जगत् के शिरोमणि तथा मॉरिशस के महान कथा-शिल्पी अभिमन्यु अनत का जन्म 9 अगस्त, 1937 ई. को त्रिओले, मॉरिशस में एक गरीब परिवार में हुआ था। मॉरिशस निवासी और वहीं पर पले-बढे अभिमन्यु अनंत ने हिन्दी साहित्य की श्रीवृद्धि में विशेष योग दिया है उनका मूल भारत की मिट्टी है उनके पूर्वज अन्य भारतीयों के साथ अंगेजों द्वारा वहां गन्ने की खेती में श्रम करने के लिए लाए गए थे मज़दूरों के रूप में गये भारतीय अनत: वहीं पर बस गए। मॉरीशस काल-क्रम से अंग्रज़ों के शासन से मुक्त हुआ। भारतीय जो श्रमिक बनकर वहाँ गए थे, उनकी दूसरी-तीसरी पीढ़ियाँ पढ़ी-लिखी और सम्पन्न हैं। उनका जीवन स्तर बहुत ऊँचा है। अभिमन्यु की भारतीय पृष्ठभूमि ने उन्हें हिन्दी की सेवा के लिए उत्साहित किया और उन्होंने अपने पूर्वजों की मातृभूमि का ऋण अच्छी तरह से चुकाया। मॉरिशस के महान् कथा-शिल्पी अभिमन्यु अनंत ने हिन्दी कविता को एक नया आयाम दिया है। उनकी कविताओं का भारत के हिन्दी साहित्य में भी महत्त्वपूर्ण स्थान है।

घर पर हिंदी का वातावरण होने के कारण उनमें बचपन से ही हिंदी पढ़ने-लिखने का शौक उत्पन्न हो गया। हिंदी साहित्य के क्षेत्र में अभिमन्यु अनंत का पदार्पण पहले पहल कहानीकार के रूप में हुआ था जब पहली बार उनकी कहानी 'रानी' पत्रिका में प्रकाशित हुई थी। तब से वे निरंतर लिखते गये।

अभिमन्यु अनत एक बहुमुखी प्रतिभा सम्पन्न लेखक हैं। वे एक साथ कवि, नाटककार और कथा लेखक तीनों हैं। अभिमन्यु अनत ने अपनी प्रतिभा के द्वारा हिंदी कविता को एक नयी दिशा दी है। जिसके कारण हिंदी कविताएँ न केवल मॉरिशस में बल्कि पूरे विश्व में अपनी काया विस्तारित करती चली जा रही है। इनकी कविताओं में वैविध्यपन साफ झलकता है। व्यवस्था के खिलाफ विद्रोह, सर्वहारा वर्ग के प्रति

सहानुभूति, शोषण के प्रति आक्रोश, अभिमन्यु अनंत के कविताओं की विशेषता रही है। अभिमन्यु अनंत को अनेक महान् पुरस्कारों से सम्मानित किया गया जैसे- साहित्य अकादमी, सोवियत लैंड नेहरु पुरस्कार, मैथिलीशरण गुप्त सम्मान, यशपाल पुरस्कार, जनसंस्कृति सम्मान, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान पुरस्कार आदि साहित्यकार अभिमन्यु अनंत का सोमवार, 4 जून, 2018 को निधन हो गया। उनकी आयु 81 वर्ष थी और वह लंबे समय से अस्वस्थ थे।

कविता संकलन

- अब तक अनंत के चार कविता संकलन प्रकाशित हो चुके हैं-
    1. कैक्टस के दांत
    2. नागफनी में उलझी सांसें
    3. एक डायरी बयान
    4. गुलमोहर खौल उठा
- अनंत द्वारा संपादित कविता संकलन हैं :
    1. मॉरिशस की हिन्दी कविता
    2. मॉरिशस के नौ हिन्दी कवि

नाटक –

1. विरोध
2. तीन दृश्य
3. गूँगा इतिहास
4. रोक दो कान्हा
5. देख कबीरा हांसी

कहानी संग्रह–

1. एक थाली समन्दर
2. खामोशी के चीत्कार
3. इंसान और मशीन
4. वह बीच का आदमी
5. जब कल आएगा यमराज

- इनके छोटे-बड़े उपन्यासों की संख्या पैंतीस है। कुछ प्रसिद्ध नाम नीचे दिए जा रहे हैं-

1. लहरों की बेटी
2. मार्क ट्वेन का स्वर्ग
3. फैसला आपका
4. मुड़िया पहाड़ बोल उठा
5. और नदी बहती रही
6. आन्दोलन
7. एक बीघा प्यार
8. जम गया सूरज
9. तीसरे किनारे पर
10. चौथा प्राणी
11. लाल पसीना
12. तपती दोपहरी
13. कुहासे का दायरा
14. शेफाली

1.3.2 'वह अनजान आदमी' कविता का परिचय :–

अभिमन्यु अनंत ने अपनी कविताओं में अधिकतर मजदूरों के शोषण, अन्याय, अत्याचार तथा दमन के खिलाफ आवाज बुलंद किया है, जिसका उदाहरण हमें प्रस्तुत कविता के माध्यम से दिखाई देता है भारत में सन् 1830 में ब्रिटिश सरकार की नीतियों के कारण कई हजार भारतीय बेरोजगार हो गए। इन भारतीय मजदूरों को सन् 1834 में आकर्षक प्रलोभन देकर (शर्तबन्दी प्रथा के अन्तर्गत) सर्वप्रथम मॉरिशस ले जाया गया। ये भारतीय मजदूर भारत के बिहार, उत्तर प्रदेश, मद्रास, हैदराबाद, मुम्बई और कलकत्ता आदि शहरों के रहने वाले थे। इन मजदूरों को 'गिरमिटिया' कह कर भी संबोधित किया गया। मॉरिशस में इन लोगों से 14-15 घण्टें कड़ी मेहनत करवायी जाती थी। लेकिन आशाजनक बात यह थी कि इन मजदूरों में एकता थी। इस कारण यह सब रात में 'बैठकों' में मिलते थे। इन बैठकों में ही यह अपने धर्म व संस्कृति पर विचार–विमर्श करते थे। ज्यादा पढ़ा–लिखा न होने के कारण यह थोड़ी–बहुत रामायण, महाभारत, सत्यनारायण कथा आदि पढ लेते थे और लोकगीतों के गायन द्वारा अपना मनोरंजन कर लेते थे। यह लोग मिलकर विभिन्न तीज–त्योहारों जैसे–दिवाली, शिवरात्रि, जन्माष्टमी, रामनवमी आदि बड़ी धूमधाम से मनाते। साथ ही नामकरण, यज्ञोपवीत, विवाह, कर्ण छेदन आदि संस्कार भी पूरी श्रद्धा–भक्ति से पूरे करते। इस प्रकार ये भारतीय अपनी लोकरीतियों और रिवाजों को यथासम्भव पूरा करते रहे।

अभिमन्यु अनंत ने अपनी कविता 'वह अनजान आदमी' के माध्यम से अप्रवासी समाज के अनुभव और यथार्थता को बड़े मार्मिक ढ़ंग से चित्रित किया है। कभी–कभी इतिहासकारों से भी इतिहास की कुछ

महत्त्वपूर्ण घटनाएँ छूट जाती हैं जिन्हें संपूर्ण करने का दायित्त्व एक साहित्यकार को उठाना पड़ता है। अभिमन्यु अनंत को भी यह दायित्व उठाना पड़ा ओर मॉरिशस के इतिहास में घटीत उस समय को दिखाना पड़ा जिसे कई बार इतिहासकारों ने महत्त्वपूर्ण नहीं मानकर छोड़ दिया था। वर्षों पूर्व भारत से गये गिरमिटिया मजदूर किस प्रकार मॉरिशस के जमीन पर अपनी जड़ और अस्मिता की तलाश में भटक रहे हैं उसकी व्याख्या उन्होंने अपनी इस कविता के माध्यम से की है।

1.3.4 'वह अनजान आदमी' कविता की समीक्षा :–

अभिमन्यु अनंत अपने खुद के जीवन में एक मजदूर रह चुके हैं; इसलिए उनकी कविताओं में मजदूरों के प्रति संवेदनात्मक भाव की उपज स्वाभाविक है। 'वह अनजान आदमी' कविता इस बात की साक्षी है। इस कविता का मुख्य स्वर मॉरिशस में बसी उन तमाम श्रमजीवियों की वेदना है जिसको कवि ने बड़े ही मार्मिक ढ़ंग से अभिव्यक्त किया है। वर्गभेद को उन्होंने नजदीक से देखा और भोगा है तथा साथ ही व्यवस्था की चालबाजियों को भी वे खूब समझते हैं –

''आज अचानक
हवा के झोंकों से
झरझरा कर झरते देखा
गुलमोहर की पंखुड़ियों को
उन्हें खामोशी में झुलसते छटपटाते देखा
धरती पर धधक रहे अंगारों पर
फिर याद आ गया अचानक
वह अनलिखा इतिहास मुझे
इतिहास की राख में छुपी
गन्ने के खेतों की वे आहें याद आ गयी''

अभिमन्यु अनंत को भी यह दायित्त्व उठाना पड़ा ओर मॉरिशस के इतिहास में घटी उस समय को दिखाना पड़ा जिसे कई बार इतिहासकारों ने महत्त्वपूर्ण नहीं मान कर छोड़ दिया था। वर्षों पूर्व भारत से गये गिरमिटिया मजदूर किस कदर मॉरिशस के जमीन पर अपनी जड़ और अस्मिता की तलाश में भटक रहे हैं उसकी व्याख्या उन्होंने अपनी इस कविता के माध्यम से किया है –

'जिन्हें सुना बार–बार
द्वीप का प्रहरी मुड़िया पहाड़
दहल कर काँपा बार–बार
डरता था वह भीगे कोड़ों की बौछारों में
इसलिए मौन साधे रहा'

वास्तव में यह कविता प्रलोभन से लायी गयी उन तमाम भारतीय अप्रवासी मजदूरों की, उनके पूर्वजों की संघर्ष-गाथा को तथा अन्याय और अत्याचार से मुक्ति पाने की छटपटाहट को दर्शाती है, जिनकी मृत्यु इतिहास की मृत्यु थी। अभिमन्यु अनत की दृष्टि समकालीन बेरोजगारी एवं आर्थिक संकटों की ओर भी गई है। इसलिए उन्होंने व्यवस्था के ऊपर व्यंग्य बाण कसा है और उस गरीब समुदाय को दिखाया है जो इस व्यवस्था के द्वारा सताये जा रहे हैं। भूखे पेट दिन रात काम करने की व्यथा, वर्तमान की आर्थिक संकट से उपजी यथार्थता को बड़ी जीवंतता के साथ रेखांकित किया है -

''आज जहाँ खामोशी चीत्कारती है
हरियालियों के बीच की तपती दोपहरी में
आज अचानक फिर याद आ गये
मजदूरों के माथे के माटी के वे टीके
नंगी छाती पर चमकती बूंदे
और धधकते सूरज के ताप से
गुलमोहर की पंखुड़ियां ही जैसे
उनके कोमल सपने भी हुए थे राख''

वास्तव में अभिमन्यु अनंत की कविताएँ अपने आप में संपूर्ण हैं। उनकी कविताएँ आम आदमी के जीवन से सरोकार रखने वाली कविताएँ हैं। जो समाज के शोषित, पीड़ित एवं निर्धन आदमी के दुख-दर्द को अभिव्यक्ति देती हैं। साधनहीन मजदूरों के प्रति पूंजीपतियों के कटुता को व्यंग्यपूर्ण ढंग से व्याख्यायित करती है। साथ ही साथ इनकी कविताओं में निर्धन वर्ग की आर्थिक विपन्नता तथा विवशता की झांकियाँ भी हैं। मॉरिशस में बसे भारतवंशियों के सामूहिक अचेतन में वे स्मृतियाँ आज भी संचित हैं; जिनका संबंध भारत भूमि से उन्हें जबरन एक वीरान द्वीप पर लाकर छोड़ दिए जाने से है और जिनमें वह सारी संघर्षगाथा सुरक्षित है कि कैसे खून-पसीना सचमुच एक करके इन भारतवंशियों ने जिजीविषा की उत्तरजीविता प्रमाणित की वे जिए क्योंकि उन्होंने संघर्ष किया वे बचे क्योंकि वे सर्वोतम थे लेकिन यह जीवन संघर्ष सदा-सदा के लिए सामूहिक स्मृति में दर्ज हो गया अभिमन्यु अनंत इसे अभिव्यक्त करने वाले सबसे प्रखर वक्ता हैं, जिसका उदाहरण हमें इन पंक्तियों में देखने को मिलता है-

''आज अचानक
हिन्द महासागर की लहरों से तैर कर आयी
गंगा की स्वर-लहरी को सुन
फिर याद आ गया मुझे वह काला इतिहास
उसका बिसारा हुआ

वह अनजान अप्रवासी
देश के अन्धे इतिहास ने न तो उसे देखा था
न तो गूंगे इतिहास ने
कभी सुनाई उसकी पुरी कहानी हमें
न ही बहरे इतिहास ने सुना था उसके चीत्कारों को
जिसकी इस माटी पर बही थी पहली बूँद पसीने की
जिसने चट्टानों के बीच हरियाली उगायी थी
नंगी पीठों पर सह कर बाँसों की बौछार
बहा-बहाकर लाल पसीना
वह पहला गिरमिटया इस माटी का बेटा
जो मेरा भी अपना था तेरा भी अपना''

इस प्रकार अभिमन्यु अनंत ने इस कविता के माध्यम से अप्रवासी समाज के अनुभव और यथार्थता को बड़े मार्मिक ढ़ंग से चित्रित किया है। उनकी कविता उत्पीड़ित समाज के उन मुश्किल भरे जीवन संघर्ष की ओर संकेत है, जिससे आज का समकालीन समाज जूझ रहा है। वर्षों पूर्व मुख्यधारा का समाज गरीबों के साथ जिस प्रकार अमानवीय व्यवहार कर रहा था वह बर्ताव तथा रवैया आज भी हमारे समाज में मौजूद हैं। इसके अतिरिक्त सांस्कृतिक अस्मिता, आर्थिक विषमता, राजनीतिक घपलेबाजी, सामाजिक न्याय से वंचित नागरिक, ऊचें पदों पर अयोग्य व्यक्तियों की नियुक्ति तथा अपने देश और लोगों से अलग होने की विडबंना आदि कुछ ऐसे सवाल हैं जो उनकी कविता को दूसरे कविताओं से अलग कर विशेष बना देती हैं। उनकी कविताओं की दूसरी एवं महत्त्वपूर्ण विशेषता उनकी भाषा है, वास्तव में हिंदी भाषा के प्रति उनका लगाव उनकी कविताओं में साफ-साफ नजर आता है।

1.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

1. अभिमन्यु अनंत का जन्म कब हुआ?

   अ) सन् 1937 ब) सन् 1980 क) सन् 1960 ड) सन् 1961

2. अभिमन्यु अनंत की मृत्यु कब हुई?

   अ) सन् 2002 ब) सन् 2018 क) सन् 2020 ड) सन् 2022

3. अभिमन्यु अनंत के पूर्वज मॉरिशस क्यों लाए गए थे?

   अ) गन्ने की खेती करने ब) चाय की खेती करने क) घुमने ड) माल बेचने

4. अभिमन्यु अनंत का जन्म कहाँ हुआ?

अ) नेपाल ब) श्रीलंका क) भारत ड) मॉरिशस

5. वर्षों पूर्व भारत से गए मजदूरों को क्या कहा गया?

अ) बेगार ब) गिरमिटिया क) कुली ड) श्रमिक

1.5 पारिभाषिक शब्द– शब्दार्थ

जमींदार– भू–स्वामी, अनाथ– लावारिस, असहाय, पतोहू– बहू, मृतप्राय– जो मरे हुए के समान हो, प्रयत्न– कोशिश, अदालत– न्यायालय, स्मरण– याद करना, पश्चाताप– पछतावा

1.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

1– अ, 2– ब, 3– अ, 4– ड, 5– बी

1.7 सारांश

1. अभिमन्यु अनंत को यों तो मॉरिशस का हिन्दी कथा सम्राट माना जाता है; लेकिन सही अर्थ में प्रवासी हिन्दी कविता के शीर्षस्थ कवि है।

2. अभिमन्यु अनंत की कविताएँ अपने आप में संपूर्ण हैं। उनकी कविताएँ आम आदमी के जीवन से सरोकार रखने वाली कविताएँ हैं। जो समाज के शोषित, पीड़ित एवं निर्धन आदमी के दुख–दर्द को अभिव्यक्ति देती हैं। साधनहीन मजदूरों के प्रति पूंजीपतियों के कटुता को व्यंग्यपूर्ण ढंग से व्याख्यायित करती है। साथ ही साथ इनकी कविताओं में निर्धन वर्ग की आर्थिक विपन्नता तथा विवशता की झांकियाँ भी हैं।

3. उनकी कविता उत्पीड़ित समाज के उन मुश्किल भरे जीवन संघर्ष की ओर संकेत है जिससे आज का समकालीन समाज जूझ रहा है। वर्षों पूर्व मुख्यधारा का समाज गरीबों के साथ जिस प्रकार अमानवीय व्यवहार कर रहा था वह बर्ताव तथा रवैया आज भी हमारे समाज में मौजूद हैं।

1.8 स्वाध्याय

अ) संदर्भ के प्रश्न

1) आज अचानक
हवा के झोंकों से
झरझरा कर झरते देखा
गुलमोहर की पंखुड़ियों को
उन्हें खामोशी में झुलसते छटपटाते देखा
धरती पर धधक रहे अंगारों पर

फिर याद आ गया अचानक
वह अनलिखा इतिहास मुझे

2. इतिहास की राख में छुपी
गन्ने के खेतों की वे आहें याद आ गयी
जिन्हें सुना बार-बार
द्वीप का प्रहरी मुड़िया पहाड़
दहल कर काँपा बार-बार
डरता था वह भीगे कोड़ो की बौछारों में
इसलिए मौन साधे रहा

3. आज जहाँ खामोशी चीत्कारती है
हिरयालियों के बीच की तपती दोपहरी में
आज अचानक फिर याद आ गये
मजदूरों के माथे के माटी के वे टीके
नंगी छाती पर चमकती बूंदे
और धधकते सूरज के ताप से
गुलमोहर की पंखुड़ियां ही जैसे
उनके कोमल सपने भी हुए थे राख

4. आज अचानक
हिन्द महासागर की लहरों से तैर कर आयी
गंगा की स्वर-लहरी को सुन
फिर याद आ गया मुझे वह काला इतिहास
उसका बिसारा हुआ
वह अनजान अप्रवासी

5. देश के अन्धे इतिहास ने न तो उसे देखा था
न तो गूंगे इतिहास ने
कभी सुनाई उसकी पुरी कहानी हमें
न ही बहरे इतिहास ने सुना था उसके चीत्कारों को
जिसकी इस माटी पर बही थी पहली बूँद पसीने की
जिसने चट्टानो के बीच हरियाली उगायी थी

नंगी पीठों पर सह कर बाँसों की बौछार
बहा-बहाकर लाल पसीना
वह पहला गिरमिटया इस माटी का बेटा
जो मेरा भी अपना था तेरा भी अपना

आ) दीर्घोत्तरी प्रश्न

1. 'वह अनजान आदमी' कविता के माध्यम से कवि ने अप्रवासी समाज के अनुभव और यथार्थता को बड़े मार्मिक ढ़ंग से चित्रित किया है। कथन की समीक्षा कीजिए
2. 'वह अनजान आदमी' कविता का उद्देश्य स्पष्ट कीजिए

1.9 क्षेत्रीय कार्य

नेदरलंड की प्रवासी भारतीय साहित्यकार पुष्पिता अवस्थी की कविताओं को पढ़िए

1.10 अतिरिक्त अध्ययन

हिंदी प्रवासी भारतीय साहित्यकारों की सूची तैयार कीजिए

11. 'सूरज पाना है'– परशुराम शुक्ल

1.1 उद्देश्य

1.2 प्रस्तावना

1.3 विषय विवेचन

1.3.1 परशुराम शुक्ल का परिचय

1.3.2 'सूरज पाना है' कविता का परिचय

1.3.3 'सूरज पाना है' कविता की समीक्षा

1.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

1.5 पारिभाषिक शब्द–शब्दार्थ

1.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

1.7 सारांश

1.8 स्वाध्याय

1.9 क्षेत्रीय कार्य

1.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1.1 उद्देश्य

इस इकाई को पढने के बाद आप

- परशुराम शुक्ल के बाल साहित्य से परिचित होंगे।
- 'सूरज पाना है' कविता का भावार्थ समझ सकेंगे।
- किशोर बच्चों के मनोविज्ञान को जान सकेंगे।
- बाल साहित्य की आवश्यकता पर जोर देंगे।

1.2 प्रस्तावना

बाल कविता हिन्दी बाल साहित्य की एक महत्त्वपूर्ण विधा है। इसकी उत्पत्ति बाल उपन्यासों, बाल नाटकों, बाल कहानियों एवं बाल साहित्य की अन्य सभी विधाओं से पहले हुई थी। वास्तव में बाल–साहित्य की उत्पत्ति उसी समय हो गयी थी, जब माँ अपने बच्चे को देख कर कुछ गुनगुनायी थी अथवा उसने बेटे को सुलाने के लिए लयबद्ध लोरी सुनायी थी। बाल कविता में सर्वाधिक रस होता है। इस रस में

स्वाद होता है एवं यह स्वाद आनन्द प्रदान करता है और वह भी अलौकिक आनन्द। इस आधार पर बाल कविता को व्यक्ति के व्यक्तित्त्व के निर्माण की नींव का आधार कहा जा सकता है। माँ द्वारा बच्चे को गोद में लेकर सुनायी गयी लोरियाँ उसे सहृदय और संवेदनशील बनाती हैं। इनके अभाव में बच्चा क्रूर, निर्दयी और क्रोधी बन सकता है।

''बाल कविताओं का स्वरूप परिवर्तनशील होता है क्योंकि अलग-अलग आयुवर्ग के बच्चों के लिए अलग-अलग स्वरूप वाली बाल कविताएँ उपयोगी होती है। बाल कविता का आरम्भ शिशुगीतों से होता है। ये शिशुगीत ढाई वर्ष से लेकर पाँच वर्ष तक के बच्चों के लिए होते हैं। शिशुगीतों को बाल कविता के ऐसे स्वरूप के रूप में पारिभाषित किया जा सकता है, जिसका सृजन ढाई वर्ष से पाँच वर्ष तक की आयु के शिशुओं के लिए किया गया हो, जिसमें चार से लेकर आठ तक अत्यन्त सरल शब्दों से युक्त पंक्तियाँ हों, जिसका उद्देश्य विशुद्ध रूप से शिशु का स्वस्थ मनोरंजन हो, जिसे बच्चे सरलता से गा सकते हों तथा जिसकी भाषा और भावों में इतना आकर्षण हो कि शिशुओं के मस्तिष्क में एक स्पष्ट चित्र उभर आता हो।'' बाल कविता की शिशुगीत से आरम्भ होने वाली यात्रा किशोर कविता तक पहुँचती है। यह इसका अन्तिम पड़ाव है। किशोर कविता बारहवर्ष से अधिक की आयु के बच्चों के लिए होती है।

1.3 विषय विवेचन:

1.3.1 डॉ. परशुराम शुक्ल का परिचय:

श्री परशुराम शुक्ल का जन्म उत्तर प्रदेश के कानपुर ज़िले के सैबसू गाँव में 6 जून 1947 को हुआ। 2 बहनों के बीच श्री शुक्ल अकेले भाई थे। प्रारंभिक शिक्षा सदर बाजार जूनियर हाई स्कूल और मारवाड़ी इंटर कॉलेज, कानपुर से पूरी की। किशोरावस्था में ही पिता श्री मंगली प्रसाद शुक्ल के देहांत के कारण परिवार कठिन दौर से गुज़रा। श्री शुक्ल ने न केवल अकेले ही पूरे परिवार की ज़िम्मेदारी उठायी, बल्कि साथ साथ कड़ी मेहनत से अपनी शिक्षा भी जारी रखी। प्रकाशन : इन्द्रधनुषी बाल कहानियाँ, जंगल की बाल कहानियाँ, प्राचीन ग्रन्थों की बाल कहानियाँ, शिक्षाप्रद बाल कहानियाँ, परियों की बाल कहानियाँ, लोक कथाओं पर आधारित बाल कहानियाँ आदि 36 बाल कहानी संग्रह तथा 250 से अधिक अन्य पुस्तकें एवं 6000 से अधिक स्फुट रचनाएँ प्रकाशित। अनेक रचनाओं का भारत की विभिन्न भाषाओं में अनुवादें

पुरस्कार/सम्मान : समाज कल्याण मंत्रालय, पर्यावरण एवं वन मंत्रालय, मानव संसाधन एवं विकास मंत्रालय, भारत सरकार, नई दिल्ली, चिल्ड्रेन्स बुक ट्रस्ट ऑफ इंडिया, नई दिल्ली, हिन्दी अकादमी, हैदराबाद सहित अनेक संस्थाओं द्वारा सम्मानित एवं पुरस्कृत।

विशेष : शांति निकेतन (प. बंगाल), शिवाजी विश्वविद्यालय और मुंबई विश्वविद्यालय (महाराष्ट्र), कुरुक्षेत्र विश्वविद्यालय (हरियाणा), बरकतउल्लाह विश्वविद्यालय और जीवाजी विश्वविद्यालय (म.प्र.) सहित भारत के अनेक विश्वविद्यालयों में इनके साहित्य पर शोधकार्य संपन्न हुआ है।

1.3.2 'सूरज पाना है' कविता का परिचय :–

'सूरज पाना है' पूरी तरह किशोर कविता है। यह कविता बारह वर्ष की आयु से लेकर अठारह वर्ष तक के बच्चों के लिए हैं। इस कविता में सामान्य बाल कविता के समान भरपूर मनोरंजन और नैतिक शिक्षा है। बाल कविता का प्राण तत्त्व–मनोरंजन होता है। बाल कविताओं में यदि मनोरंजन नहीं है, तो बच्चे इसमें रुचि नहीं लेंगे, अतः कविता लिखना निरर्थक हो जाएगा। इस तथ्य को ध्यान में रखते हुए कवि ने कविता का लेखन किया है

'सूरज पाना है' इस कविता का मूल उद्देश्य नैतिक शिक्षा है। किन्तु यह नैतिक शिक्षा बोझिल नहीं लगती। बच्चों के लिए, चाहे वे किशोर ही क्यों न हों, नैतिक शिक्षा दवाई की गोली की तरह होती है। यही कारण है कि कवि ने नैतिक शिक्षा रूपी कड़वी गोलियों को मनोरंजन रूपी चाशनी के भीतर रख कर मसुगर–कोटेड टेबलेटफ के समान परोसने का कार्य किया है।

1.3.4 'सूरज पाना है' कविता की समीक्षा :–

परशुराम शुक्ल जी मूलतः हमारे देश के जाने–माने बाल साहित्यकार है यूं तो उन्होंने आदिवासी साहित्य लिखा परंतु उनकी पहचान बाल साहित्यकार के रूप में बहुत ज्यादा हुई उन्होंने हिंदी के बाल उपन्यास, बाल कहानियां, बाल कविताएं, बाल नाटक, बाल धारावाहिक लिखे हैं डॉ. परशुराम शुक्ल ने बाल सत्सई भी लिखी है।

'सूरज पाना है' यह उनकी बड़ी ही सुन्दर और प्रेरणादायी कविता है। जब बच्चा बड़ा होने लगता है तो घर के दादा–दादी, नाना–नानी से या घर के अन्य बुजुर्गों से इस संसार को समझने की कोशिश करता है। जिंदगी की लड़ाई सीखने के लिए वह कहानियों के माध्यम से इस संसार को समझता है परंतु परशुराम शुक्ल जी एक अलग दुनिया में बच्चों को ले जाना चाहते हैं वह एक अलग प्रकार की मानसिकता इसमें दर्शाना चाहते हैं इसीलिए वह बच्चा, आज ना राजा रानी की कहानी सुनना चाहता है; ना परियों की कहानी जानना चाहता है; क्योंकि, उसके आसपास विश्व का हर गरीब से गरीब और अमीर से अमीर देश चांद पर क्या है। यह ढूंढने की कोशिश कर रहा है; सूरज पर क्या है यह जानने की कोशिश कर रहा है।

''मैं नन्हा सा अंकुर मुझको, सूरज पाना है।
आँधी पानी तेज हवाएँ, शीत लहर तूफानी।
जाना मुझको दूर बहुत है, राह बड़ी अनजानी।
चारों तरफ बवंडर फिर भी, जड़ें जमाना है।। सूरज.....''

एक नन्हे से अंकुर के माध्यम से सूरज पाने की लालसा उत्पन्न होना, यह भाव शुक्ल जी ने बहुत सुंदर तरीके से हमारे सामने रखने का प्रयास किया हैं जैसे हम अनाज (फसल) आने के लिए पहले अनाज जमीन में बोते हैं; एक छोटा सा अनाज का दाना, वह फुटकर अंकुर बनता है, फिर पौधा, फिर पेड़, फिर बहुत बड़ा पेड़ बनता है उसी की कल्पना करते हुए मैं छोटा सा अंकुर इस जमीन से अभी–अभी बाहर निकला हूं

मेरी कल्पना, आशा, सपने बहुत बड़े हैं मुझको सूरज पाना है उसके लिए तेज आंधी आए, हवाएं या फिर चाहे कितनी भी मुसीबत आए लेकिन तूफानी लेकिन हर तूफान का मुझको सामना करना है मेरे लिए राह बहुत कठिन है, अंजान है, बहुत दूर भी है परंतु, मैंने ठान लिया है; इस जमाने में जड़े जमाना है; क्योंकि मुझे मेरी पहचान बनानी है इस जमाने को दिखाना है कि मैं देश के कुछ काम आ सकता हूं, कुछ कर सकता हूं मुझे मेरी पहचान बनानी है; इसलिए मुझे सूरज पाना है एक छोटे से अंकुर के माध्यम से इस तरह एक बच्चा इस समाज को समझता है, बड़े-बड़े सपने देखता है

बच्चा यदि सशक्त रहा तो, वह एक नए जमाने की, नए देश की, नए चैतन्य की कल्पना उत्पन्न कर सकता है यही कवि इस माध्यम से बताना चाहते हैं

''फूल हमेशा कभी खिले बस, एक बार खिलता है।

यह जीवन ऐसा जीवन जो, एक बार मिलता है।

इस छोटे से जीवन में कुछ, कर दिखलाना है।। सूरज.....''

कवि ने कहा है यह जीवन एक बार ही मिलता है, कोई पुनर्जन्म नहीं होता यह जीवन जो मिला है उसमें मुझे कुछ करके दिखाना है, मुझे सूरज पाना है; क्योंकि यह जीवन मुझे एक बार मिला है; वह बार-बार नहीं मिलेगा इस छोटे से जीवन में मुझे कुछ अलग करके दिखाना है और मुझे सूरज पाना है ।

''मेरे जैसे और बहुत से, अंकुर जग में होंगे।

अंधकार से घबराये वे, सहमे सहमे होंगे।

इनके भीतर कुछ करने की, अलख जगाना है ।। सूरज.....''

यहां पर उस बच्चे के मन में एक और तिलमिलाहट है कि, मेरे सपने साकार करने के लिए मेरे पास मेरे माता-पिता है, पोषक वातावरण है, लेकिन मेरे जैसे और भी अंकुर होंगे जो अंधकार में जीवन जी रहे हैं जिन्हें बाहर निकलने का कोई मौका नहीं मिल रहा जिन्हें अपने सपने पूरा करने का कोई रास्ता दिखाई नहीं दे रहा जिन्हें अपना सपना पूरा करने का कोई माध्यम उपलब्ध नहीं ऐसे कितने सहमे-सहमे लोग होंगे जिनके भीतर एक इच्छा होगी मुझे उनके अंदर एक अलख जगाना है, प्रकाश जगाना है ऐसे भटके हुए लोगों को मुझे रास्ता दिखाना है, और मुझे सूरज पाना है।

''धरती हरी भरी होगी जब, अंकुर महकेंगे।

इनके मन में रहने वाले, पक्षी चहकेंगे।

मैंने ठान लिया है सारा, जग महकाना है।। सूरज.....

मैं नन्हा सा अंकुर मुझको, सूरज पाना है।।''

यह धरती हरी-भरी तब होगी, जब अंकुर महकेंगे धरती हरे वस्त्र तब धारण करेगी, जब वह पूरी तरह से हरी-भरी बनेगी वैसे ही इस धरती का नन्हा सा बालक सशक्त होगा, होशियार होगा, उसे अलग-अलग

प्रश्न आते होंगे, समझने-समझाने की शक्ति यदि उसमें होगी तो ही वह प्रश्न करेगा इसीलिए कि इनमें अंकुर महकेंगे, उनके मन में रहने वाले सभी पंछी भी चहकेंगे यदि यह नन्हा सा बालक दृढ़ रहा तो देश में टिकेगा अपना स्थान विश्व में उत्पन्न करेगा जब महकेगा तो यह नन्हा सा अंकुर, फुल बनकर कुछ करके दिखाने की चाह रखेगा इसीलिए इस छोटे से बालक को ना परियों की कथाएं सुननी है, ना काल्पनिक कथाएं सुननी है, उसे तो इस धरती को जानना है, इस धरती को समझना है।

1.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

1. परशुराम शुक्ल जी का जन्म कब हुआ?

   अ) सन् 1950 ब) सन् 1971 क) सन् 1947 ड) सन् 1961

2. परशुराम शुक्ल जी का जन्म कहाँ हुआ?

   अ) कानपुर ब) जयपुर क) उदयपुर ड) नागपुर

3. परशुराम शुक्ल जी के पिता का नाम क्या है?

   अ) मंगलीप्रसाद ब) जयशंकर प्रसाद क) भीम ड) मंगलेश

4. 'सूरज पाना है' किसके द्वारा लिखित कविता है?

   अ) परशुराम शुक्ल ब) निर्मला पुतुल क) प्रसाद ड) अभिमन्यु अनंत

5. 'सूरज पाना है' कविता का मूल उद्देश्य क्या है?

   अ) नैतिक शिक्षा ब) मनोरंजन क) आनंद प्राप्ति ड) खेल सीखाना

1.5 पारिभाषिक शब्द- शब्दार्थ

नन्हा- छोटा, अंकुर- पल्लव, आँधी- तूफ़ान, शीत- ठंडी, राह- रास्ता, अनजानी- अपरिचित, बवंडर- तेज हवा, अलख- प्रकाश, चहकना- खुशी में बोलना, महकना- अच्छी सुगंध

1.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

1- क, 2- अ, 3- अ, 4- अ, 5- अ

1.7 सारांश

1. हिन्दी बाल साहित्य में बहुत बड़ी संख्या में बाल कविताओं का सृजन किया गया है। किशोर कविता का सृजन किशोर बच्चों के मनोविज्ञान को ध्यान में रख कर किया जाता है। इस आयु के बच्चों में अपने निर्णय अपने आप लेने की क्षमता उत्पन्न होने लगती है। ये अपने जीवन का उद्देश्य निर्धारित करने लगते हैं। इनकी अपनी विचारधारा इनके लिए सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण बन जाती है।

2. किशोर मनोविज्ञान पर आधारित उपरोक्त तथ्यों को ध्यान में रख कर कविता का सृजन करना सरल कार्य नहीं है। 'सूरज पाना है' यह किशोर कविता लिखने का प्रयास परशुराम शुक्ल जी ने किया है इस कविता में एक ओर किशोरों के उद्देश्य की ओर संकेत किया गया है, तो दूसरी ओर एक नये प्रयास की सफलता की दृढ़ इच्छा शक्ति को अभिव्यक्ति दी गयी है। इस शीर्षक में और भी बहुत कुछ है।

3. बच्चे किशोर होते-होते अपने सुनहरे भविष्य के सपने देखने लगते हैं। ये बहुत कुछ कर डालना चाहते हैं प्रगति की बुलन्दी पर पहुँच जाना चाहते हैं। इनमें असम्भव को भी सम्भव करने की दृढ़ इच्छा शक्ति होती है। इनकी क्षमताएँ अनन्त होती हैं। कभी-कभी इनके माता-पिता अथवा अभिभावक इनकी इच्छा शक्ति और क्षमताओं का उपहास उड़ाते हैं, अतः ये अपने मन की बातें मन में ही रखते हैं अथवा अपने अन्तरंग मित्रों को थोड़ा-बहुत बता देते हैं।

1.8 स्वाध्याय

अ) संदर्भ के प्रश्न

1) मैं नन्हा सा अंकुर मुझको, सूरज पाना है।
आँधी पानी तेज हवाएँ, शीत लहर तूफानी।
जाना मुझको दूर बहुत है, राह बड़ी अनजानी।
चारों तरफ बवंडर फिर भी, जड़ें जमाना है।। सूरज.....

2) फूल हमेशा कभी खिले बस, एक बार खिलता है।
यह जीवन ऐसा जीवन जो, एक बार मिलता है।
इस छोटे से जीवन में कुछ, कर दिखलाना है।। सूरज.....

3) मेरे जैसे और बहुत से, अंकुर जग में होंगे।
अंधकार से घबराये वे, सहमे सहमे होंगे।
इनके भीतर कुछ करने की, अलख जगाना है।। सूरज.....

4) धरती हरी भरी होगी जब, अंकुर महकेंगे।
इनके मन में रहने वाले, पक्षी चहकेंगे।
मैंने ठान लिया है सारा, जग महकाना है।। सूरज.....
मैं नन्हा सा अंकुर मुझको, सूरज पाना है।।

आ) दीर्घोत्तरी प्रश्न

1) 'सूरज पाना है' इस कविता का केंद्रीय भाव स्पष्ट कीजिए

2) 'सूरज पाना है' इस कविता की मूल संवेदना का विवेचन कीजिए

1.9 क्षेत्रीय कार्य

'सूरज पाना है' इस कविता संग्रह की अन्य कविताओं को पढ़िए

1.10 अतिरिक्त अध्ययन

मराठी के प्रसिध्द बाल साहित्यकार वि.दा.करंदीकर जी के बाल काव्य का अध्ययन कीजिए

12. 'उतनी दूर मत ब्याहना बाबा' – निर्मला पुतुल

1.1 उद्देश्य

1.2 प्रस्तावना

1.3 विषय विवेचन

1.3.1 निर्मला पुतुल का परिचय

1.3.2 'उतनी दूर मत ब्याहना बाबा' कविता का परिचय

1.3.3 'उतनी दूर मत ब्याहना बाबा' कविता की समीक्षा

1.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

1.5 पारिभाषिक शब्द-शब्दार्थ

1.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

1.7 सारांश

1.8 स्वाध्याय

1.9 क्षेत्रीय कार्य

1.10 अतिरिक्त अध्ययन के लिए

1.1 उद्देश्य

इस इकाई को पढने के बाद आप

- निर्मला पुतुल के काव्य साहित्य से परिचित होंगे।
- 'उतनी दूर मत ब्याहना बाबा' कविता के भावार्थ से परिचित होंगे।
- प्रस्तुत कविता में निर्मला पुतुल ने एक युवती की भावनाओं का सुंदर चित्रण किया है वह युवती अपने बाबा के सामने अपनी पसंद ना पसंद व्यक्त करती है जिसमें उसकी सोच-विचार, समझदारी, वैचारिक परिपक्वता का भाव समझ सकेंगे।
- आदिवासी समाज किस तरह जल, जंगल, जमीन के लिए अपना जीवन समर्पित कर देता है, इस कविता से जान सकते हैं आदिवासी ही नहीं बल्कि समूचे नारी जगत् की वेदना को यह कविता कहती नजर आती है एक लड़की का अपने पिता से लगाव, शादी के बाद घर से दूर होने की पीड़ा, दहेज जैसी कुप्रथा, पति का शराबी होना आदि तमाम बातों से गुजरते हुए निर्मला पुतुल जो संदेश देती हैं, उससे परिचित होंगें।

1.2 प्रस्तावना

आदिवासी महिला लेखन का इतिहास बहुत पुराना है। कई पीढ़ियों से आदिवासी लेखिकाएं देश के विभिन्न भागों से अलग-अलग भाषाओं में लेखन कर रही हैं। आदिवासी लेखिकाओं का स्वर आदिवासी पहचान, प्रकृति के प्रति अपनी आस्था व सहअस्तित्त्व को ज़ाहिर करता है।

शांत और एकांत प्रिय रहने वाले आदिवासियों के जीवन में औद्योगीकरण के बढ़ते प्रभाव ने उथल-पुथल मचा दी। कल तक जो इस जल, जंगल और जमीन का मालिक था, आज वह उसी से वंचित है। विकास के नाम पर आदिवासियों के साथ छल किया गया, उन्हें अपनी जमीनों से बेदखल कर पलायन को मजबूर कर दिया गया। आज आदिवासियों में विस्थापन की मुख्य समस्या हैं, वे रोजगार की तलाश में दर-दर की ठोकरे खा रहा हैं। तथाकथित सभ्य समाज आदिवासी समाज को अपनी बराबरी का दर्जा नहीं देना चाहता है। वैश्वीकरण के कारण आदिवासी संस्कृति दूषित हो रही है। वैश्वीकरण के इस दौर में आदिवासी समाज की अस्मिता व अस्तित्त्व संकट में है। आदिवासी समाज में विस्थापन, पलायन, रोजगार भूखमरी, अशिक्षा और स्त्री अस्मिता मुख्य समस्याएँ है।

आदिवासी साहित्य में लेखन करनेवाले रचनाकारों में निर्मला पुतुल, ग्रेस कुजुर, वंदना टेटे, महादेव रोप्पो, अनुजु लुगुन, जंसिता केर केट्टा, वाहरू सोनवणे, हरिराम मीणा प्रमुख नाम है। आदिवासी साहित्यकार अपनी लेखनी के द्वारा आदिवासी संस्कृति, उनके जीवन-दर्शन, परम्पराएँ, तथा उनकी अस्मिता व अस्तित्त्व के ऊपर आये संकट से दुनिया को अवगत करा रहे हैं।

1.3 विषय विवेचन:

1.3.1 निर्मला पुतुल का परिचय:

निर्मला पुतुल समकालीन हिन्दी कविता की सशक्त हस्ताक्षर है इनका का जन्म 6 मार्च 1972 को झारखंड के दुमका ज़िले के दुधनी कुरुवा ग्राम में एक ग़रीब आदिवासी परिवार में हुआ। पिता का नाम सिरील मुरमू है, तथा मां का नाम कांदिनी हांसदा है। इनकी शिक्षा-दीक्षा सामान्य रही। आसानी से आजीविका पा सकने के लिए नर्सिंग का कोर्स किया। बाद में इग्नू से राजनीतिशास्त्र में स्नातक की डिग्री प्राप्त की। दो दशकों से अधिक समय से आदिवासी महिलाओं के विस्थापन, पलायन, उत्पीड़न, लैंगिक भेदभाव, मानवाधिकार, संपत्ति का अधिकार जैसे विषयों पर व्यक्तिगत, सामूहिक और संस्थागत स्तर पर सक्रिय रही हैं। इसके साथ ही ग्रामीण, पिछड़ी, दलित, आदिवासी और आदिम जनजाति की महिलाओं के बीच शिक्षा एवं जागरूकता के प्रसार के लिए विशेष प्रयासरत रही हैं। इस उद्देश्यों की पूर्ति के लिए प्रत्यक्ष राजनीति में उतर आने से भी परहेज़ नहीं किया और अपने गृह पंचायत से मुखिया पद के लिए चुनी गईं।

कविता-लेखन की शुरुआत मातृभाषा संताली में की थी। फिर हिंदी में भी लिखने लगी। अपनी कविताओं के विद्रोही स्वर और अपने समाज की यथार्थपरक अभिव्यक्ति के लिए कवयित्री प्रशंसित हुईं है। उनका पहला कविता संग्रह 'अपने घर की तलाश में' संताली-हिंदी द्विभाषिक संग्रह के रूप में 2004 में

प्रकाशित हुआ। हिंदी में उनका प्रवेश 'नगाड़े की तरह बजते शब्द' (2005) कविता-संग्रह के साथ हुआ। इसे पहली बार जंगल के बाहर शहर में किसी आदिवासी स्त्री द्वारा कविता के स्वर में अपने अस्तित्त्व का नगाड़ा बजाने की घटना की तरह देखा गया। एक आदिवासी स्त्री द्वारा उसके 'स्व' की तलाश, पुरुष व्यवस्था और पितृसत्तात्मकता के प्रति विद्रोह, आदिवासी समाज और आदिवासी स्त्री की वेदना, आदिवासी समाज व्यवस्था के गुण-दोष, तथाकथित सभ्य शहरी समाज पर व्यंग्य, मुक्ति की कामना जैसे वृहत विमर्श बिंदुओं में उनकी कविताओं का पाठ हुआ। उनका तीसरा कविता-संग्रह 'बेघर सपने' 2014 में प्रकाशित हुआ।

इनकी कविताओं का अनुवाद अंग्रेजी, मराठी, उर्दू, उड़िया, कन्नड़, नागपुरी, पंजाबी, नेपाली में हो चुका है। उनकी कविताएँ पाठ्य-पुस्तकों में भी शामिल की गई हैं। विभिन्न विश्वविद्यालयों में उनकी कविताओं पर शोध-प्रबंध लिखे गए हैं। उनके जीवन पर आधारित फ़िल्म 'बुरू-गारा' को वर्ष 2010 में राष्ट्रीय फ़िल्म पुरस्कार प्राप्त हुआ।

वह साहित्य अकादेमी के 'साहित्य सम्मान' भारतीय भाषा परिषद के राष्ट्रीय युवा सम्मान, बनारसी प्रसाद भोजपुरी सम्मान सहित दर्जनाधिक पुरस्कारों और सम्मानों से नवाज़ी गई हैं। इसके अतिरिक्त, उन्हें विभिन्न संस्थानों से फ़ेलोशिप प्राप्त हुए हैं।

1.3.2 'उतनी दूर मत ब्याहना बाबा' कविता का परिचय :-

'उतनी दूर मत ब्याहना बाबा' निर्मला पुतुल की एक महत्त्वपूर्ण कविता है। इस कविता में आदिवासी लड़कियों की जिंदगी का चित्रण हुआ है। उनका लेखन अनुभव की सच्चाई है। वे झारखण्ड की वास्तविक सच्चाई हमारे सामने प्रस्तुत करती हैं। निर्मला जी की कविताओं में आदिवासी नारी जीवन संघर्ष की अनेक छवियों का वर्णन हुआ है।

'उतनी दूर मत ब्याहना बाबा' निर्मला पुतुल जी के 'नगाड़े की तरह बजते शब्द' काव्य- संकलन की एक श्रेष्ठ कविता है। इस कविता में एक पहाड़ी लड़की द्वारा पिताजी से अपनी शादी की बातचीत को प्रस्तुत किया गया है।

मनुष्य के जीवन में शादी एक बहुत बड़ी घटना होती है; शादी के बारे में हर व्यक्ति के कुछ ना कुछ सपने होते हैं; नया गांव, नया घर, ससुराल, वहां के नए लोग, उनके स्वभाव, अपनापन, सोच-विचार, परस्पर स्नेह-भाव आदि बातों को लेकर मन में हमेशा हलचल सी मची रहती है यह बातें जितनी भी व्यक्तिगत क्यों ना हो किसी न किसी के सामने प्रकट करनी पड़ती है प्रस्तुत कविता 'उतनी दूर मत बहाना बाबा' में निर्मला पुतुल ने एक युवती की भावनाओं का सुंदर चित्रण किया है वह युवती अपने बाबा के सामने अपनी पसंद ना पसंद व्यक्त करती है जिसमें उसकी सोच-विचार, समझदारी, वैचारिक परिपक्वता का भाव कविता में प्रकट हुआ है।

1.3.3 'उतनी दूर मत ब्याहना बाबा' कविता की समीक्षा :–

कविता का प्रारंभ एक पहाडी लडकी खुद की शादी के संबंध में अपने पिता से कुछ बातें साझा कर रही है युवती की भावनाओं को अभिव्यक्त करने के लिए कवयित्री ने कविता को दो भागों में विभाजित किया है कविता के पूर्वाध में नया गांव, नया घर, नया वातावरण, भावी पति आदि के बारे में युवती की नापसंद प्रकट हुई है यहां युवती की सोच- समझदारी देखने को मिलती है अपने पिताजी की आर्थिक स्थिति को देखकर वह अपने बाबा के सामने इच्छा प्रकट करती है कि, उसकी शादी इतनी दूर नहीं करनी चाहिए कि उसे मिलने के लिए बाबा को अपनी बकरियों को बेचना पड़े वह कहती है–

''बाबा!
मुझे उतनी दूर मत ब्याहना
जहाँ मुझसे मिलने जाने ख़ातिर
घर की बकरियाँ बेचनी पड़े तुम्हें
मत ब्याहना उस देश में
जहाँ आदमी से ज़्यादा
ईश्वर बसते हों
जंगल नदी पहाड़ नहीं हों जहाँ
वहाँ मत कर आना मेरा लगन''

प्रस्तुत कविता में एक पहाड़ी लड़की, पिताजी से अपनी शादी के बारे में कहती है कि, उसकी शादी उतनी दूर मत करना जहाँ उससे मिलने जाने के लिए घर की बकरियों को बेचना पड़े। उसकी शादी दूर करने पर घरवालों को उससे मिलने के लिए व्यर्थ का खर्च करना पड़ेगा। आगे वह कहती है कि उसकी शादी उस देश में मत करना जहाँ आदमी से ज्यादा ईश्वर बसते हों। वह अपनी ज़िंदगी सामान्य लोगों के साथ बिताना चाहती है। फिर वह कहती है कि उसकी शादी वहाँ बिलकुल न करना जहाँ जंगल, नदी और पहाड़ नहीं हों। क्योंकि वह प्रकृति के साथ घुल-मिलकर रहना चाहती है।

युवती पिता से शादी के बारे में और भी राय प्रकट करते हुए कहती है–

'वहाँ तो क़तई नहीं
जहाँ की सड़कों पर
मन से भी ज़्यादा तेज़ दौड़ती हों मोटरगाड़ियाँ
ऊँचे-ऊँचे मकान और
बड़ी-बड़ी दुकानें
उस घर से मत जोड़ना मेरा रिश्ता

जिस में बड़ा-सा खुला आँगन न हो
मुर्ग़े की बाँग पर होती नहीं हो जहाँ सुबह
और शाम पिछवाड़े से जहाँ
पहाड़ी पर डूबता सूरज न दिखे
मत चुनना ऐसा वर
जो पोचई और हड़िया में डूबा रहता हो अक्सर
काहिल-निकम्मा हो
माहिर हो मेले से लड़कियाँ उड़ा ले जाने में
ऐसा वर मत चुनना मेरी ख़ातिर'

लडकी चाहती है कि, उसकी शादी ऐसी जगह पर न हो जहाँ की सड़कों पर तेज़ दौड़ती मोटर गाडियाँ हों और जहाँ ऊँचे-ऊँचे मकान हों। जिस घर में बड़ा-सा खुला आँगन न हो वहाँ शादी करना वह नहीं चाहती। जहाँ मुर्गे की बाँग से न होती सुबह और शाम को पहाड़ी पर डूबता सूरज न दिखता हो, वहाँ ब्याहकर जाना वह पसंद नहीं करती।

आगे वह पिताजी से कहती है कि हमेशा नशे में डूबे रहनेवाले के साथ उसकी शादी मत करा देना फिर वह कहती है कि आलसी, निकम्मा और मेले से लड़कियों को उड़ा ले जानेवाले के साथ उसकी शादी मत कराना। जो आदमी बात-बात पर झगड़ा कर कहीं चला जाता हो, ऐसा वर उसे नहीं चाहिए जिसके हाथों ने कभी कोई पेड़ नहीं लगाया हो, फसलें नहीं उगाई हो और किसी की सहायता नहीं की हो, उसके साथ उसे शादी नहीं करना है। जो आदमी अनपढ़ है और किसी की सहायता नहीं की हो, उसके साथ उसे शादी नहीं करना है। जो आदमी अनपढ़ हो, उसके साथ ब्याहने से वह इन्कार करती है।

युवती आगे अपनी पसंद के बारे में कहती है- मेरी शादी वहां कर देना जहां आप सुबह जाकर शाम को पैदल लौट सकें कभी मैं दुखी होकर रोने लगे नदी के इस घाट पर तो उस घाट पर स्नान करते तुम मेरा विलाप सुनकर मुझे मिलने के लिए आ सको-

'ब्याहना हो तो वहाँ ब्याहना
जहाँ सुबह जाकर
शाम तक लौट सको पैदल
मैं जो कभी दुख में रोऊँ इस घाट
तो उस घाट नदी में स्नान करते तुम
सुनकर आ सको मेरा करुण विलाप
महुआ की लट और
खजूर का गुड़ बनाकर भेज सकूँ संदेश तुम्हारी ख़ातिर

उधर से आते-जाते किसी के हाथ
भेज सकूँ कद्दू-कोहड़ा, खेखसा, बरबट्टी
समय-समय पर गोगो के लिए भी
मेला-हाट-बाज़ार आते-जाते
मिल सके कोई अपना जो
बता सके घर-गाँव का हाल-चाल
चितकबरी गैया के बियाने की ख़बर
दे सके जो कोई उधर से गुज़रते
ऐसी जगह मुझे ब्याहना!'

जहाँ सुबह जाकर शाम को लौट सके पैदल, वहाँ उसका ब्याह करना चाहती है। वह दुख से रोती तो नदी के उस पार उसके पिता उसका विलाप सुन सकें, उतनी दूरी पर ही वह शादी करना चाहती है। वह चाहती है कि उसकी शादी इतनी पास हो, कि वह जब चाहे अपने घरवालों को कुछ भी बनाकर भेज सके। मेला जाते वक्त अपने गाँव के लोगों से मिल सके और गाँव का हाल-चाल पूछ सके, उतनी दूर पर ही वह ब्याहकर जाना चाहती है। वह पिताजी से कहती है कि जहाँ ईश्वर से ज्यादा आदमी बसते हों, जहाँ बकरी और शेर एक ही घाट से पानी पीते हों, वहीं उसका ब्याह कराना। किसी तरह के भेद-भाव के बिना जहाँ लोग रहते हैं वही जगह उसे पसंद है।

लड़की आगे कहती है कि-
'उसी के संग ब्याहना जो
कबूतर के जोड़े और पंडुक पक्षी की तरह
रहे हरदम हाथ
घर-बाहर खेतों में काम करने से लेकर
रात सुख-दुख बाँटने तक
चुनना वर ऐसा
जो बजाता हो बाँसुरी सुरीली
और ढोल-माँदल बजाने में हो पारंगत
वसंत के दिनों में ला सके जो रोज़
मेरे जूड़े के ख़ातिर पलाश के फूल
जिससे खाया नहीं जाए
मेरे भूखे रहने पर
उसी से ब्याहना मुझे!

जो आदमी हमेशा साथ रहता हो, सुख-दुख बांटता हो, उसी के साथ उसकी शादी कराना। उसे ऐसा वर चाहिए जो, उसके लिए सुरीली बांसुरी बजाता हो और ढोल-मांदल बजाने में समर्थ हो। वसन्त के दिनों में जो उसके जूड़े की ख़ातिर पलाश का फूल लाता हो, वही उसके लायक वर है। अंत में लड़की पिताजी से कहती है कि, उसके भूखे रहने पर जिससे कुछ खाया नहीं जाता, उसी के साथ वह शादी करना चाहती है।

कवयित्री इस कविता के जरिये यह सूचित करती है कि पुराने ज़माने में बेटियों का विवाह किसी भी वर के साथ कर दिया जाता था। वर्तमान काल में इस स्थिति में बदलाव आया है। अब लड़कियों का पसंद महत्त्वपूर्ण बन गया है। लेकिन कहीं-न-कहीं आज भी पुरानी स्थिति का प्रचार है। निर्मला पुतुल जी समय और परिवेश के बदलने के साथ समाज में आनेवाले बदलावों पर दृष्टि डालती हैं। खुद की शादी के संबंध में एक लड़की के सपनों का वर्णन कर कवयित्री समाज को प्रेरणा देने की कोशिश करती हैं।

निष्कर्ष रूप में कहा जा सकता है कि प्रस्तुत कविता के माध्यम से कवयित्री ने शादी के बारे में अपने विचार प्रस्तुत किए हैं शहरी आकर्षण के कारण गांव की लड़कियां भी आजकल गांव के लड़कों के साथ शादी नहीं करना चाहती फिर वह कितना भी संपन्न क्यों ना हो, वह कितना भी कमाता हो, लेकिन आज की लड़कियां गांव के साथ नाता नहीं जोड़ना चाहती; इसलिए कविता में युवती ने गांव की संस्कृति गांव का वातावरण और गांव की लड़की के साथ शादी करने की इच्छा प्रकट कर समाज की समस्त लड़कियों को ही विचार करने के लिये बाध्य किया है।

1.4 स्वयं अध्ययन के लिए प्रश्न

1. निर्मला पुतुल का जन्म कब हुआ?

   अ) सन् 1972 ब) सन् 1871 क) सन् 1960 ड) सन् 1961

2. निर्मला पुतुल का जन्म कहां हुआ?

   अ) उज्जैन ब) काशी क) झारखंड ड) दिल्ली

3. आसानी से आजीविका पा सकने के लिए निर्मला पुतुल ने कौनसा कोर्स किया?

   अ) वकील ब) शिक्षक क) समाचार लेखन ड) नर्सिंग

4. निर्मला पुतुल ने इग्नू से कौनसी स्नातक की डिग्री प्राप्त की?

   अ) मराठी ब) संताली क) राजनीतिशास्त्र ड) हिंदी

5. निर्मला पुतुल का पहला कविता संग्रह कौनसा है?

   अ) बंद कमरा ब) बंद घर

   क) नगाड़े की तरह बजते शब्द ड) अपने घर की तलाश में

6. 'उतनी दूर मत ब्याहना बाबा' निर्मला पुतुल जी के कौनसे काव्य- संकलन की एक श्रेष्ठ कविता है।

   अ) बंद कमरा ब) बंद घर

क) नगाड़े की तरह बजते शब्द ड) अपने घर की तलाश में

7. निर्मला पुतुल के जीवन पर आधारित फ़िल्म का नाम क्या है?

अ) गाना ब) बुरू-गारा क) सोना ड) रोना

8. निर्मला पुतुल के तिसरे कविता संग्रह का नाम क्या है?

अ) बेघर सपने ब) कमरा क) बेघर ड) सपने

1.5 पारिभाषिक शब्द- शब्दार्थ

ब्याह- शादी, विवाह, लगन- शादी, विवाह, कतई- बिलकुल, रिश्ता- संबंध, पोचई- आदिवासी शराब, काहिल- आलसी, माहिर- निपुण, थारी- थाली, महुआ- पेड का नाम

1.6 स्वयं अध्ययन प्रश्नों के उत्तर

1- अ, 2- क, 3- ड, 4- क,

5- ड 6- क, 7- ब, 8- अ

1.7 सारांश :

1. निर्मला पुतुल आदिवासी महिलाओं उत्थान के लिए नियमित संघर्ष कर रही हैं निर्मला पुतुल की कविताओं में आदिवासी महिलाओं का संघर्ष देखा जा सकता हैं। उजड़ते जंगल की चीख सुनी जा सकती है और विकास का दंश झेल रहे पहाड़ों का दर्द महसूस किया जा सकता है।

2. 'उतनी दूर मत ब्याहना' इस एक कविता के माध्यम से एक आदिवासी लड़की के पूरे जीवन का दर्द समझा जा सकता है आदिवासी समाज किस तरह जल, जंगल, जमीन के लिए अपना जीवन समर्पित कर देता है, इस कविता से जान सकते हैं आदिवासी ही नहीं बल्कि समूचे नारी जगत की वेदना को एक कविता कहती नजर आती है एक लड़की का अपने पिता से लगाव, शादी के बाद घर से दूर होने की पीड़ा, दहेज जैसी कुप्रथा, पति का शराबी होना आदि तमाम बातों से गुजरते हुए निर्मला पुतुल जो संदेश देती हैं, वह इस पूरी कविता का मर्म है- 'उसके हाथ में मत देना मेरा हाथ, जिसके हाथों ने कभी कोई पेड़ नहीं लगाया।'

3. एक लड़की प्रकृति के कितना नजदीक होती है, यहां महसूस किया जा सकता है वह अपने पिता से कहती है कि मुझे ऊंचे मकान, दौड़ती मोटरगाड़ियों वाले शहर में मेरा रिश्ता न जोड़ना, बल्कि ऐसी जगह मेरा ब्याह करना जहां बड़ा सा आंगन हो इस कविता को पढ़ें और महसूस करें एक लड़की की इच्छाएं और उसकी पीड़ा- 'बाबा! मुझे उतनी दूर मत ब्याहना' बेटी का पिता के साथ बड़ा मार्मिक संवाद है।

1.8 स्वाध्याय

अ) संदर्भ के प्रश्न

1) बाबा!
मुझे उतनी दूर मत ब्याहना
जहाँ मुझसे मिलने जाने ख़ातिर
घर की बकरियाँ बेचनी पड़े तुम्हें
मत ब्याहना उस देश में
जहाँ आदमी से ज़्यादा
ईश्वर बसते हों
जंगल नदी पहाड़ नहीं हों जहाँ
वहाँ मत कर आना मेरा लगन
वहाँ तो क़तई नहीं
जहाँ की सड़कों पर
मन से भी ज़्यादा तेज़ दौड़ती हों मोटरगाड़ियाँ
ऊँचे-ऊँचे मकान और
बड़ी-बड़ी दुकानें

2. उस घर से मत जोड़ना मेरा रिश्ता
जिस में बड़ा-सा खुला आँगन न हो
मुर्ग़े की बाँग पर होती नहीं हो जहाँ सुबह
और शाम पिछवाड़े से जहाँ
पहाड़ी पर डूबता सूरज न दिखे
मत चुनना ऐसा वर
जो पोचई और हड़िया में डूबा रहता हो अक्सर
काहिल-निकम्मा हो
माहिर हो मेले से लड़कियाँ उड़ा ले जाने में
ऐसा वर मत चुनना मेरी ख़ातिर

3. कोई थारी-लोटा तो नहीं
कि बाद में जब चाहूँगी बदल लूँगी

अच्छा-ख़राब होने पर
जो बात-बात में
बात करे लाठी-डंडा की
निकाले तीर-धनुष, कुल्हाड़ी
जब चाहे चला जाए बंगाल, असम या कश्मीर
ऐसा वर नहीं चाहिए हमें
और उसके हाथ में मत देना मेरा हाथ
जिसके हाथों ने कभी कोई पेड़ नहीं लगाए
फसलें नहीं उगाईं जिन हाथों ने
जिन हाथों ने दिया नहीं कभी किसी का साथ
किसी का बोझ नहीं उठाया
और तो और!
जो हाथ लिखना नहीं जानता हो महफ से हाथ
उसके हाथ मत देना कभी मेरा हाथ!

4. ब्याहना हो तो वहाँ ब्याहना
जहाँ सुबह जाकर
शाम तक लौट सको पैदल
मैं जो कभी दुख में रोऊँ इस घाट
तो उस घाट नदी में स्नान करते तुम
सुनकर आ सको मेरा करुण विलाप

5. महुआ की लट और
खजूर का गुड़ बनाकर भेज सकूँ संदेश तुम्हारी ख़ातिर
उधर से आते-जाते किसी के हाथ
भेज सकूँ कद्दू-कोहड़ा, खेखसा, बरबट्टी
समय-समय पर गोगो के लिए भी
मेला-हाट-बाज़ार आते-जाते
मिल सके कोई अपना जो
बता सके घर-गाँव का हाल-चाल
चितकबरी गैया के बियाने की ख़बर

दे सके जो कोई उधर से गुज़रते
ऐसी जगह मुझे ब्याहना!

6. उस देश में ब्याहना
जहाँ ईश्वर कम आदमी ज़्यादा रहते हों
बकरी और शेर
एक घाट पानी पीते हों जहाँ
वहीं ब्याहना मुझे!
उसी के संग ब्याहना जो
कबूतर के जोड़े और पंडुक पक्षी की तरह
रहे हरदम हाथ
घर-बाहर खेतों में काम करने से लेकर
रात सुख-दुख बाँटने तक
चुनना वर ऐसा
जो बजाता हो बाँसुरी सुरीली
और ढोल-माँदल बजाने में हो पारंगत
वसंत के दिनों में ला सके जो रोज़
मेरे जूड़े के ख़ातिर पलाश के फूल
जिससे खाया नहीं जाए
मेरे भूखे रहने पर
उसी से ब्याहना मुझे!

आ) दीर्घोत्तरी प्रश्न

1. 'उतनी दूर मत ब्याहना' इस एक कविता के माध्यम से एक आदिवासी लड़की के दर्द को कैसे समझा जा सकता है? स्पष्ट कीजिए।
2. 'उतनी दूर मत ब्याहना' कविता की मूल संवेदना समझाइए।

1.9 क्षेत्रीय कार्य

ममता कालिया की 'खांटी घरेलु औरत' कविता को पढ़िए।

1.10 अतिरिक्त अध्ययन

आदिवासी कवयित्री वंदना टेटे की कविताओं का अध्ययन कीजिए।

❑❑❑